अंतिम उपन्यास

मन्टो

Manto

***

परामाउन्ट पब्लिशिंग कोआपरेटिव सोसाइटी लि०
५ यु. वी. बंगलो रोड दिल्ली-७.
मुद्रक : श्री कम्पोजिंग केन्द्र द्वारा, सम्राट् प्रेस
मूल्य तीन रूपये
३-००

अन्तिम उपन्यास

मन्टो का प्रसिद्ध उपन्यास

९

१

वैसे तो सैय्यद पर जुकाम का हमला होता ही रहता था। कई बार मोहम्मद गौरी की तरह दुम दबाकर भागने पर भी एक दिन अनोखे ढंग से हमला किया, तो उसने सोचा—मुझे प्यार क्यों नहीं होता? सैय्यद के जितने भी मित्र थे, सब के सब प्यार कर चुके थे। इनमें से कुछ तो अभी तक फँसे हुए थे; परन्तु जिस ढंग से वह प्यार को अपने पास देखना चाहता था, ठीक उसके विपरीत, उसको दूर, बहुत दूर पाता; किन्तु उसको अभी तक किसी से प्यार नहीं हुआ था।

जब भी सूनेपन में बैठकर सोचता कि वास्तव में उसका हृदय प्यार से से खाली है, तो उसे लज्जा का अनुभव होता और हृदय विदीर्ण हो उठता ।

जीवन के बीस वर्ष, जिनमें अधिकतर बचपन की धूंधली रेखाएँ छिपी हुई थीं, कभी-कभी उसके सामने मृतक शरीर के समान ऐंठ जातीं। वह सोचता—मेरा जीवन ही निष्प्राण है । प्यार के बिना मनुष्य का जीवन कैसे सफल हो सकता है ?

सैय्यद को विश्वास था कि उसका हृदय सरस और इस योग्य है, कि प्यार उसमें निवास करे; परन्तु वह सुन्दर यौवन किस काम का, जिसमें रहने वाला कोई भी न हो; किन्तु उसका हृदय प्यार करने के योग्य है । इसी कारण उसको बहुत दुःख होता कि उसकी धड़कने व्यर्थ में क्षीण होती जा रही हैं ।

उसने लोगों से सुना था कि जीवन में प्यार का अवसर एक बार अवश्य आता है । उसे भी इस बात का कुछ-कुछ ज्ञान था कि मौत की तरह प्यार एक बार अवश्य आयेगा; परन्तु कब···?

काश ! उसकी जीवन-पत्री अपनी ही जेब में होती और झट से वही उत्तर देख लेता; किन्तु उस पुस्तक में तो बीती हुई घटनाओं का ही वर्णन दिया जाता है । जब प्यार आएगा, तो स्वयं ही नये पन्ने जुड़ जायेंगे । वह नये पन्नों के लिए कितना बेचैन था ।

संसार की प्रत्येक वस्तु को प्राप्त करना उसके लिए कोई कठिन कार्य नहीं था । जहाँ भी घूमना चाहे, वह घूम सकता, जब चाहे खा सकता, जब चाहे रेडियो पर गाने सुन सकता और शराब भी पी सकता था, जिसके पीने से उसके माथे पर कलंक लग सकता था । जब चाहे उस्तरे से गाल भी जख्मी कर सकता था; परन्तु फिर भी असफल रहा

था, प्यार में।

एक बार उसने बाजार में एक युवती को देखा। उसकी छातियाँ देखकर उसे ऐसा अनुभव हुआ कि दो बड़े-बड़े सलजम उसके जम्फर में छुपे हुए हैं। सलजम उसे बहुत अच्छे लगते थे। शीतकाल में मकान की छत पर जब उसकी माँ लाल-लाल शलजम काटकर सुखाने के लिए हार पिरोया करती, तो वह कितने ही कच्चे सलजम खा जाया करता था। उस युवती को देखकर उसकी जिह्वा पर वैसा ही अनुभव हुआ, जैसा आनन्द शलजम का गुद्दा चबाते समय होता है; परन्तु उसके हृदय में उससे प्रेम करने का विचार उत्पन्न न हो सका। वह उसकी गति को ध्यान पूर्वक देखता रहा, जिन में टेढ़ा-पन था। वैसा ही टेढ़ा-पन जैसा बरसात में खटिया के चारों पायों में कान पड़ जाने के कारण हो जाता हैं। वह उसके प्यार में स्वयं को न बाँध सका।

बार-बार निराश होने पर भी उसे आशा थी और वह इसी कारण अपनी गली के नुक्कड़ वाली दरियों की दुकान पर जा बैठता था। यह दुकान सैय्यद के दोस्त की थी। जो हाई-स्कूल में पढ़ने वाली एक लड़की से आँखें लड़ा रहा था। उस लड़की से उसका प्यार लुधियाने की एक दरी के कारण हुआ था। दरी का मूल्य जो पाँच रुपए था, उस लड़की के कथनानुसार उसकी सलवार के नेफे में से खुलकर गिर पड़ा था। लतीफ उसके घर के पास ही रहता था। इस लिये उस लड़की ने चाचा की गालियों से छुटकारा पाने के लिए, उससे दरी उधार माँगी और···बस इन दोनों का प्यार हो गया।

शाम के समय बाजार में आने-जाने वालों की भीड़ अधिक होती थी, क्योंकि दरबार-साहब जाने के लिये अकेला वही रास्ता था। इस लिये स्त्रियाँ भी अधिक संख्या में उसकी नजरों के सामने से चलचित्र

की भाँति निकल जाती। लेकिन जाने क्यों, उसे ऐसा अनुभव होता कि जितने लोग बाजार में चलते-फिरते हैं, सब के सब खाली हैं? उसकी आँखें किसी पुरुष या स्त्री पर नहीं ठहरतीं थीं। लोगों की भीड़-भाड़ को देखकर वह अनुभव करता था कि यह यन्त्र हैं, केवल देख सकते हैं, कुछ कर नहीं सकते।

उसकी आँखें किस ओर थीं? यह न आँखों को याद है, न सैय्यद को। उसकी आँखें दूर, बहुत दूर सामने चूने और मिट्टी के बने हुये मकानों को छेदते हुए निकल जातीं, न जाने कहाँ और स्वयं ही कहीं घूम-घाम कर उसके हृदय में समा जातीं। बिल्कुल उन बच्चों की तरह जो अपनी माँ की छाती पर औंधे मुँह लेटे नाक, कान और बालों से खेल-खालकर अपने ही मुलायम हाथों को आश्चर्य-जनक दृष्टि से देखते-देखते नींद के कोमल कपोलों में धँस जाते हैं।

लतीफ की दुकान पर ग्राहक बहुत कम आते थे। इसी कारण वह उसकी उपस्थिति से लाभ उठाते हुये उससे कई प्रकार की बातें किया करता था; परन्तु वह सामने लटकी हुई दरी की ओर निहारता रहता, जिसमें रंग-बिरंगे अगिनित धागों के उलझाव ने डिजाइन बना दिया। लतीफ के अधर काँपते रहते और वह सोचता रहता कि उसके दिमाग का नकशा दरी के डिजायन में किस तरह मेल खाता है? कभी-कभी तो वह सोचा करता कि उसके अपने भाव ही बाहर निकल कर इस दरी पर कीड़े के समान रेंग रहे हैं।

इस दरी में और सैय्यद के दिमाग में कोई अन्तर न था और था भी तो केवल इतना ही अन्तर कि रंग-बिरंगे धागों के उलझाव ने, उसके सामने, दरी का रूप धारण कर लिया। किन्तु उसके विचारों की उलझनें ऐसा रूप धारण न कर सकीं, जिसको वह दरी के समान अपने

सामने विछा कर या लटका कर देख सकता।

लतीफ में अशिष्टता कूट-कूट कर भरी थी। किसी से बात-चीत करने की उसे तमीज नहीं थी। किसी वस्तु में उसको सौन्दर्य ढूंढ़ने के लिए कहा जाता, तो वह निकम्मा और असभ्य ही साबित होता था। उसके हृदय में वह बात ही नहीं उत्पन्न हो सकी थी, जो एक कलाकार में होती है। इन सब दुर्गुणों के होते हुए भी एक लड़की उससे प्रेम करती थी, उसको पत्र लिखती थी। जिनको लतीफ़ इस ढंग से पढ़ता था, जैसे किसी तीसरे दर्जे के अखवार में युद्ध के समाचार पढ़ रहा हो। इन पत्रों में वह कंपकपाहट उसे दीख न पड़ती थी, जो प्रत्येक शब्दों में होनी चाहिये। वह शब्दों के मर्म भावों से अनभिज्ञ था। यदि उससे कहा जाता, कि लतीफ़ यह पढ़ो, लिखती है, "मेरी फूफी ने कल मुझ से कहा, क्या हुआ है तेरी भूख को? तूने खाना-पीना क्यों छोड़ दिया है जव मैंने सुना तो पता चला कि सचमुच मैं आज कल वहुत कम खाती हूँ। देखो! मेरे लिये कल शाहबुद्दीन की दुकान से खीर लेते आना...जितनी लाओगे सब की सव चट कर जाऊँगी, अगली पिछली कसर निकाल दूंगी···।" कुछ मालूम हुआ, इन पंक्तियों में क्या है?...तुम शाहबुद्दीन की दुकान से खीर का एक वहुत बड़ा दोना लेकर जाओगे, किन्तु लोगों की निगाहों से बच-बचाकर ड्योढ़ी में जब तुम उसे तोफ़ा दोगे, तो इस विचार से प्रसन्न न होना कि वह सारी खीर खा जायेगी। वह कभी भी नहीं खा सकेगी···पेट भर कर वह कुछ खा ही नहीं सकती। जव दिमाग में विचारों का कांग्रेस का जल्सा हो रहा हो, तो पेट स्वयं ही भर जाता है, लेकिन यह उलझन उसकी ताकत से बाहर थी। वह कैसे समझ सकता। वह तो समझने समझाने से कोसों दूर भागता था। जहाँ तक शाहबुद्दीन की दुकान से चार आने की खीर और एक आने की रवड़ी और खुशबू मोल लेने का प्रश्न था, वहाँ तक

लतीफ़ बिल्कुल ठीक था। खीर के लिये क्यों लिखा? और इसी भूख का प्रश्न किन विचारों के कारण उसकी प्रेमिका के दिमाग में उत्पन्न हुआ। इससे लतीफ़ को कोई सारोकार न था। और सच पूछो तो वह इस योग्य ही नहीं था कि इन बारीकियों की जड़ तक पहुँच सके। वह मोटे दिमाग का मालिक था, जो कि लोहे के जंग लगे हुए गज से दरियाँ अनोखे ढंग से मापता था और शायद इस प्रकार के भौंड़े गज से ही अपने विचारों को मापता होगा।

परन्तु यह सच है कि एक लड़की उससे प्यार करती थी, जो हर चीज़ में उससे बहुत ऊँची दीख पड़ती थी। लतीफ़ और उसमें केवल इतना ही अन्तर था, जितना कि लुधियाने की दरी और काश्मीर के गद्देदार ग़ालीचे में···।

सैय्यद की समझ में न आता था कि प्रेम किस प्रकार होता है अपितु कैसे कहा जाये कि हो सकता है? वह जिस समय भी चाहे, शोक में डूब जाये और जब चाहे स्वयं खुश भी कर सकता था। आह! वह प्यार नहीं कर सकता था, जिसके लिये वह बेचैन था।

उसका एक मित्र, जो बड़ा ही जल्दबाज़ था। वह मूँगफली और चने, केवल उस अवस्था में खा सकता था, यदि उसके छिलके उतरे हुए हों, अपने मुहल्ले की एक हसीन लड़की से आँखें लड़ा रहा था। हर समय उसके हुसन की प्रशंसा अलापने में लीन रहता। यदि उससे पूछा जाता—यह सौन्दर्य तुम्हारी प्रेमिका में कहाँ से शुरू होता है, तो निश्चित ही वह खाली दिमाग हो जाता। हुसन का मतलब वह न समझ सकता था। कालेज में पढ़ने के अलावा भी उसके दिमाग़ की नींव घटिया रखी गई थीं; परन्तु उसके प्यार की कहानी इतनी लम्बी थी कि कालीदास के ग्रन्थ से भी बड़ा ग्रन्थ बन सकता था। आखिर इन लोगों को इन

असभ्यता के प्रेमियों को प्रेम करने का क्या अधिकार है ?···कई बार यह प्रश्न सैय्यद के दिमाग़ में उत्पन्न हुआ और घबराहट बढ़ गई; परन्तु कुछ समय विचारों के समुद्र में डूबकर उससे बाहर निकला और कहने लगा—"प्रेम करने का सबको अधिकार है, चाहे कोई सभ्य हो या असभ्य······।"

किसी अन्य को प्यार करते देख कर, वास्तव में उसका हृदय ज्वाला-मुखी के समान फटने लगता। यह जानते हुए भी कि यह नीचता है; परन्तु वह असमर्थ था, क्योंकि प्यार करने की लालसा उसके दिमाग पर छाई रहती। कभी-कभी तो कई बार वह प्यार करने वालों को गन्दी-गन्दी गालियाँ भी देने लगता और गालियों के पश्चात् स्वयं को भी कोसता कि व्यर्थ में उसने दूसरों को गालियां दीं। यदि संसार के सभी प्राणी एक दूसरे से प्यार करने लग जायें, तो इसमें मेरे बाबा का क्या बिगड़ता है ? मुझे तो केवल अपने काम से काम है। यदि मैं किसी के प्यार में स्वयं को न बाँध सका, तो इसमें किसी का क्या दोष ? किसी हद तक ठीक है कि मैं इस योग्य नहीं हूँ। क्या पता है कि बेवकूफ और बेअक्ल होना ही प्यार करने वाले के लिये जरूरी है। वह स्वयं से ऐसे-ऐसे प्रश्न करता, जैसे वह कहीं 'इन्टरव्यू' पर गया हुआ हो।

एक दिन सोचता-सोचता वह इस निष्कर्श पर पहुँचा कि प्यार एक-दम नहीं होता। वे झूठे हैं, जो कहते हैं प्यार एक-दम हो जाता है। यदि ऐसा होता तो मालूम है कि उसके हृदय में बहुत पहले से किसी के साथ प्यार हो गया होता। बहुत सी लड़कियाँ उसकी निगाहों से अब तक गुजर चुकी थीं। यदि एक-दम प्रेम हो सकता, तो इनमें से किसी एक के साथ प्यार की दुनिया बसा लेता। किसी लड़की को एक या दो बार देख लेने से भी प्यार हो जाया करता है, यह वह न जान

सका ।

कुछ दिन पहले उसके मित्र ने कहा कि कम्पनी-बाग में आज मैंने एक लड़की को देखा और एक ही नजर में जख्मी कर दिया । उसका मन दुःख से चिल्ला उठता और इस प्रकार के शब्द उसको उल्टे दीख पड़ते । एक ही नजर में उसने मुझे जख्मी कर दिया, लाहौल वि-ललाह··· विचारों को किस भद्दे ढंग से व्यक्त किया गया है ।

जब वह इस प्रकार के झूठे और 'थर्ड क्लास' के शब्दों को सुनता, तो उसे ऐसा अनुभव होता कि उसके कानों में कोई पिघला हुआ शीशा डाल रहा हो ।

परन्तु यह उल्टे दिमाग और लँगड़े मजाक के इन्सान उससे अधिक खुश थे । वह व्यक्ति जो प्यार से बिल्कुल अनभिज्ञ थे, उससे बहुत अच्छा आराम और शान्ति का जीवन व्यतीत कर रहे थे ।

प्यार और जिन्दगी एम० असलम की निगाहों से देखने वाले खुश थे । सैय्यद, जो प्यार और जिन्दगी को अपनी खाली आंखों से देखता था, दुःखी था···बहुत दुखी···।

एम० असलम से उसे घृणा थी । इतना गन्दा और छिछोरा प्रेमी, तो उसकी नजरों से कभी न गुजरा था । उसकी कहानियाँ पढ़कर उसका विचार कटरा घनियाँ की खिडकियाँ देखने को दौड़ता, जिनमें रात को लाल रंग से रंगे हुए गाल दीख पड़ते । आश्चर्य है कि प्रायः लड़के और लड़कियों में इन्हीं की कहानियाँ दीख पड़ती हैं ।

जो प्यार एम० असलम की कहानियाँ उत्पन्न करती हैं, किस प्रकार का प्यार होगा ? जब वह कुछ देर विचार करता, तो इस प्यार में उसे एक बहुरूपिया दीख पड़ता जिसने दिखावे के लिये अच्छे-अच्छे वस्त्र रखे हों, एक पर एक···।

एम० असलम के विषय में उसका मन चाहे कुछ भी हो ; परन्तु आधुनिक लड़कियाँ छिप-छिप कर पढ़ती थीं। जब प्रेम की आग बाहर निकलने लगती तो वह उसी आदमी से प्यार करने लग जातीं, जो सब से पहले इनकी निगाहों में आया हो। इसी प्रकार "बहज़ाद" जिसकी कवितायें भारत की जनता और बाई रात को अपने चौबारे पर गाती हैं। आजकल के युवकों और युवतियों में लोकप्रियता, क्यों ? यह उसकी समझ से बाहर था।

बहज़ाद की यह पंक्ति···

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे" जिसे प्रत्येक व्यक्ति गाता दीख पड़ता। उसके अपने घर में उसकी नौकरानी जो गधा-पच्चीसी से भी बीस जूते आगे थी, बर्तन साफ करते समय हमेशा धीमे स्वर में गुनगुनाया करती थी—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

इस कविता की पंक्ति ने उसे दीवाना बना दिया था। जिधर जाओ, उधर से यही सुनाई देता ? "दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे" आखिर यह क्या बला है ? ऊपर कोठे पर चढ़ो, तो काना इस्मायल अपनी एक आँख से कबूतरों को देखकर ऊँचे स्वर से गा रहा है। "दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे," दरियों की दुकान पर बैठो, तो बगल की दुकान में ला० किशोरी मल बजाज अपने मोटे-मोटे चूतड़ों की गद्दियों पर आराम से बैठकर भद्दे ढंग से "तानसेन" की तरह गाना शुरू कर देता—"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे"। दरियों की दुकान से उठो और बैटक में जाकर रेडियो लगाओ तो अख़तरी बाई फैजाबादी गा रही है—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

क्या बेहूदगी है ? वह यही सोचता रहता; परन्तु एक दिन, जब वह खाली दीमाग था और पान बनाने के लिए छालिया काट रहा था तो उसने स्वयं बिना विचार के गाना शुरू कर दिया—

"दीवाना बनाना है तो दीवाना बना दे।"

वह स्वयं ही लज्जित हो उठा और अपने पर उसे बहुत गुस्सा आया; किन्तु एक-दम खिलखिला कर हँसने के बाद उसने जान-बूझ कर ऊँचे स्वर में गाना शुरू कर दिया। "दीवाना बनाना···।" इस प्रकार गाते हुए "बहज़ाद" की सारी कविता उसने एक हँसी के नीचे दबा दी और मन ही मन में खुश हुआ।

कई बार उसके मन में आया कि वह भी एम० असलम की कहानियाँ और बहज़ाद की कविताओं का दीवाना बन जाये और इस प्रकार किसी से प्यार करने में सफलता प्राप्त करे; परन्तु चाहने पर भी वह एम० असलम का उपन्यास पूरा पढ़ न सका और न "बहज़ाद" की कविता में अनोखा-पन देख सका। एक दिन उसने अपने हृदय में प्रण कर लिया, चाहे कुछ भी हो, मैं एम० असलम और बहज़ाद के बिना ही सफलता प्राप्त करूँगा। जो विचार मेरे दिमाग में है, मैं इन सब के साथ किसी एक लड़की से प्यार करूँगा—यही होगा कि असफल रहूँगा; परन्तु इन डुगडुगी बजाने वालों से तो अच्छा है। उस दिन से उसके मन में प्रेम करने का विचार और भी प्रबल हो उठा और उसने प्रति-दिन बिना जलपान किये, रेल के फाठक पर जाना शुरू कर दिया, जहाँ से बहुत-सी लड़कियाँ 'हाई स्कूल' की ओर जाया करती थीं।

फाटक के दोनों ओर लोहे के बहुत बड़े तवे लगाकर लाल रोगन किया गया था। दूर से जब वह इन लाल तवों को एक-दूसरे के पीछे देखता, तो उसे मालूम हो जाता कि 'जनता मेल' आ रही है। जब फाटक के समीप पहुंचता, तो मुसाफिरों से लदी हुई जनता मेल आती और दन-

दनाती हुई स्टेशन की ओर निकल जाती।

फाटक खुलता और वह लड़कियों की प्रतिक्षा में खड़ा हो जाता। पहले दिन इधर से पच्चीस नहीं, छब्बीस लड़कियों को आते देखा। अपने समय पर इधर से लोहे की पटरियों को पार करके कम्पनी-बाग के साथ वाली सड़क पर चली जातीं, जिधर उनका स्कूल होता था। इन छब्बीस लड़कियों को जिनमें केवल दस हिन्दू लड़कियों को देख सका, सोलह मुसलमान लड़कियों का सारा शरीर तो बुर्कों में छिपा रहता था।

दस दिन तक लगातार फाटक पर जाता रहा। दो तीन दिन इन बुर्क़े और बगैर बुर्क़े वाली लड़कियों की ओर देखता रहा। पूरे दसों दिन सवेरे स्वच्छ ठंडी वायु चलती रही, जिसमें कम्पनी-बाग के सभी पुष्पों की गन्ध बसी हुई थी। उसने एकदम अपने आपको लड़कियों की जगह उन वृक्षों को देखते पाया, जिनमें अनगिनत चिड़ियां अपनी-अपनी बोलियां बोल रही थीं। खुमार से भरी हुई प्रातःकाल की चुप्पी कितनी भली लगती है! अन्त में उसे पता चला कि वह एक सप्ताहसे लड़कियों के स्थान पर जनता मेल की मौत जैसी भयानक गाड़ी से दिल-बहलाव करता रहा।

प्यार करने के लिए उसने बहुत प्रयत्न किये, किन्तु असफल रहा। अन्त में उसने विचार किया, क्यों न अपने ही मुहल्ले में प्यार की नींव रखी जाये। एक दिन उसने उन लड़कियों की सूची बनाई, जिनसे प्यार किया जा सकता था। सूची बन गई और केवल नौ लड़कियां ही उसमें आ सकीं।

नं० १ हमीदा, नं० २ सगरा, नं० ३ नगमा, नं० ४ पुष्पा, नं० ५ कमलेश, नं० ६ राजकुमारी, नं० ७ फ़ातमा उर्फ़ त्तफो, नं० ८ जविदा उर्फ़ जिदा।

नं० ९, उसका नाम इसको मालूम नहीं था। यह लड़की पशमीने

के सौदागरों के यहाँ नौकरी करती थी। अब उसने नम्बरवार विचार करना आरम्भ किया।

हमीदा सुन्दर थी, बड़ी भोली-भाली लड़की। जिसकी आयु लगभग पन्द्रह की होगी। सदा प्रसन्न रहने वाली थी। इस नाजुक कली को देखकर ऐसा लगता, जैसे कोई सफेद शक्कर की पुतली और भुरभुरी है। यदि जरा भी हाथ लग जाये तो इसके शरीर का मानो कोई अंग गिर जाने का डर रहता। छोटे-से सीने पर छातियों का उभरापन ऐसा दीख पड़ता था, जैसे मन्द राग में किसी ने दो स्वर ऊँचे कर दिये हों।

यदि उससे वह कहता, हमीदा मैं तुमसे प्यार करना चाहता हूँ, तो अवश्य ही उसके मन की धड़कन वाली आवाज बन्द हो जाती। वह इसे सीढ़ियों में ही ऐसा कह सकता था। कल्पना में वह हमीदा से उसी स्थान पर मिला···वह ऊपर से तेजी के साथ जा रही थी और उसने रोका और ध्यान से देखने लगा। उसका छोटा-सा दिल हृदय में इस प्रकार फड़फड़ाया, जैसे तेज वायु के झोंके से दीपक की लौ। वह कुछ न कर सका।

हमीदा से वह कुछ नहीं कह सकता था। वह इस योग्य ही नहीं थी, जिससे प्यार किया जा सके। वह केवल विवाह योग्य थी। कोई भी पति इसके लिये ठीक हो सकता था उसका प्रत्येक अंग, स्त्री बनने योग्य था। उसकी गिनती उन लड़कियों में हो सकती थी, जिनका समस्त जीवन विवाह के पश्चात् घर में सिमट कर रह जाता है। जो बच्चे पैदा करती रहती हैं। कुछ ही वर्षों में अपना यौवन नष्ट-भ्रष्ट कर बैठती हैं और रंग-रूप खोकर भी उनको अपने में कुछ भी अन्तर नहीं दीख पड़ता।

इस प्रकार की लड़कियों से प्यार का नाम सुनकर तो वह समझता कि अचानक बड़ा भारी पाप हो गया है और वह प्यार नहीं कर सकता। उसे विश्वास था, यदि वह किसी दिन गालिब की एक भी पंक्ति उसे सुना देता, तो कई दिनों तक नमाज के साथ-साथ क्षमा-याचना माँगकर भी वह यह समझती कि उसकी गलती क्षमा नहीं हुई। अपनी माँ से उसने तुरन्त सारी बात कह सुनाई होती और उस पर वह ऊधम मचते कि विचार आते ही सैय्यद काँप उठता। स्पष्ट है कि सभी उसको दोषी ठहराते और जीवन-भर उसके माथे पर एक ऐसा दाग लग जाता जिसके कारण उसकी कोई बात भी न सुनने के लिए तैयार होता; परन्तु वह ऊँची चट्टानों से टकराने का विचार रखता था।

नं० २ सगरा, नं० ३ नगमा इनके विषय में विचार करना ही व्यर्थ था, क्योंकि वे एक कट्टर मौलवी की लड़कियाँ थीं। इनका विचार करते ही उसके सामने उस मस्जिद की चट्टाइयाँ आगईं, जिन पर मौलवी गदत्तुल्ला साहब लोगों को नमाज पढ़ाने और बाँग देने में लगे रहते थे। मौलवी की दोनों लड़कियाँ जवानी में पदार्पण कर चुकी थीं। वे जवान और सुन्दर थीं; किन्तु यह अनोखी बात है कि उनके मुख, जैसे दरवाजे के आगे दीवार बनी होती है, इस प्रकार के थे। जब सैय्यद अपने घर में बैठा उनकी आवाज सुनता तो वह अनुभव करता कि आदत के अनुसार कोई धीमे-धीमे स्वरों में प्रार्थना कर रहा है। इस प्रकार की प्रार्थना, जिसका अभिप्राय: वह स्वयं भी न जानता था। इनको केवल खुदा से प्रेम करना सिखाया गया था, मनुष्य से नहीं। इसलिए सैय्यद इनसे प्रेम नहीं करना चाहता था।

वह इन्सान था, इन्सान को प्यार भरा हृदय देना चाहता था। सगरा और नगमा को इस प्रकार से सिखाया जा रहा था कि इस संसार

मे नही, वल्कि दूसरे संसार में उन भले-मानस व्यक्तियों के काम ग्रा सकें।

जब सैय्यद ने उसके विषय में सोचा, तो ग्रपने ग्राप से कहा--"भई, नहीं, उनसे प्रेम नहीं किया जा सकता, क्योंकि ग्रन्त में यह लड़कियाँ कुछ दिनों पश्चात् किसी ग्रौर के हवाले कर दी जायेंगी। मुझे संसार में गुनाह भी करने हैं। इसलिए मैं यह जुग्रा नहीं खेलना चाहता। मुझसे यह न देखा जायगा कि मैं जिससे प्रेम करूँ ग्रौर वह कुछ दिन बाद किसी ग्रन्य पुरुष को दे दी जाय।"

इसलिए उसने सगरा ग्रौर नगमा का नाम सूची से काट दिया।

नं० ४ पुष्पा, नं० ५ कमलेश, नं० ६ राजकुमारी, जिनका ग्रापस में भगवान ही जानता है क्या सम्बन्ध होगा? सामने वाले मकान में रहती थीं। पुष्पा के विषय में विचार ही करना व्यर्थ था। क्योंकि उसका विवाह एक बजाज से होने वाला था, जिसका नाम इतना ही बदसूरत था, जितना पुष्पा सुन्दर थी। वह कभी-कभी उसे छेड़ा भी करता था ग्रौर खिड़की में खड़े होकर ग्रपनी काली ग्रचकन दिखाकर कहा करता था—"पुष्पा बताग्रो मेरी इस ग्रचकन का रंग कैसा है?" पुष्पा के कपोलों पर क्षण भर के लिये गुलाब की पत्तियाँ सी थरथरा जातीं ग्रौर वह बहादुरी से उत्तर देती "नीला।"

उसके होने वाले पति का नाम कालूमल था। लाहोल-बिला किस प्रकार का यह भद्दा-सा नाम, उसका नाम रखते हुए उसके माता-पिता ने कुछ भी नहीं सोचा।

जब वह पुष्पा ग्रौर कालू के विषय में सोचता, तो ग्रपने हृदय में कहा करता—यदि इसका विवाह किसी भी कारण से नहीं रुक सकता, तो केवल इसी कारण से विवाह रोक देना चाहिए कि उसके बनने वाले पति का नाम बेहूदा है। कालूमल···एक कालू ग्रौर इस पर "मल"।

धिक्कार है···इसका क्या तात्पर्य है ?

किन्तु वह सोचता यदि पुष्पा का विवाह कालूमल से न हुआ तो किसी घसीटाराम हलवाई या किसी रोड़ीमल सर्राफ से हो जायेगा। वह उस दशा में उससे प्यार नहीं कर सकता था। यदि वह करता तो उसे हिन्दू-मुस्लिम दंगे का का डर था। मुसलमान और एक हिन्दू लड़की से प्यार करे···प्रथम तो प्यार करना वैसे ही अपराध है और फिर मुसलमान और हिन्दू लड़की को प्यार करे·····"एक करेला दूसरा नीम चढ़ा" वाली बात।

नगर में कई बार हिन्दू-मुस्लिम फसाद हो चुके थे, किन्तु जिस मुहल्ले में सैय्यद रहता था, न मालूम किस वजह से बचा हुआ था। यदि वह पुष्पा, कमलेश और राजकुमारी से प्यार करने का विचार करता, तो स्पष्ट है कि संसार की सभी गाएं और सूअर मुहल्ले में डेरा लगा लेते। हिन्दू-मुस्लिम फसाद से सैय्यद को घृणा थी। इसलिए नहीं कि एक दूसरे का सर फोड़ देते और खून के छींटे उड़ाते, नहीं इसलिए कि सिर बड़े भद्दे ढंग से बिखेरे जाते थे।

राजकुमारी जो उन दोनों में छोटी थी, वह उसको पसन्द थी। उसके अधर स्वाँस की कमी के कारण थोड़े से खुले रहते थे, जो उसे बहुत पसन्द थे। इनको देखकर इसे हमेशा यही विचार आता कि एक चुम्बन इनको छूकर आगे निकल गया है। एक बार उसने राजकुमारी को जो अभी चौदहवीं मंजिल पार कर रही थी, अपने घर की तीसरी छत के गुसलखाने में स्नान करते अपने घर के झरोखों से जब उसकी ओर देखा तो उसे ऐसा अनुभव हुआ कि इसके गन्दे विचार दिमाग से निकल कर सामने आ खड़े होंगे। सूर्य की मोटी-मोटी किरणें जिनमें से अनगिनत सोने-चाँदी की तारें छिड़काव-सा करती हुई उसके

नग्न शरीर पर फिसल रही थीं। इन किरणों ने उसके गोरे-वदन पर सोने-चांदी के मानो पतरे चढ़ा दिये हों। बाल्टी में से जब उसने गेड़वा निकाला और खड़ी होकर अपने शरीर पर पानी डाला तो वह सैय्यद को सोने की पुतली-सी जान पड़ी। पानी की मोटी-मोटी बूंदें उसके शरीर से लुढ़ककर गिर रही थीं, जैसे सोना पिघल कर गिर रहा हो।

राजकुमारी, पुष्पा और कमलेश से चतुर थी। इसकी पतली-पतली उंगलियां इस ढंग हिलती रहतीं कि वह कोई बड़ी भारी फिलासफर हो, उसे बहुत पसन्द थी। इन उंगलियों में खिचाव था। इस खिचाव का प्रमाण करोशिया और सुई के काम से मिलता था, जिसे वह कई बार देख चुका था।

एक दिन उसने राजकुमारी के कोमल हाथों से बुना हुआ मेजपोश देखा। उसे विचार आया कि उसने हृदय की अनगिनत धड़कनें भी उसकी छोटी-छोटी डब्बियों में गूंथ दी हों। एक बार जब वह उसके समीप ही खड़ा था, उसके हृदय में प्यार करने का विचार उत्पन्न हुआ; किन्तु जैसे ही उसने राजकुमारी की ओर देखा, तो वह मन्दिर के रूप में दीख पड़ी, जिसके साथ मानो वह मस्जिद के समान खड़ा था··· "मस्जिद और मन्दिर में क्या प्यार हो सकता है?"

मुहल्ले की सभी लड़कियों से यह हिन्दू लड़की बुद्धिमान थी। इसके माथे पर एक पतली-सी रेखा अपने पांव जमाने की चेष्टा किया करती थी, जो इसे बहुत अच्छी दीख पड़ती थी। इसके माथे को देखकर वह मन ही मन में कहा करता कि जब भूमिका इतनी सुन्दर और आकर्षक है तो मालूम नहीं पुस्तक कितनी आकर्षक होगी···मगर···आह···इसके जीवन में यह मगर शब्द सच-मुच का मगर बनकर रह गया था, जो उसे डुबकी लगाने से सदा रोके रखता था।

नं० ७ फातमा उर्फ फत्तो, खाली नहीं थी। उसके दोनों हाथ प्यार में डूबे हुए थे। एक अमजद से जो लोहे का काम किसी वर्कशाप में करता था, दूसरा उसके चाचा के बेटे से, जो दो बच्चों का बाप था, उससे प्रेम करती थी। फातमा उर्फ फत्तो इन दोनों भाइयों से प्यार कर रही थी। मानो एक पतंग से दो पेंचें लड़ा रही हो। एक पतंग में जब दो और पतंग उलझ जाये तो अधिक दिलचस्पी पैदा हो जाती है; परन्तु यदि इस तिगड़े में एक और पेंच की वृद्धि हो जाये, तब यह उलझाव एक भूल-भुलइया का रूप धारण कर लेगा। इस प्रकार का उलझाव सैय्यद को अच्छा नहीं लगता था। इसके अतिरिक्त फत्तो जिस प्रकार के प्रेममय जीवन में फँस चुकी थी, वह प्रेम निकृष्टता का रूप था। सैय्यद जब इस प्रकार के प्रेम का विचार करता तो प्रेममय पुरानी कहानियों की 'बड़ी बी' पीले कागजों के ढेर से उठकर उसकी आंखों के सामने लाठी टेकती हुई आ जाती और उसकी ओर इस प्रकार देखती जैसे कहना चाहती है कि मैं उस नीली छतरी पर बिखरे तारों को ला सकती हूँ। बता तेरी नज़र किस लड़की पर है, ऐसे चुटकियों में तुझसे मिलाप करा दूंगी।

उसे बुढ़िया का विचार आते ही वह 'पाईबाग' के विषय में सोचता, जाहरापीर और दाता गंज बख्श की समाधि उसकी आंखों के सामने आ खड़ी हो जाती। जहाँ वह बुढ़िया, उसकी प्रेमिका को किसी बहाने से ला सकती थी?···उस विचार के आते ही उसका प्रेम सिकुड़ जाता और एक ऐसी समाधि का रूप धारण कर लेता; जिस पर हरे रंग का गलाफ़ चढ़ाकर, अनगिनत हार बिखेरे गये हों···।

कभी-कभी उसे यह ख्याल भी आता यदि 'बड़ी बी' असफल रही, तो कुछ ही दिनों के पश्चात् इस मुहल्ले से मेरा जनाज़ा ही निकलेगा।

ग्रौर दूसरे मुहल्ले से मेरी उस प्रेमिका की ग्रर्थी निकलेगी जो यौवन में पदार्पण कर चुकी थी। यह दोनों ग्रर्थी ग्रौर जनाज़ा एक दूसरे मुहल्ले से निकलते हुए टकरा जाएँगे तो फिर दोनों ग्रर्थियाँ एक ग्रर्थी का रूप धारण कर लेंगी या प्रेममय कहानियों की तरह जब मुझे ग्रौर मेरी प्रेमिका को दफ़न किया जायेगा, तब एक नीहारिका प्रगट होगी ग्रौर दोनों समाधियाँ मिलकर एक बन जायेंगी। वह यह भी सोचता यदि उसकी मृत्यु भी हो गई ग्रौर उसकी प्रेमिका किसी कारण-वश ग्रात्म-हत्या न भी कर सकी, तब ग्राये वीरवार को उसकी समाधि पर कोमल हाथ, उसकी याद में फूल चढ़ाया करेंगे ग्रौर दीपक भी जलाया करेंगे। ग्रपने काले ग्रौर लम्बे केशों की लटाएँ खोलकर ग्रपना सिर (माथा) समाधि से फोड़ा करेंगी ग्रौर समाज एक तस्वीर ग्रौर बना देगा; जिसके ऊपर यह लिखा होगा।

'हाय! इस ज़ूदो पशेमां का पशेमां होना'

या कोई कवि दूसरा गीत लिख देगा। एक जमाने तक तमाशबीन जिसे कोठों पर तबले की थाप के साथ सुनते रहेंगे। यह गीत इस ढंग के होंगे—

मेरी लहद पे कोई पर्दा पोश ग्राता है
चिरागे गोरे-गरेबाँ सुबा बुझा देना।

इस प्रकार के गीत जब वह किसी गद्य में देखता, तो इस नतीजे पर पहुँचता कि प्रेम गोर-कंचन है, जो हर समय कन्धे पर कुदाल रखे, प्रेमियों के लिए कब्रें खोदने के लिए, हर समय तैयार रहता है। इस प्रेम से वह उस प्रेम की तुलना करता, जिसकी कल्पना उसके दिमाग में थी; परन्तु जब उनमें धरती ग्रौर ग्राकाश-सा ग्रन्तर पाता तो वह विचार करता कि या तो उसका दिमाग खराब है, या वह समाज ही खराब है; जिसमें वह स्वाँस ले रहा है।

सैय्यद यदि कभी दुकान खोलता, तो उसे ऐसा अनुभव होता कि वह किसी कसाई की दुकान में दाखिल हो गया हो। प्रत्येक गीत की पंक्ति इसे बगैर खाल का बकरा दीख पड़ती; जिसका गोश्त चरबी के समेत बू पैदा कर रहा हो। प्रत्येक बात उसकी जबान पर एक खास-मजा उत्पन्न होने का अनुभव करती, जब वह कोई गीत पढ़ता, तो उसके जबान को वही अनुभव होता जो कुर्बानी का गोश्त खाते समय अनुभव होता था।

वह सोचा करता कि जिस प्रान्त की जनसंख्या का चौथा भाग कवि है, वह इस प्रकार के ही गीत लिखते हैं। प्यार सदा वहाँ पर गोश्त के लोथड़ों के नीचे फँसा रहेगा। उस प्रकार की उदासी एक दो दिन के पश्चात् स्वयं ही समाप्त हो जाती और फिर नई ताजगी के साथ प्रेम की समस्या को सुलझाने का प्रयत्न करता था।

नं० ८ जबिदा उर्फ जिदा, मोटे-मोटे हाथ-पाँव वाली लड़की थी। यदि उसे दूर से कभी देख लेता तो गुँथे हुए मैदे के समान ढेर दीख पड़ती थी। मुहल्ले के एक नवयुवक ने एक बार उसको आँख मारी, प्रेम की प्रथम सीढ़ी पर चढ़ने के लिये; परन्तु उस बेचारे को लेने के देने पड़ गये। उस लड़की ने अपनी माँ से सब कुछ जा सुनाया और उसकी माँ ने अपने बड़े लड़के से खुफिया ढंग से बात-चीत की और उसको फटकारा परिणाम इसका यह हुआ कि आंख मारने के दूसरे ही दिन सांयकाल के समय जब अब्दुलगनी साहब हिकमत सीखकर घर आए, तो उसकी दोनों आँखें सूझी हुई थीं। सुनते हैं, जबिदा ऊर्फ जिदा चिक में से यह तमाशा देख कर बहुत प्रसन्न हुई। सैय्यद को चूँकि आपनी आँखें बहुत प्यारी थीं, इसलिए वह जबिदा के विषय में क्षण-भर के लिए भी सोचने को तैयार न था। अब्दुलगनी ने आँख द्वारा प्यार का श्री गणेश करना चाहा था। सैय्यद को यह ढंग बाजारी जान पड़ता था।

यदि वह इसको अपना प्यार भरा-संदेश देना चाहता तो अपनी जबान को हिलाता, जो दूसरे दिन ही काट दी जाती। मरहम-पट्टी करने से पहले जबिदा का भाई कभी न पूछता कि क्या बात है ? बस, वह इज्जत के नाम पर छुरी चला देता, उसको इसका कभी विचार न आता कि वह छः लड़कियों का जीवन नष्ट कर चुका है, जिनकी कहानियाँ बड़े मजे के साथ अपने मित्रों को सुनाया करता था।

नं० ६ जिसका नाम उसको भी पता न था; परन्तु वह पशमीने के व्यापारियों के यहाँ नौकरी करती थी। एक बहुत बड़ा घर था, जिसमें चार भाई रहते थे। यह लड़की जो कश्मीर की पैदावार थी, इन चार भाइयों के लिये सर्द-ऋतु का शाल बनाकर इनको आनन्द प्रदान करती थी। ग्रीष्म-ऋतु में वे सब के सब कश्मीर चले जाते और वह अपनी दूर की बिरादरी में किसी स्त्री के पास चली जाती थी ? वह लड़की जो अब स्त्री का रूप धारण कर चुकी थी, दिन में दो बार अवश्य ही उसकी नजरों से गुजरती थी। इस लड़की को देखकर वह सदा यही विचार करता था कि उसने एक नहीं तीन चार स्त्रियाँ इकट्ठी देखी हैं। उस लड़की के विषय में जिसके विवाह के लिये चारों भाई चिन्ता कर रहे थे, उसने कई बार सोचा। वह उसके फुर्तीलेपन पर बहुत ही रीझ चुका था। वह घर का सारा काम-काज स्वयं ही सम्भालती थी। वह इन चार सौदागर भाइयों की बारी-बारी सेवा भी करती थी।

यह देखने में प्रसन्न दीख पड़ती थी। इन चार सौदागरों को, जिनके साथ इसके शरीर का सम्बन्ध था, वह एक ही दृष्टि से देखती थी। इस लड़की का जीवन जैसा कि दीख पड़ता है, एक आश्चर्य-जनक खेल था, जिस खेल में चार व्यक्ति भाग ले रहे थे। उन चार व्यक्तियों में से प्रत्येक को यही समझना पड़ता था कि इसके तीनों भाई मूर्ख हैं।

जब इस लड़की के साथ इनमें से कोई मिल जाता तो वह दोनों मिल-कर यह सोचते या समझते कि घर में जितने आदमी रहते हैं, सब के सब अन्धे हैं, किन्तु क्या वह स्वयं अन्धी नहीं थी? इस प्रश्न का उत्तर सैय्यद को नहीं मिलता था। यदि वह अन्धी होती तो एक ही समय में चार व्यक्तियों से सम्बन्ध पैदा न करती, हो सकता है वह इन चारों को एक ही समझती हो···क्योंकि स्त्री और पुरुष का शारीरिक सम्बन्ध एक जैसा ही होता है।

वह अपने जीवन की सुनहली घड़ियाँ आनन्दमय व्यतीत कर रही थी। चार सौदागर भाई छुप-छुप कर कुछ न कुछ अवश्य ही देते होंगे, चूँकि जब पुरुष किसी भी स्त्री के साथ कुछ क्षण आनन्दमय व्यतीत करता है, तो उसके हृदय में उसका मूल्य चुकाने का विचार अवश्य ही उत्पन्न होता है; क्योंकि यह विचार एकान्त स्थान में पहुँचने से पूर्व ही उत्पन्न होता है, इसलिये अधिक लाभप्रद होता है।

सैय्यद इसको प्रायः बाजार में शहाबुद्दीन हलवाई की दुकान पर खीर खाते या भाई केसरसिंह फलों वाले की दुकान के पास फल खाते देखता था। उसे इन वस्तुओं की आवश्यकता थी। फिर वह जिस स्वतन्त्रता-पूर्वक खीर और फल खाती थी, इससे पता चलता है कि वह इनका एक-एक अंश हज़म करने का विचार रखती है।

एक बार सैय्यद शहाबुद्दीन की दुकान पर फ़ालूदा पी रहा था और सोच रहा था कि इतनी सुन्दर चीज को, किस प्रकार हज़म कर सकेगा? वह आई और चार आने की खीर में एक आने की रबड़ी डलवा कर दो ही मिन्ट में सारी प्लेट चट कर गई। सैय्यद को यह देखकर मन में ईर्ष्या हुई। जब वह चली गई तब शहाबुद्दीन के मैले अधरों पर मैली मुस्कान की रेखाएँ उत्पन्न हुईं और उसने किसी को भी जो सुन ले पुकारते हुए कहा—"साली मजे कर रही है।"

यह सुनकर उसने उस लड़की की ओर देखा जो आँखें मटकाती हुई फलों के दुकान के समीप पहुँच चुकी थी। भाई केसर सिंह की दाढ़ी का मजाक उड़ा रही थी। वह सदा खुश रहती और सैय्यद को यह देखकर अत्यन्त खेद होता। भगवान् जाने क्यों? उसके हृदय में अद्भुत और गदले विचार उत्पन्न होते कि वह सदा प्रसन्न न रहे।

सन् बासठ के प्रारम्भ तक वह इस लड़की के बारे में यही निर्णय करता रहा कि इससे प्यार नहीं किया जा सकता।

२

***

सन् बासठ के शुरू होने में केवल रात के चन्द घन्टे ही शेष थे। सैय्यद रजाई में भी अधिक सर्दी होने के कारण कांप रहा था। वह पतलून और कोट पहने हुए ही लेट गया था; किन्तु ठंड की लहरें फिर भी उसकी हड्डियों तक पहुंच रही थीं। वह उठ खड़ा हुआ और अपने कमरे की हरी रोशनी में, जो इस ठंड में एक नया प्लाट तैयार कर रही थी, उसने जोर-जोर से टहलना शुरू कर दिया ताकि खून फिर से गर्म हो सके।

थोड़ी देर इस प्रकार चलने-फिरने के पश्चात् जब वह गर्मी का अनुभव करने लगा तो वह आराम कुर्सी पर बैठ गया और सिगरेट जलाकर अपना दिमाग टटोलने लगा। उसका दिमाग खाली था इसी कारण वह कुछ तेज था। कमरे की सभी खिड़कियाँ बन्द थीं; परन्तु वह बाहर गली की हवा वाली गुनगुनाहट सरलता पूर्वक सुन रहा था। इसी गुनगुनाहट में उसे किसी इन्सान की आवाज भी आने लगी ? एक घुटी-घुटी चीख वर्ष की अन्तिम घड़ियों वाली रात के सन्नाटे में चाबुक के मारने के समान उभरी, फिर किसी की प्रार्थनामय आवाज काँपी और वह उठ खड़ा हुआ और खिड़की के सुराख में से गली की ओर निहारा।

वही···वही लड़की अर्थात सौदागरों की नौकरानी, बिजली के खम्बे के नीचे खड़ी थी, एक कम्बल, एक बनियान में बिजली की रोशनी में ऐसी दीख पड़ती थी कि उसके शरीर पर पतली सी बर्फ की तह जम गई हो। इस बनियान के नीचे उसकी बेढंगी छातियाँ नारियल के समान लटक रही थीं। वह इस ढंग से खड़ी थी, मानो अभी-अभी कुश्ती लड़ कर अखाड़े से बाहर आई हो। इस अवस्था में देखकर सैय्यद के नन्हें और कोमल हृदय को बड़ा धक्का लगा।

इतने में किसी पुरुष की घबराई आवाज आई···"खुदा के लिये अन्दर चली आओ···कोई देख लेगा तो मुसीबत खड़ी हो जायेगी ?" जंगली बिल्ली के समान लड़की ने गुर्रा कर कहा—"में नहीं आऊँगी··· बस एक बार जो कह दिया, नहीं, आऊँगी।"

सब से छोटे सौदागर की आवाज आई, "खुदा के लिये जोर से न बोलो, कोई सुन लेगा, राजो ?"

राजो ने अपनी लंडूरी चोटियों को झटका देकर कहा—"सुन ले, खुदा करे कि कोई सुन ले और यदि तुम मुझे इसी प्रकार अन्दर आने

के लिये दुखी करते रहे, तो मैं मुहल्ले-भर को जगाकर सब कुछ कह दूंगी···समझे ?"

राजो, सैय्यद को दीख रही थी, जिससे वह बोल रही थी, वह नहीं दीख पाया। जब सैय्यद ने बड़े सुराख में से राजो की ओर निहारा, तो उसके शरीर से कम्पन छूट पड़ी। यदि वह सारी की सारी ही नंगी होती तो शायद उसके कोमल विचार को धक्का न पहुँचता; परन्तु उस के शरीर के वह अंग नंगे थे, जो दूसरे छिपे हुए अंगों को अपने जैसा होने का आदेश दे रहे थे। राजो बिजली के खम्भे तले खड़ी थी। सैय्यद को ऐसा महसूस हुआ कि औरत के विषय में उसके सभी विचार धीरे-धीरे कपड़े उतार रहे थे।

राजो की भौंडी और मोटी-मोटी बाहें जो कन्धों तक नंगी थीं, घृणास्पद रूप से लटक रही थीं। मर्दाना बनियान के खुले और गोल गले से ढलकी हुईं, डबल रोटी जैसी मोटी और कोमल छातियाँ कुछ इस ढंग से बाहर को झांक रही थीं मानो सब्जी, तरकारी की टूटी हुई टोकरी में से गोश्त के टुकड़े दीख रहे हों। अधिक पहनने के कारण पतली बनियान के नीचे वाला भाग स्वयं ही ऊपर को उठ चुका था और नाफे का गड्ढा, इसके खमीर के आटे जैसे फूले हुए पेट पर ऐसे दिखाई देता था, जैसे किसी ने उँगली गाड़ दी हो।

यह दृश्य देखकर सैय्यद के दिमाग़ का स्वाद खराब हो गया। उसने चाहा कि खिड़की से हटकर अपने बिस्तर की ओर चला जाये और सब कुछ भूल-भाल कर सो जाये, किन्तु जाने क्यों वह सुराख पर आंख जमाये खड़ा रहा। राजो को इस अवस्था में देखकर उसके हृदय में घृणा के अंकुर जाग उठे, परन्तु इसी घृणा के कारण वह दिलचस्पी ले रहा था।

सौदागर के सब से छोटे लड़के ने जिसकी आयु तीस वर्ष के लग-

भग होगी, एक बार फिर प्रार्थना भरे स्वर में कहा—

"राजो ! खुदा के लिए अन्दर चली आओ। मैं तुमसे वादा करता हूँ कि फिर कभी नहीं सताऊँगा। लो अब मान जाओ···देखो खुदा के लिए अब मान लो। यह तुम्हारी बगल में वकीलों का मकान है यदि इन में से कोई जाग उठा या देख लिया, तो बड़ी शर्म का सामना करना पड़ेगा।"

राजो चुप रही; किन्तु थोड़ी देर के बाद बोली—"मुझे मेरे कपड़े ला दो। बस अब मैं तुम्हारे यहाँ न रहूँगी। मैं तंग आ गई हूँ, मैं कल से वकीलों के यहाँ नौकरी कर लूंगी···समझे, यदि अब तुमने मुझसे कुछ भी कहा तो खुदा की कसम शोर मचा दूंगी···मेरे कपड़े चुप-चाप लाकर दे दो।" सौदागर के लड़के की आवाज आई—"लेकिन तुम रात भर कहाँ रहोगी ?"

राजो ने कहा—"जहन्नुम में, तुम्हें क्या ? जाओ अपनी औरत की गोद गर्म करो। मैं तो कहीं न कही सो जाऊँगी।" उसकी आंखों में आंसू थे···आंसू ?···वह सच-मुच रो रही थी।

सुराख से आंख हटाकर सैय्यद पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गया और सोचने लगा। राजो की आंखो में आंसू देखकर उसको दुःख हुआ। इसमें कोई आश्चर्य वाली बात नहीं कि उस दुःख के साथ वह घृणा भी लिपटी हुई थी जो राजो को देखकर सैय्यद के हृदय में पैदा हुई थी, परन्तु बहुत कोमल हृदय होने के कारण वह शीघ्र ही पिघल-सा गया। राजो की आंखो में जो शीशे के मृतवान में चमकदार मछलियों की तरह सदा प्यासी रहती थीं, आंसू देखकर उसके हृदय ने चाहा कि उठकर उसे दिलासा दे।

राजो के यौवन के चार कीमती साल सौदागर भाइयों ने मामूली चटाई की तरह प्रयोग किये थे। इन वर्षों में चारों भाइयों के नक्शे-

कदम इस प्रकार घुलमिल गए थे कि इन में से अब किसी का भय ही नहीं रहा था कि कोई इनके पाँव के चिन्ह देख लेगा। राजो के विषय में यह कहा जा सकता है कि वह अपने पाँव के चिन्ह देखती थी न कि दूसरों के, बस केवल चलते जाने की धुन थी। किसी ओर भी, किन्तु अब शायद उसने मुड़कर देखा था, मुड़कर उसने क्या देखा था जो उसकी आँखों में आँसू आ गए? यह सैय्यद को मालूम नहीं था।

जिस चीज का पता न हो उस चीज को जानने के लिए सभी लालायित रहते हैं। कुर्सी पर बैठा सैय्यद देर तक अपनी जानकारी की उलट-पलट करता रहा। जब उठकर उसने कुछ और देखने की चेष्टा करते हुए सुराख पर आँख जमाई, तो राजो वहाँ न थी। देर तक सुराख पर आँख लगाये खड़ा रहा; किन्तु उसे बिजली की श्वेत चाँदनी, गली के लम्बे फर्श और गन्दी नाली के सिवा, जिसमें पालक के अनगिनत डंठल पड़े थे और कुछ न दीख पाया।

बाहर सम्भवत: तीन का अन्तिम पहर दम तोड़ रहा था और उसका हृदय पाकिस्तानी-इन्जन की तरह धक्-धक् करने लगा।

राजो कहाँ है?...अन्दर चली गई है क्या?...मान गई है क्या? परन्तु प्रश्न है कि वह किस बात पर झगड़ी थी?

राजो की काँपती हुई छातियाँ अभी तक सैय्यद की आँखों के सामने खड़ी थीं। अवश्य ही उसके और सौदागर के छोटे लड़के जिसका नाम "महमूद" है किसी बड़ी भारी बात पर झगड़ा हो गया होगा। दिसम्बर की खून जमाने वाली रात में केवल एक बनियान और शलवार के साथ बाहर निकल आई थी। बहुत कहने सुनने पर भी अन्दर जाने का नाम हा नहीं लेती थी।

सैय्यद सोचना चाहता इनके झगड़े का कारण; परन्तु वह इस कारण पर विचार ही नहीं करना चाहता था। कितनी भयंकर घटना

थी, जो उसके सामने आ जाती थी, किन्तु वह सोचता कि यह बात झगड़े का कारण न होगी, क्योंकि वह दोनों इसके आदी थे। एक समय से, राजो इन सौदागर भाइयों को बड़े ढंग से एक थाल में भोजन खिला रही थी; परन्तु अब क्या हो गया था ? राजो के यह शब्द उसके कानों में जिद्दी मक्खी के समान भिनभिना रहे थे—जहन्नुम में...तुम्हें इससे क्या...जाओ तुम अपनी औरत की गोद गरम करो...मैं कहीं न कहीं सो जाऊँगी—इन शब्दों में वेदना थी।

इसको पीड़ित देखकर सैयद के नमालूम विचारों को शांति तो अवश्य पहुँची थी; परन्तु उसके साथ ही इसके हृदय में दया भी पैदा हुई थी। किसी भी औरत से उसने आज तक अपनी हमदर्दी प्रकट न की थी। वह इसको दुखी देखना न चाहता था, इसलिए कि वह उसकी हमदर्दी, जो उसके हृदय-पटल पर उसके नाम को लिख चुका है, प्रकट कर सके। वह उसको सहन कर सकती थी यदि वह गली की किसी और लड़की से हमदर्दी प्रगट करता, तो मालूम है कितनी वड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ता। वास्तव में इस हमदर्दी का तात्पर्य कुछ और ही आधुनिक समाज वाले निकालते।

राजो के अलावा सभी लड़कियाँ इस प्रकार जीवन काट रही थीं, जिसमें ऐसे मौके कम ही मिलते हैं। जब इनसे विशेष प्रकार की हमदर्दी की जा सकती है। यदि इस प्रकार के कुछ क्षण प्राप्त भी हों, तो वह एकदम इनके हृदय में दफन हो जाते हैं। आशाओं और तमन्नाओं की यदि कब्रें बनती हैं, तो फातहमा पढ़ने की इजाजत नहीं मिलती या इसका मौका ही नसीब नहीं होता। यदि प्यार की कोई चिता तैयार भी होती है, तो आस-पास के लोग इस पर राख डाल देते हैं कि चिंगारियाँ न उठ सकें।

सैय्यद विचार करता कि यह कितना दुख से भरा और बनावटी जीवन है। किसी को भी आजादी नहीं कि जिन्दगी के गड्ढे किसी को दिखा सके ? वह व्यक्ति जिन के पाँव मजबूत नहीं, उनको अपनी लड़-खड़ाहटें छिपानी पड़ती हैं; क्योंकि इस प्रकार की रीति है। प्रत्येक व्यक्ति का एक जीवन अपने लिए और एक दूसरों के लिए व्यतीत करना होता है। आँसू भी दो प्रकार के होते हैं, अट्टहास भी दो प्रकार के। एक वह आँसू जो जबरदस्ती से निकालने पड़ते हैं। और एक वह जो स्वयं ही निकल पड़ते हैं। एक अट्टहास जो नीरवता में गूँज सकता है, दूसरा वह जो खास अन्दाज और खास नियमों के रूप में ही गले से निकालना पड़ता है।

कवि जिसकी सारी आयु वेश्याओं के चौबारे पर और मयखानों में बीती हो और मौत के बाद हजरत मौलाना और रहमतउला ओलिया बता दिया जाता है। यदि दुर्भाग्य से इसकी जीवनी लिखी जाये, तो उसको देवदूत का रूप चढ़ाना, जीवन-चरित्र में साबित करना, कलाकार अपना काम समझता है। आगा हसन का सारा जीवन बुरे कामों में बीता परन्तु मौत के बाद ही क्षणभर में उसके सारे करेक्टर को धोबी के घर भिजवा दिया और जब वापिस आया तो जनता ने देखा, तो उसमें कोई दाग, कोई सलवट नहीं थी।

गधे, घोड़े, खच्चर, ऊँट, मतलब यह कि प्रत्येक जानदार और बेजान वस्तु को अच्छा कहना उसका धर्म है। लेखन-कला पर, कविता पर, इतिहास पर, प्रत्येक व्यक्ति के गले पर अच्छा-अच्छा बिठा दिया जाता है। बड़े से बड़े इन्सान से लेकर मास्टर निसार गवैयेतक सब के सब सच्चे हैं। सैय्यद बिल्कुल ठीक था। राजो की सदा खुश रहने वाली आँखों में आंसू दीख पड़े और उन आँसुओं को इखलाक से बेपरवाह

होकर अपनी उंगलियों से छुए। वह अपने आसुओं का स्वाद भीली प्रकार जानता था; परन्तु वह दूसरों के आंसू भी चखना चाहता था। खास कर किसी स्त्री के आंसू; क्योंकि स्त्री वृक्ष के रूप में शहद है। इसलिए उसकी इच्छा भी तेज हो गई।

सैय्यद को विश्वास था, यदि वह राजो के समीप होना चाहेगा, तो वह जंगली घोड़ी के समान बिदकेगी नहीं। राजो गलाफ चढ़ी हुई औरत न थी। वह जैसे भी थी, दूर से नजर आ जाती थी। उसको देखने के लिए खुर्दबीन या किसी यन्त्र की आवश्यकता न थी। वह बिल्कुल साफ थी। उसकी भद्दी और मोटी हँसी, जो उसके मटमैले अधरों पर बच्चों के टूटे हुए मिट्टी के मकानों के समान दीख पड़ती थी। हँसी में सत्यता थी, बड़ी स्वस्थ और अब के उसकी सदा प्रसन्न रहने वाली आंखों ने दो मोटे-मोटे आंसू ढलका दिये थे, इनमें बनावटीपन न था। राजो को सैय्यद बहुत दिनों से जानता था। उसकी आंखों के सामने उसके मुख की रेखाएँ बदली थीं। वह लड़की से औरत का रूप धारण करने में लगी हुई थी; क्योंकि उसके अन्दर एक ही जगह तीन-चार औरतें थीं, यही कारण है कि चार व्यापारी भाइयों को जनसमूह न समझती थी; लेकिन वह जन-समूह सैय्यद को पसन्द न था। इसीलिए वह केवल एक औरत के साथ एक ही पुरुष को सदा देखने का इच्छुक था; किन्तु यहाँ 'राजो' के मामले में पसन्द या नापसन्द के बीच में रुक जाना पड़ता था; क्योंकि कई प्रकार के विचार उसके दिमाग में इकट्ठे होते और कई बार तो उसे बिचोलिया बनकर राजो को बधाई देनी पड़ती। यह बधाई किस कारण थी, यह वह नहीं जानता था। इस कारण विचारों की भीड़-भाड़ में वह उस पर विचार करने में सदा भूल करता, जो उसे बदना से परिचय करा देता है।

गली के अच्छे और बुरे सभी राजो को भली-भाँति जानते हैं। मौसी 'महतो' गली की सब से बड़ी आयु वाली स्त्री है। उसका मुख ऐसा जैसे पीले रंग के सूत की अटियाँ बड़ी लापरवाही से नोच कर एक दूसरे में से उलझा दी हों। यह बुढ़िया भी, जिसको कम दिखाई देता है और कान जिनके सुनने से दूर रहते हैं, अर्थात् बहरे हैं, राजो से चिलम भरवा कर, उसके विषय में अपनी बहू सैंया से, जो कोई भी उसके पास हो, कहा करती थी—"इस छोकरी को घर में अधिक मत आने-जाने दिया करो, वरना किसी दिन अपने प्यारे खसमों से हाथ धो बैठोगी"···यह कहते समय बुढ़िया का बीता हुआ यौवन उसके मुख की झुरियों में जवानी की याद ताजा कर देता था।

राजो की अनुपस्थिति में सब इसको बुरा ही कहते थे। इस प्रकार के पाप के लिये खुदा से पश्चाताप करते थे, अर्थात् क्षमा माँगते थे, ताकि आगे चलकर उनसे कहीं मिल जाए। स्त्रियाँ जब राजो के विषय में बात करती थीं तो अपने आप उच्च चरित्र वाली स्त्री समझती थीं और मन ही मन में यह विचार कर अभिमान का अनुभव करती थीं कि उसके दम से ही चरित्र की रक्षा हो रही है।

सब राजो को बुरा समझते थे; किन्तु आश्चर्यजनक बात है कि उसके सम्मुख किसी ने भी घृणा प्रकट नहीं की थी! इसके अतिरिक्त बड़े प्रेम और आदर सहित उससे बातें करते थे। शायद इसका कारण वही नाम-नहाद चरित्र की चर्चा हो; परन्तु इस भले व्यवहार में राजो की खिलखिलाहट और दूसरों को प्रसन्न-चित करने वालों का भी कुछ अधिकार था। सौदागर के घर से काम-काज से छुट्टी पाकर जब किसी पड़ोसी के यहाँ जाती भी तो वहाँ भी बेकार बैठकर बातें न बनाती थी। कभी किसी बच्चे का पोतड़ा बदल दिया, कभी किसी का चुटिया

गूंथ दीं, कभी किसी के सिर से जुएँ निकाल दीं, मुट्ठी-चापी कर दी, वास्तव में वह बेकार कहीं भी नहीं बैठ सकती थी। उसके मोटे-मोटे हाथों में बला की तेजी थी। उसका हृदय जैसा कि प्रतीत होता है, हर समय इस खोज में रहता कि किसी को प्रसन्न करने का ढंग निकाला जाए।

राजो दूसरों को प्रसन्न करने में कई-कई घण्टे व्यतीत कर देती थी; किन्तु कृतज्ञता और धन्यवाद के शब्द सुनने के हेतु वह एक क्षण भी न ठहरती थी। मौसी 'महतो' की चिलम भरी, सलाम किया और चल दी, मुनसफ साहब को बाजर से फालूदा लाकर दिया, उनके बच्चे को थोड़ी देर गोद में खिलाया और चली गई। गुलाम मुहम्मद नेचागर की बूढ़ी दादी की पिंडलियां थपकीं और उसका आशीर्वाद लिए बिना ही चल दी।

यह गठिये की मारी बुढ़िया, जो अपने जीवन में ऐसी मंजिल पर पहुँच गई थी, जहां उसका नाम होने या न होने के समान था। गुलाम मुहम्मद उसे बेकार हुक्के के नेचे के समान समझता था। राजो के हाथों वह एक अद्भुत प्रसन्नता का अनुभव करती थी। इसकी अपनी बेटियां उसके पांव दबाती थीं; किन्तु उसकी मुट्ठियों में वह रस नहीं था, जो "राजो" के हाथों में था। जब राजो उसकी पिंडलियां दबाती तो उसे देवता मानती; किन्तु उसके चले जाने के पश्चात् ही कहा करती—"हरामजादी ने इस प्रकार पांव दबा-दबाकर उन सौदागर बच्चों को फांसा होगा?"

विचारों से अथाह समुद्र की लहरें सैय्यद को न मालूम कहां से कहां तक ले गई—एक दम! वह चौंक पड़ा और सुराख पर आंख रखकर उसने फिर बाहर की ओर देखा। बिजली की चमक गली में ठिठुर रही थी। रात के सन्नाटे की गुनगुनाहट सुनाई दे रही थी, परन्तु राजो वहां न थी।

उसने खिड़की को खोला और बाहर झाँककर देखा । इस किनारे से उस किनारे तक रात की ठन्डी हवा चल रही थी । ऐसा दीख पड़ता था कि बिजली के उस खम्बे तले कभी कोई खड़ा ही न था ! सफेद रोशनी में अद्भुत सन्नाटा मिला हुआ था । उसका दिल भर आया, उस का जीवन और अफीम खाने वाले व्यक्ति के मुख की आकृति गली से कितनी मिलती जुलती है ?

सैय्यद ने खिड़की के द्वार बन्द कर दिये और सोने के विचार से उसने रजाई अपने ऊपर डाली तो एक बार फिर ठण्डक उसकी हड्डियों तक पहुँचने लगी ।

३

***

नया साल धूप सेंक रहा था। सैय्यद अभी तक बिस्तर में ही पड़ा था, केवल लेटा ही नहीं, अपितु गहरी नींद सो रहा था। वह रात-भर जागता रहा, सात बजे लगभग उसकी आँखें लगी थीं। यही कारण है कि बारह बजने पर भी उसने जागने का नाम न लिया था।

सिराहने लगे घंटे ने भी बारह बार टन-टन की; किन्तु धातु की ध्वनि के स्थान पर उसके कानों ने राजो की आवाज सुनी, जैसे बड़ी दूर से आ रही हो। वह घबड़ा उठा और इस प्रकार जागने के हेतु वह ऐसा

ग्रनुभव करने लगा, मानो बस घबड़ा कर उठा हो। उसके रेशमी पाजामे ने फिसल कर उसकी क्षमता का परिचय दे ही दिया, ग्रौर इसकी हल्की-फुलकी निद्रा ने ग्राँखें खोलीं। उसकी बौखलाहट में ग्रौर भी वृद्धि हुई, जब उसने राजो को ग्रपने सामने खड़े देखा···एक दम उसकी नजरें खिड़की की ग्रोर उठीं, राजो की ग्रोर मुड़ीं ग्रौर वहाँ से दरवाजे की ग्रोर घूमीं। फिर फैलकर ग्रन्त में राजो पर जम गईं। राजो ने घड़ी की ग्रोर देखा, ग्रौर कहा—"मियाँ जी ! बारह बज गये हैं। माँ जी, ग्रापको बुलाती हैं, चाय तैयार है।"

यह कहकर राजो ने घड़ी में चाबी देना शुरू कर दिया, इसके पश्चात् उसने तिपाई पर से पानी का गिलास उठाया उठाया ग्रौर चल दी।

इसका मतलब क्या है···? क्या राजो सौदागरों के यहाँ से नौकरी छोड़ कर यहाँ ग्रा गई है। सैय्यद कुछ भी समझ नहीं पा रहा था कि क्या बात है ? उसकी माँ बहुत कोमल हृदय की है। वह जानती थी, राजो का चरित्र ठीक नहीं ; परन्तु इन सब बातों के बाद भी वह कुछ नहीं कहती थी। मन के विचार खुदा ही जानता है, चाहे हृदय में कुछ भी हो। सैय्यद ग्रन्त में इस निष्कर्ष पर पहुँचा कि इसकी माँ भी खुदातरसी है। खुदा तरसी इस हद तक इसके दिल पर छाई हुई थी कि वहकिसी को भी बुरा नहीं कह सकती थी। जब उसके जेवर का किसी व्यक्ति ने चोरी की तब वह कहा करती थी, बेचारे को जरूरत ने मजबूर किया होगा।

राजो की बुराइयां सुनकर इसने कई बार कहा था। किसी ने ग्रांख से तो इसकी बुराइयाँ देखी नहीं, क्या पता केवल बदनाम करने के लिए किसी ने इसे सोच रखा हो···ग्रल्लाह-ताला से हर समय डरना चाहिए, हम स्वयं ही बड़े भारी पापी हैं।

सैय्यद की माँ ग्रपने ग्राप को संसार की सबसे बड़ी गुनहगार स्त्री समझती थी। एक बार सैय्यद ने हँसी-हँसी में ग्रपनी माँ से कहा

था—"मां जी ! आप हर समय कहती रहती हैं, मैं गुनहगार हूं, मैं गुनहगार हूं, कहीं ऐसा न हो यम आपको सचमुच गुनहगार समझकर नरक में धकेल दें । हां यह तो बताओ उस समय भी आप यही कहेंगी, मैं गुनाहगार हूं, मैं गुनाहगार हूं ।"

उसकी मां पांच वक्त बिल-नागा नमाज पढ़ती थी, नियाज देती थी । मतलब यह है कि वह सभी बातें मानती थी, जो एक गुनहगार को माननी चाहियें ।

सैय्यद अधिक समय तक सोच-विचार में डूबकर इस परिणाम पर पहुँचा; क्योंकि मेरी मां नमाज पढ़ाना और रोजे रखना पसन्द करती है, इसी कारण वह अपने आपको गुनहगार समझती है और अब नमाज रोजे पढ़ने की आदी बन गई है, इसलिए हर समय गुनाह का विचार भी इसकी आदत में घुस चुका है ।

सैय्यद गुनाह और शवाब के चक्कर में अपने मस्तिष्क को फँसाने ही वाला था कि उसे राजो का विचार आया, जो अभी-अभी उसके कमरे से बाहर गई थी···दो बातें हो सकती हैं···या तो वह सौदागरों की नौकरी छोड़कर हमारे यहां चली आई है और मेरी मां ने जवानियों में एक और जवानी की वृद्धि करने के लिए उसे अपने पास रख लिया है, या फिर सौदागरों के ही पास है और वैसे ही इधर आ निकली है। जैसा कि इसकी आदत है, शीशे का गिलास उठाकर ले गई है, जो तिपाई पर व्यर्थ पड़ा इधर-उधर झांक रहा था; किन्तु रात वाली घटना···? उसने राजो के मुख पर जो इस घटना के बुझे हुए चिह्न देखने की चेष्टा की थी; परन्तु वह कोरी प्लेट के समान साफ थी ।

एक दिन सैय्यद का हृदय बिना किसी बात के घृणामय विचारों से लीन हो उठा ? उसे राजो से घृणा थी, वह अपने मस्तिष्क की

तख्ती पर सदा राजो की तस्वीर बनाया करता था। हमेशा इन मैले रंगों से जो इस राजो के जीवन में दीख पड़ते थे, उसके कोमल हृदय को धक्का-सा लगता, जब वह राजो को या सौदागर भाइयों को राजो के साथ बंधा हुआ देखता, गोश्त और छिछड़ों के रूप में। इससे पूर्व भी वह कई बार इस फैसले पर पहुँचता कि राजो से उसे घृणा है...वास्तव में वह चीज़ सैय्यद को बहुत ही दुखमय कर देती कि "राजो" को अपने आप से घृणा नहीं थी। वह अपने आप से बहुत खुश थी।

एक बार सैय्यद से इस प्रकार गलती हो गई थी। जो अधमता से भी अधिक बुरी थी; किन्तु जब इसके मस्तिष्क ने इसको फटकारा तो वह कई दिनों नहीं, कई महीनों तक अपने आप से पृथक रहा। इसका विचार था कि जिस प्रकार लोग बुरे कामों पर एक दूसरे को बुरी निगाहों से देखते हैं या वैसा बुरा उनसे व्यवहार करते हैं। इसी प्रकार ऐसे मौकों पर वह अपने आप से ऐसा बर्ताव करते हैं; किन्तु राजो या तो अपने आप से बेखबर थी या इसके अन्दर वह मस्तिष्क न था, जो तराज़ू का काम दे सके।

इस युवती के विषय में सैय्यद ने इतना अधिक सोचा कि अब केवल विचार पर ही गुस्सा आने लगा। वह इसके विषय में सोचना नहीं चाहता था, इसलिए कि इसमें कोई आकर्षण शक्ति न थी, जिस पर कुछ विचार किया जा सकता। वह अधम थी, सैय्यद उठ खड़ा हुआ, इस ढंग से राजो को अपने मस्तिष्क से झटका—जैसे किसी घोड़े ने अपने शरीर से एक ही झर-झरी में सारी मक्खियाँ उड़ा दी हों, इसने सारी रात जागते हुए भी स्वयं को स्वयं अनुभव किया हो।

भास्कर अपनी किरणें फैलाता हुआ, खिड़कियों, दरवाजों में फँस-फँस कर कमरे में पहुंचा और प्रकाश कर रहा था। जो बनावटी प्रतीत होता था। उसने खिड़कियाँ नहीं खोलीं और तिपाई के समीप आराम कुर्सी

पर बैठ गया। अभी वह कुर्सी पर पूर्णतया पांव न फैला पाया था कि राजो ने कमरे में प्रवेश किया। बिना कहे या सुने, उसने एक-एक करके सभी खिड़कियां खोलीं और झाड़ पोंछ कर दी। सैय्यद इसके नटखटपन को ध्यान पूर्वक देखता रहा। राजो के मोटे-मोटे हाथों की मोटी-मोटी कलाइयों में जरा भी आकर्षण शक्ति न थी···शीशे के फूलदान को ऐसे ढंग से, इस अदा से साफ किया, जिस तरह लोहे के कलमदान को साफ किया जाता है। झाड़न द्वारा इसने तस्वीरें जिन पर गर्द ने अपना पूर्ण अधिकार जमा रखा था, साफ कीं, कार्नस पर रखी सभी वस्तुओं को एक-एक करके उसने साफ किया, इस ढंग से जिसमें आहट न हो। जब वह बातें करती तो ऐसा प्रतीत होता कि इसकी आवाज रूई के नरम-नरम गालों में लिपटी हुई हो। कान के पर्दे इसकी आवाज से न टकरा पाते थे ; केवल बाहर ही छूकर वापस आ जाती थी। इसकी प्रत्येक आवाज और अन्दाज ने रबड़-सोल जूते पहन रखे थे। सैय्यद इसे देखता रहा···नहीं उसे सुनने की चेष्ठा करता रहा।

राजो ने नीलगगन के समान रंग की ऊनी कमीज पहन रखी थी, जो कुहनियों पर से फटा हुआ था। वह कमीज शायद सौदागरों के सब से बड़े बच्चे ने दिया हो। इसके ऊपर गरम स्वेटर पहन रखा था, जिस पर जगह-जगह मैल के गोल-गोल निशान दीख रहे थे। खादी की शलवार अधिक प्रयोग के कारण सलवार के रूप में नहीं दीख पड़ती थी, यह प्रतीत होता था कि इसने अपनी टांगों में चादर लिपटा रखी हो। अधिक समय तक ध्यान-पूर्वक देखने के पश्चात् इस शलवार के पेंचें दीख पड़ते थे, जो इतने खुले थे कि पांव बिल्कुल छुप जाने के कारण नहीं दिखाई देते थे।

सैय्यद इसके पहूँचों की ओर देखता रहा कि राजो मुड़ी, यह कह कर अपने काम में लग गई—"आपकी चाय तैयार है, मां जी आपको

राह देख रही हैं।''

सैय्यद का मन नहीं चाहता था कि इससे बात भी की जाये; किन्तु जाने क्यों उसने पूछ लिया—''चाय बनाने के लिये, उससे किसने कहा था ?''

राजो ने पलटकर आश्चर्यजनक दृष्टि से उसकी ओर देखा। ''आपने···अभी-अभी तो आपने कहा था, हाँ ! तैयार की जाये···'' सैय्यद कुर्सी पर से उठ खड़ा हुआ, बगैर किसी झकझक के, उसने कभी ऐसा नहीं कहा था। ''प्रातः की चाय साढ़े बारह बजे कौन पीता है ? अब नाश्ता करूँगा तो दोपहर का खाना शाम को खाऊँगा···और रात का खाना···राजो हँस पड़ी—''रात का खाना प्रातः को।''

सैय्यद एक दम संजीदा हो गया और बोला—''इसमें हँसने की कौन सी बात है ? जाओ माँ जी से कह दो, मैं चाय नहीं पीऊँगा, भोजन करूँगा···भोजन तैयार है क्या ?''

राजो अपने मुख पर से हँसी के उन चिन्हों को मिटाने की चेष्टा करते हुए भी न मिटा सकी। इसकी मुखाकृति इस प्रकार की थी, मानो ठंडे पानी में रंग घोल कर ऊनी वस्त्रों पर चढ़ाया जाये और वह न चढ़े। इसने धीरे से उत्तर दिया—''जी भोजन तैयार है···मैं अभी-अभी माँ जी से कहे देती हूँ कि आप चाय नहीं, भोजन करेंगे।'' यह कह कर वह जल्दी से दरवाजे की ओर बढ़ी।

''देखो''—सैय्यद ने उसे टोक कर कहा—''माँ जी से कहना कि मैं चाय नहीं पीऊँगा, भोजन करूँगा···'' मैं सारी रात जागता रहा हूँ। समझ में नहीं आता मेरी नींद को क्या हो गया था ? मुहल्ले में शोर हो तो मुझे बिल्कुल भी नींद नहीं आती, रात बाहर, खुदा ही जानता है क्या गड़बड़ हो रही थी ?···हाँ तो मैं और कुछ न लेकर केवल एक कप चाय ही लूँगा और उसके बाद भोजन करूँगा, अर्थात् नियम-पूर्वक

समय पर···माँ जी कहाँ हैं ? मैं स्वयं पता कर लूँगा···किन्तु तुम··· तुम यह क्या कर रही हो, मेरा आशय है कि मेरे कमरे की सफाई करने को किसने कहा है, यानी तुम यहां कैसे आई हो ?

एक ही साँस में सैय्यद सारी बातें कह गया और चोर नजरों से उसके मुख की ओर निहारता रहा। लाली की रेखा का मध्यम-सा उसे दीख पड़ा था। जब बाहर गली में गड़बड़ की ओर संकेत किया था ; परन्तु इसके पश्चात् इसके मुख-मण्डल में कोई परिवर्तन न देख सका, किन्तु हँसी ने इसके मुख पर जो फैलाव पैदा कर दिया था, वह अभी तक इसके साथ घटी घटनाएँ देख रहा था।

राजो ने कोई उत्तर न दिया और कमरे से बाहर चली गई, जैसे इससे कुछ पूछा ही न हो। इस पर सैय्यद को बहुत गुस्सा आया, इसमें सन्देह नहीं कि मैंने कुछ पूछने के लिए इससे बातें नहीं की, किन्तु बिना विचार के वैसे ही कहता चला गया, जिनका कोई सम्बन्ध नहीं था ? परन्तु मेरी इच्छा थी, इच्छा क्या मुझे पूर्णतया विश्वास था कि वह घबरायेगी और रात की घटना उसके मुख से फूट निकलेगी ; परन्तु वह स्त्री है या···या क्या है ?

सैय्यद इसकी बाबत विचार नहीं करना चाहता था; किन्तु कोई न कोई बात ऐसे आकर सामने खड़ी हो जाती कि इसे फिर सोच-विचार करना पड़ जाता था। यह स्त्री उसके जीवन में अनायास दाखिल होती चली आ रही थी। यह दाखिला सैय्यद को अच्छा न लगा, अतः उसने निश्चय कर लिया कि वह इसे अपने घर में न रहने देगा।

जब वह अपनी माता से रसोई-घर में मिला, तब वह राजो के विषय में कुछ पूछना चाहता हुआ भी न पूछ सका। उसकी माँ ने जो उसे बहुत ही प्यार करती थी चाय का प्याला बना कर कहा—"बेटा रात तेरे दुश्मनों को क्यों नींद नहीं आई ? मुझे राजो ने अभी कहा है कि

गली में कुछ गड़-बड़ थी। इस कारण तू सो न सका—मैंने तो कुछ भी नहीं सुना...मैं कहती हूँ! यदि तुम मेरे वाले कमरे में सोया करो तो क्या हर्ज है? मेरी भी घबराहट दूर हो जायेगी—ले बाबा मैं कुछ नहीं कहती जहाँ चाहे सो जाया कर, अल्लाह तेरी देख-भाल करेगा... ले चाय पी...मैं तुझ से कुछ नहीं कहती... ।"

वास्तव में सैय्यद राजो के विषय में कुछ कहना चाहता था, किन्तु इसकी माँ ने समझा कि वह यही कहेगा, मां जी! आप तो वैसे ही घबराया करती हैं। मैं अकेला ही सोने का आदी हूँ। किन्तु वह चुप हो रहा। उधर उसकी माँ ने उसकी हठ पर अधिक वाद-विवाद न किया। राजो चूल्हे के समीप शान्त चित्त बैठी सब कुछ देखती रही।

४

***

सैय्यद के घर राजो को नौकरी करते एक महीना बीत गया ; परन्तु इस एक महीने के लम्बे समय में भी वह माँ से कुछ न कह सका, वह कहना चाहता था कि राजो को निकाल दो। अब साल के दूसरे महीने का प्रारम्भ था। सर्दी धीरे-धीरे ताप में ढल कर, निराला रूप धारण कर रही थी। दिन और रात, वसन्त की प्रभात, मीठे-मीठे गीत, मीठी-मीठी सौगन्ध, मन को मोह लेती है। पंजाब में यह महीना बहुत ही अच्छा माना जाता है। सवेरे जब वह सैर को जाता तो हल्की-फुल्की खुश्क वायु का सेवन काफी देर तक करता रहता—उसे प्रत्येक वस्तु सुन्दर दीख पड़ती।

इन्हीं दिनों की बात है कि एक दिन वह कम्पनी बाग से सवेरे सैर से वापिस घर आया, तो उसे अपना शरीर गर्म-सा महसूस हुआ। बिस्तर पर लेटते ही ज्वर हो गया। उसके पुराने मित्र ने भी अपना करिश्मा दिखाया, यानी जुकाम भी बड़े जोर से हो गया और उसकी नाक बेजार-सी हो गई। दूसरे दिन खाँसी भी आ गई और तीसरे दिन छाती में दर्द और धीरे-धीरे बुखार १०५ दरजे तक पहुँच गया। उसकी माँ ने पहले दिन ही डाक्टर को बुलाया था; परन्तु उनकी दवाई से कुछ लाभ न हुआ।

आश्चर्यजनक बात है, जब सैय्यद को बुखार अधिक चढ़ जाता तो उसका दिमाग थोड़ा तेज हो जाता। ऐसी-ऐसी बातें उसके दिमाग में आतीं, जो वह वैसे कभी न सोच पाता था। विचार की शक्ति इतनी तेज हो जाती कि शरीर में बेचैनी पैदा कर देती कि वह घबड़ा उठता, उसके हृदय पर नये-चक्कर की रेखाएँ अंकित हो जातीं जब उसे अधिक बुखार चढ़ता, जिनका विचार वह मामूली अवस्था से न कर पाता था। वह अनुभव करता कि उसके सभी विचार सान पर लग कर नोकीले और तेज हो गये हैं।

बुखार की अवस्था में वह संसार की सभी समस्याओं पर विचार करता, एक नई रोशनी में नए अनोखे अन्दाज में वह संसार की बुरी में बुरी वस्तु पर विचार करता, चिट्ठियों को उठाकर नील गगन पर नन्हें-नन्हें इन चमकते हुए सितारों के साथ चिपटा देता और उन सितारों को तोड़ पृथ्वी पर फेंक देता।

बुखार १०५ डिग्री से कुछ बढ़ा, तब सैय्यद के दिमाग का इतिहास पृष्ठ उलटने लगा। क्षण-भर में सैंकड़ों नहीं, हजारों पृष्ठ उल्टे और प्रसिद्ध-प्रसिद्ध घटनाएँ ऊपर-तले खट-खट करते, उसके दिमाग में से

होते हुए निकल गईं। बुखार कुछ और बढ़ा, तो पानीपत का युद्ध, ताजमहल के श्वेत भवन में लोप हो गया, तब कुतुब साहब की लाट कटी हुई भुजा के समान बन गई और धीरे-धीरे चारों ओर धुन्धलाहट ही धुन्धलाहट छा गई।

एकदम जोर का धमाका हुआ और धुन्धलाहट में से महमूद गजनवी बड़ी तेजी के साथ घोड़े पर चढ़ा हुआ अपनी सेना के साथ प्रकट हुआ और महमूद गजनवी का घोड़ा सोमनाथ के जगमग-जगमग करते मन्दिर के स्वर्णमय द्वार पर जा रुका। महमूद गजनवी ने उन टूटे हुए हीरों और मोतियों के ढेर को देखा और आँखें तमतमा उठीं, फिर उसने सोने की बनी हुई उस मूर्ति को निहारा तब उसका हृदय धड़कने लगा—राजो...महमूद गजनवी ने सोचा यह साली राजो कहाँ से टपक पड़ी उसके राज्य में? उस नाम की कौन स्त्री है, क्या वह इसे जानता है...क्या वह इससे प्यार करता है...प्यार का विचार आते ही महमूद गजनवी ने जोर का ठहाका मारा ...महमूद गजनवी और प्यार! ...महमूद गजनवी को अपने बनाए हुए गुलाम से प्यार है ...और फिर इस नौकर राजो से कैसे हो सकता है?

महमूद गजनवी ने उस स्वर्ण मूर्ति पर चोट पर चोट लगानी शुरू कर दी। चोट जब पेट पर लगी, तब यह फ़ट गया और इसमें से शाहबुद्दीन की खीर और फालुदा निकलने लगा। महमूद गजनवी ने देखा तो हथोड़ा उठाकर अपने सिर पर दे मारा।

सैय्यद का सिर फट रहा था। महमूद गजनवी के सिर जो हथोड़ा पड़ा था, उसका धमाका उसके सिर पर गूंज रहा था। जब उसने करवट ली तो छाती में कोई ठण्डी-ठण्डी वस्तु के रेंगने का अनुभव हुआ...सोमनाथ और स्वर्णमयी मूर्ति उसके दिमाग से निकल गई। धीरे-धीरे उसने भट्टी के अंगारों के सामने चलती हुई अपनी आँखें खोलीं

...राजो फर्श पर बैठी पानी में भिगो-भिगो कर कपड़े की गद्दियाँ उसके माथे पर रख रही थी।

जब राजो ने माथे पर से कपड़ा उतारने का प्रयत्न किया तब सैय्यद ने उसका हाथ पकड़ लिया और हृदय पर रखकर धीरे-धीरे प्यार से अपने हाथ द्वारा उन हाथों को प्यार करने लगा। उसकी लाल-लाल आँखें दो अंगारे बनकर देर तक राजो की ओर देखती रहीं। राजो उसकी आंखों का सामना न कर सकी और अपने हाथ छुड़ा कर काम में लग गई।

इसके बाद वह बिस्तर से उठकर बैठकर गया और कहने लगा—"राजो.. राजो...इधर मेरी ओर देखो। महमूद कजनवी...इसका मस्तिष्क अशान्त होने वाला ही था कि उसने अपने को संभालते हुए, महमूद गजनवी के विचार को झटक कर पुनःकहा—"इधर मेरी ओर देखो! जानती हो, मैं तुम्हारे प्यार में बँधा हुआ हूँ, बहुत बुरी तरह से तुम्हारे प्यार में फँसा हुआ हूँ। उसी प्रकार फँस गया हूँ, मानो कोई दलदल में फँस गया हो...मैं जानता हूँ कि तुम प्यार के लायक नहीं हो; किन्तु मैं सब कुछ जानते हुए भी तुम से प्यार करता हूँ। धिक्कार है मुझ पर...अच्छा छोड़ो इन बातों को—इधर मेरी ओर देखो। खुदा के लिये मुझे तंग न करो, मैं बुखार में इतना नहीं जल रहा राजो—राजो मैं—मैं—" उसकी विचार श्रृंखला टूट गई और उसने 'मुकुन्द लाल भाटिया' के कुनीन के नुस्से पर वाद-विवाद शुरू कर दिया।

"डा० भाटिया, मैं आपको कैसे समझाऊँ, यह कुनीन बहुत नुक-सान देने वाली वस्तु है। मैं मानता हूँ कुछ समय के लिये मलेरिया के कीटाणुओं को मार देती है; किन्तु प्राकृतिक रूप में बीमारी दूर नहीं

कर सकती । इसके अलावा इसका प्रभाव बहुत ही खुश्क और गरम है, इसी कारण मेरे कान बन्द हो गए हैं और मेरा दिमाग भी बन्द हो गया है। मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि किसी ने मेरे कानों और दिमाग में स्याही-चूस ठोंस दिए हों। मैं अब जरा भी कुनीन नहीं खाऊँगा और गजनवी के बुत के समान सोमनाथ...राजो...तुम सोमनाथ नहीं जानोगी...मेरे माथे पर हाथ रखो...आह...आह...यह क्या बदतमीजी है, मैं...मैं...मेरे दिमाग में अनगिनत विचार उठ रहे हैं। मां जी आप क्यों हैरान हो रही हैं, मुझे राजो से प्यार है, हां ! हां ! इस राजो से, जो सौदागरों के यहां नौकर थी और जो अब आपके पास नौकरी कर रही है। आप नहीं जानती, इसने मुझे कितना जलील बना दिया है ? इसलिए मैं इसके प्यार में फँसा हुआ हूँ। यह प्यार नहीं, हीजड़ापन है—दुख हीजडे से भी बढ़कर है और इसका इलाज नहीं है। मुझे इन मुसीबतों को सहन करना पड़ेगा और सारी गली का कूड़ा अपने सिर पर उठाना होगा, गन्दी नाली में हाथ डालने होंगे, यह सब कुछ होकर रहेगा—यह सब कुछ होकर रहेगा।" धीरे-धीरे सैय्यद का स्वर बैठता गया और बेहोशी के चिह्न दीखने लगे। उसकी आंखें गीली थीं ; किन्तु फिर भी ऐसा अनुभव होता था कि पलकों पर बोझ सा आ पड़ा है। राजो पलंग के समीप उसकी बे-जोड़ ध्वनि को सुनती रही; परन्तु उस पर इन बातों का कुछ भी प्रभाव न पड़ सका...क्योंकि वह इस प्रकार के बहुत से रोगियों की सेवा कर चुकी थी।

बुखार की हालत में जब उसने अपने प्यार का चिट्ठा राजो को सुनाया, तो राजो ने क्या अनुभव किया ? इसके विषय में कुछ भी नहीं कहा जा सकता। इसलिए कि उसका गोश्त से भरा हुआ चेहरा विचारों से बिल्कुल खाली था। हो सकता है कि उसके हृदय के

किसी हिस्से में थोड़ी बहुत सरसराहट पैदा हुई हो; किन्तु मोटे माँस की जिल्द की तह से निकल कर बाहर न आई हो, या न न आ सकी।

इसने रूमाल निचोड़ा और ताजे पानी में भिगोकर उसके माथे पर रखने के लिए उठी। अब की बार उसे इस कारण से उठना पड़ा कि सैय्यद ने करवट बदल ली थी। अब इसने सैय्यद का सिर धीरे से इधर मोड़ कर माथे पर भीगा हुआ रूमाल रख दिया। अचानक ही सैय्यद की आंखें जो अर्द्ध नींद के पर्दे में पड़ी हुई थी, ऐसी खुलीं जिस प्रकार लाल-लाल जख्मों के मुँह टांके उधड़ जाने पर खुल जाते हैं। उसने क्षण भर के लिए राजो के झुके हुए मुख की ओर देखा, जिस पर कपोल थोड़े से नीचे की ओर लुढ़क आये थे। एक दम उसने राजो को अपनी भुजाओं में जकड़ कर इतने जोर से सीने के साथ लगाया कि उसकी रीढ़ की हड्डी कड़-कड़ बोल उठी। उठकर उसने राजो को अपनी रानों पर लिटा लिया और इसके मोटे-मोटे गुद-गुदे अधरों पर इतने जोर से अपने तपते हुए अधरों को रखा जैसे वह गरम-गरम लोहे से इसे दाग़ देना चाहता हो...?

सैय्यद की भुजाओं में वह इस ढंग से फँसी हुई थी कि लाख प्रयत्न करने पर भी अपने को स्वतंत्र न करा सकी। सैय्यद के अधर देर तक इसके अधरों से प्रेम करते रहे और फिर एक ही झटके में हाँपते हाँपते उसने इसको अपने से दूर कर दिया और उठकर ऐसे बैठ गया मानो उसने कोई बुरा स्वप्न देखा हो? राजो एक ओर सिमट गई, वह डर गई थी। उसने पेपड़ी-जमे अधर फड़क रहे थे।

राजो ने तेज निगाहों से देखा, तब वह इस पर बरस पड़ा और कहने लगा—"तुम यहाँ क्या कर रही हो, जाओ! जाओ!" यह कहते-कहते सैय्यद ने अपने सिर को दोनों हाथों से थाम लिया, मानो वह

गिरने लगा हो। इसके बाद वह लेट गया और धीरे-धीरे बड़बड़ाने लगा—राजो...मुझे माफ कर दो, मुझे माफ़ कर दो, मुझे कुछ भी मालूम नहीं, मैं क्या कर रहा हूँ या कह रहा हूं, बस केवल एक बात ही जानता हूँ कि मुझे पागल-पन की हद से भी अधिक तुम से प्यार है...ओह मेरे अल्लाह...हाँ, मुझे तुम से प्यार है, इसलिये नहीं कि तुम प्यार करने योग्य हो, इसलिये नहीं कि तुम मुझ से प्यार करती हो...फिर किस लिये...काश ! मैं इसका उत्तर देने योग्य होता। मैं तुमसे प्यार करता हूँ, इसलिये कि तुम घृणा के लायक हो, तुम स्त्री नहीं हो। एक समूचे स्त्री की एक बहुत बड़ी बिल्डिंग हो, परन्तु मुझे तुम्हारे सभी कमरों से प्यार है। इस कारण कि वे अस्त-व्यस्त हैं, गन्दे हैं...मुझे तुमसे प्यार है। क्या यह अनोखी बात नहीं। यह कह कर सैय्यद मुस्कराने लगा।

राजो चुप थी, उस पर अभी तक सैय्यद की जकड़न और भयंकर चुम्बन का प्रभाव था। वह उठकर कमरे से बाहर जाने का विचार कर रही थी कि सैय्यद ने फिर उसी प्रकार बड़बड़ाना शुरू कर दिया। राजो ने उसकी ओर धड़कते हुए दिल से देखा। उसकी आँखें गीली थीं। वह निष्पक्ष व्यक्ति से बातें कर रहा था। तुम जालिम हो, मनुष्य नहीं दानव हो, मान लिया कि वह भी तुम्हारी तरह जंगली है; परन्तु फिर भी स्त्री है। स्त्री यदि टुकड़े-टुकड़े भी हो जावे तब भी स्त्री हीं कहलायेगी। भैंस और स्त्री में तम कोई अन्तर नहीं समझते, किन्तु खुदा के लिये जाओ और इसे अन्दर ले आओ। बाहर शीत में बिना कपड़ों के इसका सारा खून जम गया होगा। में पूछता हूँ उसके साथ तुम्हारी लड़ाई किस बात पर हुई...खम्बे के नीचे केवल तुम बनियान डाले खड़ी थीं और तुम...तुम...लानत हो तुम पर... तुम समझते क्यों नहीं राजो स्त्री है...पशमीने का थान नहीं, जिसे तुम

चर्ख चढ़ाते रहो !

पहली बार राजो को मालूम हुआ कि उस रात वाले मामले को माँ जी का लड़का भी जानता है। इस कारण वह अधिक घबराई कि लोग इसके और सौदागर भाइयों के विषय में तरह-तरह की बातें करते थे; परन्तु वह जानती थी कि किसी ने भी इसको अपनी आँखों से नहीं देखा, इस कारण वह भयभीत न हुई थी, लेकिन अब इसके समक्ष इस विषय में आज तक इसने नहीं सोचा था, वह केवल इतना ही जानती थी कि स्वर्गीय मियाँ गुलाम रसूल का लड़का किसी से अधिक बातें नहीं करता और सारा-सारा दिन बैठक में मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ता रहता है और वैसे गली के दूसरे लड़कों के विषय में तरह-तरह की बातें सुनती थी, किन्तु इसके विषय में केवल इतना ही सुना था कि बड़ा गरम मिजाज है और स्वर्गीय गुलाम रसूल से भी इसे अधिक अपने खानदानी होने का अभियान है। इसके अलावा वह कुछ न जानती थी; किन्तु आज उसे मालूम हुआ कि वह इसके विषय में सब कुछ जानता है और... और इससे प्यार भी करता है।

उसके प्यार का होना राजो के लिए दुखदाई न था; किन्तु उसकी वह बात वास्तव में इसे कष्ट पहुंचा रही थी कि उस रात जब वह गुस्से के कारण दीवानी हो रही थी, तब उसने सब कुछ देख लिया, यह शर्म की बात थी। अधिक सोच-विचार के बाद उसके हृदय में यह भाव उत्पन्न हुए कि मां जी का बड़ा लड़का वह सब कुछ भूल जाय और इसने यह कहना शुरु किया—"खुदा कसम !···अल्लाह कसम··· पीर दस्तगीर की कसम...यह सब कुछ झूठ है, मैं मस्जिद में कुरान उठाने के लिए तैयार हूं। जो कुछ आप समझते हैं, बिलकुल गलत है मैंने अपनी मरजी से उनकी नौकरी छोड़ दी है। वहाँ काम अधिक है, मैं दिन रात कैसे काम कर सकती हूँ ? चार नौकरों का काम मुझ अकेली से भला कैसे हो

सकता है, मियां जी ?"

सैय्यद बुखार के कारण बेहोश पड़ा था। राजो अपने विचार के अनुसार जब सब कुछ कह चुकी, तब उसके दिल का बोझ कुछ हल्का हुआ; लेकिन इसने सोचा—एक ही सांस में जितनी झूठी कसमें खाई हैं, शायद नाकाफी हों और इसने फिर कहा—मियाँ जी ! पाक परवरदिगार की कसम...मरते समय मुझे 'कलमा' नसीब न हो यदि मैं झूठ बोलूँ। यह सब झूठ है, मैं कोई ऐसी-वैसी थोड़े ही हूँ। मुझ से अधिक काम नहीं हो सकता। इसलिए मैंने उनको छोड़ दिया। इतनी बात का बतंगड़ बन जाए, तो इसमें मेरा क्या कसूर।"

यह कहने के बाद, मानो इसने अपना बोझा उतार दिया और पास के कमरे से बाहर चली जाती, तभी सैय्यद ने आँखें खोलीं और पानी माँगा। राजो ने जल्दी से उसके हाथ में पानी का गिलास दे दिया और पास ही खड़ी रही ताकि वापस लेकर तिपाई पर रख सके।

एक ही सांस में गिलास का गिलास पीने के बाद उसकी प्यास को थोड़ा बहुत सहारा मिला। खाली गिलास देकर राजो की ओर सिर उठाकर देखा। कुछ कहना चाहा; किन्तु चुप हो गया और तकिए पर सिर रखकर लेट गया।

अब वह होश में था। उसने बेतकुल्लफी के साथ राजो को पुकारा—"राजो !"

राजो ने धीरे से उत्तर दिया—"जी।"

"देखो ! माँ जी को यहाँ भेज दो।"

यह सुनकर राजो ने विचार किया कि वह रात की सारी बात माँ जी को सुनाना चाहता है। तभी राजो ने फिर कसमें खाना शुरू कर दिया—"मियाँ जी...कुरान मजीद की कसम, अल्लाह-पाक की कसम और कोई बात नहीं थी, मेरा उनसे केवल इसी बात पर झगड़ा

हुआ कि मैं मोल की या खरीद की नहीं आई हूँ, जो सारा दिन-रात काम करती रहूँ...आपने मेरे मुंह से इसके अलावा और क्या सुना था ?"

विस्तर पर सैय्यद ने कठिनता से करवट बदली। ठंडे पानी ने उसके सारे शरीर में कंपकंपाहट सी दौड़ा दी। राजो की ओर आश्चर्यजनक दृष्टि से देखा और पूछा—"क्या कह रही हो तुम ?" फिर क्षण भर में ही, उसे जब ख्याल आया कि वेहोशी में इससे अनगिनत बातें कर चुका है और अपना प्यार भी इस पर प्रकट कर चुका है तो उसे अपने आप पर बहुत गुस्सा आया। मलेरिया के कारण उसके मुंह का स्वाद भी विगड़ा हुआ था, अब इस गलती के कारण ने उसके मुंह में अधिक कड़वाहट पैदा कर दी और उसको अपने आप से घृणा होने लगी।

मुझे राजो से बातें नहीं करनी चाहिए थीं, राजो पर अपना प्यार किसी भी अवस्था में प्रकट नहीं करना चाहिए था। इसलिए कि वह इसके योग्य ही नहीं। मैंने राजो को अपने हृदय के भाव नहीं वताए; अपितु अपने सारे शरीर को एक गन्दी-नाली में फेंक दिया है। इसमें कोई शक की वात नहीं, मैंने नीम-बेहोशी की अवस्था में यह गलती की, यदि मैं कोशिश करता, तो अपनी भावुकता को रोक सकता था। मुझमें इतनी क्षमता है; किन्तु खेद इस वात का है विचार पहले नहीं आया और इसी कारण अनाप-शनाप बकता रहा।

जं कुछ वह राजो से कह चुका था, उसके शब्द तो सैय्यद को याद नहीं थे; परन्तु वह सोच सकता था कि उसने इससे क्या कहा होगा ? वह इससे पूर्व विचारों के अथाह समुद्र में डूबकर राजो से कई बार बातें कर चुका था और वह लज्जा का अनुभव कर रहा था; परन्तु वह सचमुच इससे वातें कर चुका था और इस पर अपने प्यार को प्रकट किया था। दूसरे शब्दों में इसको वह भेद भी बता चुका था जिन से वह स्वयं भी दूर रहना चाहता था...यह सैय्यद के जीवन की

सबसे बड़ी धारणा थी ।

राजो उसके सन्मुख खड़ी थी । मलेरिया उस पर अपने वर्फीले हाथ फेर रहा था । एक ऐसी झुरझराहट उसकी रग व रेशे में कनखजूरे के समान रेंग रही थी और उसके हृदय में एक ऐसी तलखी उत्पन्न हो रही थी जो उसने इससे पूर्व कभी नहीं महसूस की थी । वह चाहता था कि उसे एकदम इतना बुखार चढ़े कि बेहोश हो जाए, ताकि जो कुछ हुआ है, उसका उसके हृदय से प्रभाव कुछ समय तक दूर हो जाए ।

बड़ी कठिनता से उसने स्वयं को राजो से यह कहने का साहस किया—"जाओ ! माँ जी को यहाँ भेज दो, मैं यहाँ मर रहा हूँ, कुछ मेरा भी तो ख्याल करें ।" इस पर राजो ने धीरे से कहा—"आप ही के लिए सौ नश्ल पढ़ रही हैं । मैं जाकर देखती हूँ खत्म हुए हैं या नहीं ।" "...जाओ...खुदा के लिए जाओ..." यह कहकर सैय्यद ने रजाई अपने ऊपर डाल ली और अधिक ठंडक होने के कारण जो मलेरिया के ताजे हमले का चिन्ह था, जोर-जोर से काँपना शुरू कर दिया ।

राजो कमरे से बाहर चली गई ।

५

***

क्योंकि सर्दी अधिक थी इसलिए ठीक देख-भाल न होने के कारण सैय्यद को निमोनिया हो गया। उसकी हालत ज्यादा खराब हो गई। उसकी मां बेचारी क्या कर सकती थी ? दिन-रात दुआ मांगने में लीन रहती या अपने बेटे के पास बैठी रहती थी। राजो ने भी सेवा करने में कोई कसर नहीं उठा रखी थी; किन्तु स्वस्थ होने के स्थान पर उलटा रोगी अधिक अस्वस्थ होने लगा। सैय्यद के मन में कई बार आया कि मां से स्पष्ट शब्दों में कह दे कि राजो का यहां रहना अच्छा

नहीं लगता; परन्तु प्रयत्न करने पर भी वह न कह सका । इस अवस्था में वह जो कुछ भी अनुभव कर रहा था, उस के कारण भावनाओं में और वृद्धि हुई ।

डा० मुकन्दलाल भाटिया ने यह सुझाव रखा था कि उसे जल्दी से जल्दी हस्पताल में दाखिल करवा दिया जाये, तो ठीक रहेगा । वहाँ रोगी की देख-भाल भी ठीक प्रकार से हो सकेगी और दवा-दारू भी समय पर मिलती रहेगी, इसके अलावा समय कुसमय अच्छा डाक्टर भी मिल सकेगा; किन्तु उसकी मां ने न मानी; क्योंकि हस्पताल के नाम से उसे घृणा थी; परन्तु जब उसके लाडले बेटे ने हस्पताल में दाखिल होने का निश्चय किया, तब हृदय पर पत्थर रखकर चुप हो रही; क्योंकि आज-तक उसने अपने बेटे की कोई भी बात नहीं ठुकराई थी ? अतःनिमोनिया होने के दूसरे दिन ही डा० मुकन्द लाल भाटिया बड़ी हिफाजत से सिविल हस्पताल में ले गये और वहाँ सुविधाजनक वार्ड मेंदाखिल करवा दिया ।

हस्पताल में सैय्यद कुछ ही दिनों में स्वस्थ हो गया । निमोनिया का हमला बड़ा भारी था, फिर भी वह बच गया और बुखार आदि सभी दूर हो गये । हस्पताल के कमरे में; जिसकी प्रत्येक वस्तु सफेद थी उसकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हुई, चूँकि राजो वहाँ न थी, इस कारण उसके हृदय पर जो बोझ-सा आ पड़ा था, बहुत हद तक दूर हो गया और वह पूर्ण स्वस्थ होने की प्रतीक्षा बड़ी बेचैनी से करने लगा; लेकिन यह निश्चित था, वह घर में नहीं रहेगा, जहाँ राजो रहेगी । वह इस स्त्री का रहना सहन नहीं कर सकता था । उसको देखते ही उसके मन में खलबली मच जाती थी । इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं कि वह उसके प्रेम में बुरी तरह गिरफ्तार हो गया था; किन्तु वह उसके प्रेम

को सदा के लिए समाप्त कर देना चाहता था।

मालूम था कि यह काम बहुत कठिन है; परन्तु वह इस कार्य में पूर्ण-रूप से सफलता प्राप्त करने के लिये चेष्टा कर रहा था और उसने इस बीच में स्वयं को धीरे-धीरे इस बात का विश्वास भी दिलाया था कि राजो को भूल कर, वह ऐसे काम करेगा; जिन्हें आज तक कोई भी न कर सका हो।

हस्पताल में दाखिल होने के आठ दिन बाद, अधिक कमजोरी होते हुए भी सैय्यद अपने आपको बहुत स्वस्थ ससझने लगा। सवेरे जब सफेद-पोश नर्स ने उसके बुखार को थर्मामीटर द्वारा देखा, तब सैय्यद ने मुस्करा कर कहा—"नर्स ! मैं तुम्हारा आभारी हूँ, तुमने मेरी बहुत सेवा की है। काश ! मैं इसका इनाम तुम्हें प्रेम के रूप में दे सकता।" एंग्लो इंडियन नर्स के अधरों पर पतली सी मुस्कराहट फैल गई, आँखों की पुतलियों को मिचाकर, उसने कहा—"तो क्यों नहीं करता, करो ?"

उसने बगल से थर्मामीटर निकालकर नर्स को दिया और उत्तर में कहा—"मैं हृदय के द्वार सदा के लिए बन्द कर चुका हूँ, तुमने इस समय खटखटाया है जब घर का मालिक हमेशा के लिए सो गया है। फिर भी मुझे खेद है, कि तुम इस योग्य हो कि तुम से आईडोफार्म की तेज बू समेत प्यार किया जाये, लेकिन इट् इज टू लेट माई डियर।"

नर्स हँस पड़ी और ऐसा लगा कि हार का धागा टूटने के कारण मोती इधर-उधर बिखर गये हैं। इस दाँत बहुत सफेद और चमकीले थे—सैय्यद नर्सों की कमजोरी का जानकार था। इसलिए उसने बड़े मजे के साथ कहा—"नर्स ! तुम अभी पूरी जवान कहाँ हुई हो—? बहार आने दो, एक छोड़ पूरे दर्जन लोग तुम्हें चूमने के लिए चक्कर काटेंगे—लेकिन, उस समय मुझे भूलना नहीं, याद कर लेना, जिसने हस्पताल में

तुम्हारी पिंडलियों की एक बार प्रशंसा की थी और कहा था कि यदि चार होतीं, तो मैं अपने पलंग के पायों के स्थान पर लगाता।"

नर्स ने तख्ती पर टैम्परेचर नोट किया और "यू नोटी ब्वाय" कह कर अपनी पिंडलियों की ओर प्रशंसा भरी दृष्टि से देखती हुई वापस चली गई।

सैय्यद बहुत ही प्रसन्न था या समझ लें कि वह अपने आप को प्रसन्न करने की चेष्टा कर रहा था। वास्तव में वह राजो को किसी न किसी ढंग से भूल जाना चाहता था? कई बार उसको उन बातों का विचार आता, जो उसने बुखार की हालत में की थीं; किन्तु वह तुरन्त ही दूसरे विचारों के नीचे उन्हें दबा देता।

हस्पताल में केवल चार दिन रहना था, इसमें कोई संशय नहीं कि मलेरिया और निमोनिया ने उसकी शक्ति क्षीण कर दी थी, फिर भी वह कमजोरी का जरा ध्यान न करता था। इसके उल्टे वह प्रसन्न होता। अब उसे ऐसा अनुभव होता था कि आवश्यक से आवश्यक बोझ उसके ऊपर से उठ गया हो। विचारों में अब पहला खिचाव नहीं था, न ही विचारों में गन्दगी थी। बुखार और निमोनिया ने फिल्टर का काम दिया था। वह महसूस करता था कि अब उसमें वह भारी-पन नहीं रहा, जो उसे पहले तंग करता था। बुखार ने उसके नोकीले विचारों को घिसा दिया था। इसलिए अब दर्द का अनुभव भी होना खत्म हो गया था।

दिमाग बिल्कुल ही हल्का था और बाकी शरीर के सभी अंग भी हल्के-फुल्के हो गये थे, जिस प्रकार धोबी मैले कपड़े को पटक-पटक कर उजला करता है, इस तरह बुखार ने अच्छी तरह झिंझोड़-निचोड़ कर सारा मैल निकाल दिया था।

जब नर्स अपनी पिंडलियों की ओर देखती हुई बाहर निकली, तो सैय्यद मन ही मन में मुस्कराया। फिर उसने सोचा, नर्स की पिंडलियाँ वास्तव में सुन्दर हैं, दूसरे रोगियों के लिए चार दिन भी यहाँ रहना कठिन था, किन्तु सैय्यद ने बड़ी प्रसन्नता पूर्वक यह दिन व्यतीत किये। शाम को उसके मित्र आ जाते और सवेरे उसकी माँ आती, जो अपनी ममता से उसको प्रसन्न कर जाती, दोपहर को सोकर या पत्र-पत्रिकाएं पढ़ कर समय काटा करता; जिनका ढेर खिड़की में लग गया था।

जब सैय्यद को छुट्टी मिलने का समय आया, तब डाक्टर, नर्स सेवक और अस्पताल के एक दो नौकर भी उसके कमरे में उपस्थित थे। दो भंगी इनाम लेने के लिए खड़े थे, बाहर फाटक पर टाँगा खड़ा था, जिसमें उसका नौकर गुलाम नबी बैठा प्रतीक्षा कर रहा था, जैसे वह लन्दन जा रहा है या वापिस आ रहा है और उसके मित्र उसको विदा करने या लेने के लिए आए हुए हों।

नर्स उसको बार-बार कह रही—"आपने अपनी सभी वस्तुएं अटैची में रख ली हैं ना?—और वह बार-बार इसका उत्तर दे रहा था—"जी हाँ, रख ली हैं।"

नर्स फिर कहती थी—"वह आंपकी घड़ी कहाँ है? देखिए कहीं गद्देले के नीचे ही पड़ी न रहे।"

इस पर उसे कहना पड़ा—"मैंने उठा कर अपनी जेब में रख ली है।"

"और आपका न?"

"वह भी मेरी जेब में है।"

"और आपकी ऐनक?"

"वह मेरी नाक पर है, आप देख सकती हैं।"

नर्स ने सैय्यद की बहुत सेवा की थी; किन्तु जिस प्रकार कोई छोटे-छोटे बच्चों का ध्यान रखता है इसी प्रकार सैय्यद का ध्यान रखती थी और अब जब कि वह अस्पताल से जा रहा था, वह उसको इस तरह विदा कर रही थी; जैसे माँ बच्चे को स्कूल भेजती है और उसके दरवाजे से निकलने तक कभी इसकी टोपी ठीक करती रहती या कभी कमीज के बटन बन्द करती रहती है। नर्स की इस प्रेम-भरी सेवा ने उसके हृदय पर बहुत प्रभाव डाला था। यही कारण था कि वह उससे हरेक बात, हँसी के ढंग पर करता था।

जब सब कुछ ठीक-ठाक हो गया तब सैय्यद नर्स से बोला—"नर्स देखना मेरी टाई की नॉट कैसी है ?"

नर्स ने टाई की नॉट की ओर देखा; किन्तु क्षण-भर में वह समझ गई कि उसके साथ परिहास हो रहा है, अपितु मुस्करा दी, बोली—"बिल्कुल ठीक है; परन्तु आप अपना शीशा यहीं भूले जा रहे हैं।"

यह कह कर वह कमरे की अन्तिम खिड़की की ओर बढ़ी, जिसके पास ही लोहे की अलमारी खड़ी झाँक रही थी, उसे खोल कर उसने शीशा निकाला और सैय्यद के अटैची-केस में रख कर कहा—"आप एक चीज तो भूल ही गये थे ना ?"

इस पर सैय्यद ने जवाब दिया—"अब मुझे क्या मालूम कि शीशा भी फलों और दूध वाली अलमारी में ही स्थान बनाएगा। मैंने तो उसे वहाँ नहीं रखा था। आपने कभी इसकी सहायता से अपने अधरों पर सुर्खी लगाई होगी और वह भी, जब मैं सो रहा हूँगा ?"

इस प्रकार की मजेदार बातों के बाद उसने डाक्टर से हाथ मिलाया और कुछ कागजों पर हस्ताक्षर करने के बाद नर्स का धन्यवाद किया। दानपत्र में कुछ रुपये डाल कर उस कमरे से बाहर आया जहाँ उसने

पूरे १५ दिन बीमारी की हालत में काटे थे ।

जब वह सड़क की ग्रोर बढ़ा तो उसने वैसे ही मुड़ कर ग्रपने पीछे देखा; जिधर उसके कमरे की खिड़कियां खुलती थीं । केवल तीन बन्द ग्रौर एक खुली, जिसमें से नर्स झांक रही थी । जब इन दोनों की ग्रांखें चार हुईं तो नर्स ने ग्रपने छोटे से सफेद रूमाल को हिलाया ग्रौर फिर खिड़की बन्द कर ली ।

उसके मित्र ग्रब्बास ने जब यह खेल देखा, तो ग्रांख मारते हुए रशीद से कहा—"भाई, मुझे दाल में कुछ काला-काला दीख पड़ता है ।"

६

पन्द्रह दिन घर से बाहर रहने के बाद सैय्यद ने जब घर में प्रवेश किया तो सबसे पहले राजो नजर आई जो दौड़ी हुई बड़े दरवाजे से बाहर निकल रही थी। उसे देखकर रुक गई और तुतला-तुतला कर कहने लगी—"मियाँ जी ! आप ठीक···टीक हो गये···मैं···पाँच रुपये के पैसे लेने जा रही हूँ।"

यह कह कर वह चली गई और सैय्यद ने आराम की साँस भरी। आगे बढ़ा, उसकी माँ झट उसे छाती से लगा और बलाएँ लेने लग गई।

सैय्यद को अपनी मां के अधिक प्यार से उलझन होती थी; किन्तु अब उसका स्वास्थ्य ठीक था। इसी कारण वह आज शान्ति पूर्ण खड़ा रहा और मां के प्यार को अच्छा समझने लगा और खुशी का अनुभव किया।

जब घर पहुँचा तो उसके साथ अतिथियों का सा बर्ताव हुआ। नये टी-सैट में चाय दी गई। अन्दर कमरे में नया फर्श बिछा दिया गया था, कुर्सियों पर नई गद्दियां रखी थीं। हर पलंग पर चादर बिछी हुई थी; जिस पर उसकी मां ने मेहनत से तारकशी का काम किया था। प्रत्येक वस्तु अपने-अपने स्थान पर रखी गई थी और कमरे में ऐसा वातावरण पैदा हो गया था, जैसे शुक्रवार को मस्जिद में नमाज के समय देखा करते हैं।

चाय पी कर वह देर तक अपनी मां के पास बैठा रहा। मुहल्ले की सभी स्त्रियां एक-एक करके आई और सैय्यद के ठीक होने की खुशी में उसकी मां को बधाई देकर चली गईं। जब फकीरों को पांच रुपये के पैसे बांटने का समय आया और मुहल्ले में शोर मच गया, तब सैय्यद उठ कर अपनी बैठक में चला आया।

गुलाम नबी ने कमरे को बहुत ही अच्छे ढंग से साफ किया हुआ था और सभी खिड़कियां खोल रखी थीं। सैय्यद की मां को पहले ही मालूम था कि वह अपने ही कमरे में जाकर बैठेगा, सिग्रेट का नया टीन तिपाई पर रखा था और पास ही नई माचिस पड़ी थी।

जब कमरे में प्रवेश किया, तो उसने अपनी सभी वस्तुओं को अपने-अपने स्थान पर लगा हुआ देखा। उस कबूतर तक को देखा जो बारह बजे तक उस के बाप की बड़ी तस्वीर के भारी फ्रेम पर ऊंघता रहता था।

थोड़ी देर तक वह साफ-सुथरी दरी पर नंगे पांव टहलता रहा। इतने में उसके मित्र आने शुरू हो गये। दोपहर का भोजन भी वहीं किया गया, जो कि स्वास्थ्य के अनुकूल था; परन्तु फिर भी हस्पताल से बहुत अच्छा था। भोजन करने के बाद सिग्रेटों का दौर चला और देर तक गप्प-बाजी चलती रही। इसी बीच में अब्बास ने कहा—"अमाँ हस्पताल की वह..." रशीद ने हँस कर कहा—"आपका डबल निमोनिया बिना दवाई के वैसे थोड़े ही उतर गया, कुछ नर्सें अमृत-धारा होती हैं।" अब्बास को रशीद की बात बहुत जँची। "माशा अल्लाह क्या बात कही है ! नर्स और अमृत-धारा, मैं समझता हूँ, सैय्यद ! आधी बोतल तो खत्म कर ही दी होगी तुमने...? भाई, इस प्रकार की दवाइयों का फजूल में इस्तेमाल नहीं किया जाता ?" सैय्यद को यह गप्पें बहुत अच्छी लगीं। इसी कारण उसने भी इनमें भाग लिया। क्या विचार है तुम्हारा ? हस्पताल में शायद ही कोई उस जैसी तेज नर्स हो। भाई हस्पताल वालों की दाद तो देनी ही पड़ेगी कि उन्होंने मिस फरिया को मेरी देख-रेख पर लगाया, वैसे तो इस नगर में किसी स्त्री की नंगी टाँगें नहीं दीख पड़तीं और अब तो सर्दी भी अधिक है, सब टाँगें मोटे-मोटे गलाफों में रहती हैं, इसलिए उसकी नंगी पिंडलियों ने बड़ा आनन्द दिया किन्तु तुमने उसकी पिंड़लियाँ नहीं देखीं ? अब्बास बोला—"क्या मशहूर जगहों पर मिलना ठीक है ?"

इस पर सैय्याद कुछ देर शान्त रहकर बोला—"भई मजाक खत्म; किन्तु उसने मेरी बहुत सेवा की है। बच्चा समझ कर मेरी दवादारू करती रही है। छोटी से छोटी चीज का ध्यान रखती थी। कभी-कभी मेरा मुँह भी धुलाती थी, नाक भी साफ करती थी, जैसे मैं बिल्कुल ही अपाहिज हूँ। मैं उसका आभारी हूँ। मेरा विचार है, उसको इनाम

रूप में एक साड़ी दूँ। एक वार उसने कहा था, उसे साड़ी पहनने का वहुत चाव है। क्यों अब्बास ! तुम्हारा क्या विचार है ?" अब्बास ने कहा—"नेकी और पूछ-पूछ; किन्तु शर्त यह है कि साड़ी लेकर मैं जाऊँगा। ठीक है और यह भी फैसला हो गया कि साड़ी सफेद होगी, क्योंकि यह रंग उसे वहुत ही पसन्द है।"

इसलिए दूसरे दिन गोकुल मार्केट से अब्बास और सैय्यद ने एक सफेद रंग की साड़ी चुनी; जिसके किनारे-किनारे एक सफेद तिल्ले का बोडर दौड़ रहा था। मूल्य चुका कर सैय्यद ने एक चिट पर अपना और नर्स का नाम लिख कर चिपका दिया। अब्बास ने वक्स वन्द किया और उसे लेकर हस्पताल की ओर चल पड़ा। अब्बास के जाने से पूर्व सैय्यद ने अब्बास से कहा—"देखो हस्पताल में जाकर किसी को कुछ भी देना ठीक नहीं ?"

अब्बास ने कमरे से वाहर निकलते हुए कहा—"मैं नर्स के घर जा रहा हूँ, हस्पताल में तो रोगी जाते हैं।"

अब्बास चला गया और संध्या समय वापस आया, जब सैय्यद अपनी चाय आदि से निवृत हो, माँ के पास थोड़ी देर वैठ कर इधर वाले कमरे में आ रहा था कि दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी और ख्वाजा साहव की आवाज गूँज उठी, तो उसने समझ लिया कि अब्बास है और कोई दिल वहलाव की वात होगी। जब दोनों शान्ति पूर्वक कमरे में वैठ गए, तो वात-चीत शुरू हुई।

अब्बास ने ही श्री गणेश किया—"भाई मुझे शक है कि उसे तुमसे वहुत वुरी तरह प्यार है और दिन-रात तुम्हारी जुदाई में आहें भरती रहती है, रात को सो नहीं सकती आदि-आदि।"

"अरे ! भाई नहीं, तुम मजाक मत समझना, उसने खुद तो कुछ नहीं कहा; किन्तु मैंने महसूस किया है कि वह तुम्हारे प्यार में जकड़ी

जा चुकी है न जाने तुमने उस पर क्या जादू कर दिया है ?"

"पूरी बात तो सुन लो ?"

"मैं वहां गया, उसका ठिकाना मालूम किया। वह ड्यूटी पर न थी, इसलिए उसने मुझे छोटे से कमरे में बुला लिया और मेरे आने का कारण पूछा। मैंने साड़ी वाले बक्स को उसके हाथों में थमा दिया। उसे खोल कर जब उसने साड़ी देखी तो उसकी आंखों ने आंखें धोने का प्रयास किया यानी कि आंखें गीली हो गई। कहने लगी—व्यर्थ में कष्ट किया; किन्तु यह साड़ी मुझे पसन्द है। उसका शौक बहुत अच्छा है। माना कि मैं सफेद कपड़े पहन-पहनकर सफेद कपड़ों से ऊब गई हूं; परन्तु इसका भी एक मुख्य कारण है...ये...ये बोडर कितना आकर्षक है, यदि बड़ा होता तो सारी सुन्दरता नष्ट हो जाती ? मेरी ओर से उनको धन्यवाद कहना; किन्तु वे स्वयं क्यों नहीं आये ? उन्हें स्वयं आना चाहिये था। यह कहते-कहते वह रुक सी गई, और बात बदल डाली।

"आपने भी अधिक कष्ट किया है, मुझे आपका भी धन्यवाद करना चाहिये।"

यह सुनकर सैय्यद ने अब्बास से पूछा कि इस बात-चीत से यही सबूत मिलता है कि कुछ भी नहीं···।"

"अरे भाई, मेरे बताने से क्या होता है ? मैं मिस फरिया तो नहीं हूँ। यदि तुम वहां होते तो वहां तक पहुँचते, जहां तक मैं पहुँच पाया हूं और फिर यह भी तो उसने कहा था कि उससे कहना कि जब भी कम्पनी-बाग की ओर आएँ तो मुझे अवश्य ही मिलकर जायें। मेरे कमरे का नं॰ उनको बता देना, जिससे उनको कष्ट न होगा; लेकिन ठहरिये···?"

"तुम्हें मालूम है, इसके बाद उसने क्या कहा ?"

"तुम से कहा होगा, चले आइये ।"

उसने छोटे से पैड पर तुम्हें एक पत्र लिखा; लेकिन थोड़ी देर विचार के बाद फाड़ दिया, फिर एक नया पत्र लिखना शुरू किया और मेरी ओर देखकर पागलों की तरह घबड़ाए हुए शब्दों में कहने लगी—"समझ में नहीं आता...धन्यवाद किन शब्दों में करूँ", यह कह कर उसने फिर लिखने की चेष्टा की, जो ठीक रही। बड़े सोच विचार के बाद उसने एक पत्र लिखा और लिफाफे में बन्द कर मुझे दिया और कहा कि यह उनको दे दीजिएगा। मैं यह पत्र लेकर बाहर निकला और..."

सैय्यद ने पूछा—"कहां है ?"

अब्बास ने बड़ी लापरवाही से उत्तर दिया—"मेरे पास...हां, तो मैंने बाहर आकर लिफाफे को देखा। उस पर लिखा था प्राइवेट; परन्तु मैंने खोल ही लिया...।"

"तुमने खोल लिया ?"

"खोल लिया और पढ़ कर देखा, तो मालूम हुआ कि वह आप से मिलने को उत्सुक है, पत्र का सार यही है कि मैं तुम से मिलना चाहती हूं। मेरा मन नहीं लगता, साड़ी के लिए धन्यवाद। मैं इसे परसों 'बाल' पर पहन कर जाऊंगी, जो छावनी में हो रहा है।"

यह कहकर उसने जेब में हाथ डाला और लिफाफा निकाल कर सैय्यद को दे दिया, बोला—"तुम स्वयं ही पढ़ लो, शायद कुछ और न लिखा हो।"

सैय्यद ने लिफाफा खोल कर पढ़ा; वास्तव में वही लिखा था, जो अब्बास ने सुनाया था। केवल इतना ही अन्तर था कि मिस फरिया ने अंग्रेजी में चार पंक्तियां लिखी थीं, जिनका अनुवाद कर के अब्बास ने सुनाया था।

यह पत्र पढ़ कर सैय्यद सोच में पड़ गया—वह मुझ से किस कारण मिलना चाहती है और उदास क्यों रहती है ? क्या उदासी मुझ से मिलने पर दूर हो जायेगी, क्या यह सच है कि उस के मन में उदासी पैदा करने वाला मैं ही हूँ ? क्या सच-मुच अब्बास के कथनानुसार वह मुझ से प्यार करती है। इस अन्तिम विचार पर उसे हँसी आ गई। अब्बास तुम पूरे के पूरे बेवकूफ हो। उसे मुझ से प्यार नहीं हुआ, किसी और से होगा और मुझे उसका पूरा-पूरा हाल सुनाना चाहती है। मैंने उसे एक बार हँसी-हँसी में कहा था—जब भी तुम किसी से प्रेम करो, मुझे अवश्य बताना ? हो सकता है, किसी ने उसके हृदय पर अपना निशाना लगा ही दिया हो। अच्छा छोड़ो इस बात को और बताओ क्या तुमने किसी ऐंगलो इंडियन लड़की से प्यार किया है ?

अब्बास ने बड़े गर्व के साथ उत्तर देते हुए कहा—"मैं ने ठेठ योरपियन लड़की से लेकर भंगिन तक, सब से प्यार किया है; किन्तु यह प्रेम वासनामय होता है और कुछ नहीं···सच पूछो तो मैं तुम्हारी फरिया से प्यार करने लगा हूँ; परन्तु उसके भाग्य का क्या करूं, जैसा कि तुमने कहा है, वह किसी और की हो चुकी है ? मैं समझता हूँ, अपना काम यों ही चलता रहेगा और एक दिन अन्त में विवाह हो जायगा और फिर छुट्टी समझो।"

अब्बास कुछ उदास हो गया। तब सैय्यद ने पूछा—"अब्बास क्या तुम वास्तव में किसी से प्यार करना चाहते हो ?"

अब्बास तड़प कर बोला—"यह वास्तव की भी खूब रही। अरे भई ! एक जमाना हो गया है, अभ्यास करते-करते और अब प्यार की आग ज्वालामुखी का रूप धारण कर चुकी है। बस, कोई भी हो, मगर हो स्त्री, हाँ स्त्री, खुदा कसम मजा आ जाए।"

यह कह कर अब्बास ने जोर-जोर से मजा लेने के लिए अपने हाथ मलने शुरू कर दिए; किन्तु मैं इस ढंग से प्यार का अनुयायी नहीं, जो क्षय रोग की तरह सदा के लिये चिमट जाये। मैं अधिक से अधिक एक या दो साल किसी स्त्री से प्यार कर सकता हूँ, बस इस से अधिक प्यार करना मेरे बस का रोग नहीं। गालिब ने कितना सुन्दर कहा है—"मिसरी की मक्खी बनो, शहद की मक्खी न बनो', तो भाई, मैं तो मिसरी की मक्खी हूँ। अपना तो यही नियम है, चाहे प्यार हो, या न हो। विवाह अलग रहे और प्यार पृथक हो। वाह अल्लाह, यदि ऐसा हो जाये, तो क्या कहने हैं; किन्तु मुझे ऐसा लगता है, बस अब किला अपने ही हाथ आने वाला है, तो बस सारी जर्मनी मेरी है। मुझे यह लाईन तोड़नी है; जिस दिन टूट गई, बेड़ा पार समझो।"

अब्बास का भाषण सुनकर सैय्यद ने अपने और उसके प्यार की तुलना की; पृथ्वी और आकाश का अन्तर था; किन्तु एक बात थी कि अब्बास ने दूसरे व्यक्तियों की तरह अपने शारीरिक प्यार पर पर्दा नहीं डाला, उसने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि एक या दो साल से अधिक किसी औरत से प्यार करना अच्छा नहीं समझता है?

प्यार कितनी देर रहता है, यह सैय्यद को मालूम न था? मयादी बुखार की तरह उसका समय भी निश्चित होता है। यह भी उसको ज्ञात नहीं। मयादी बुखार उसको एक बार चढ़ा था, जो उसकी मां के कथनानुसार सवा महीने तक रहा था; किन्तु यह प्यार अभी-अभी इसके हृदय में उत्पन्न हुआ था, कब तक उसे कष्ट देता रहेगा? यह प्रश्न उसके हृदय में उत्पन्न हुआ ही था कि राजो और उसके आस-पास की सभी वस्तुएँ सामने घूमने लगीं। वह उस व्यक्ति की तरह जो अनजाने ही में किसी मुसीबत में फँस जाये, बहुत घबड़ा गया, अपितु उसने तुरन्त ही स्वयं को इन विचारों से स्वतन्त्र कराने के लिए अब्बास

से कहा—

"अब्बास आज कोई खेल देखना चाहिए ?"

अब्बास जिसके दिमाग में प्यार बसा हुआ था, कहने लगा—"खाली तस्वीर प्यास नहीं बुझा सकेंगी, दोस्त...मुझे औरत चाहिए औरत, गर्म-गर्म गोश्त वाली औरत, जिसके सुन्दर गालों पर मैं अपने प्यार के ठंडे टोस्ट सेंक सकूं। तुम्हें एक मौका मिल रहा है, उससे अवश्य ही लाभ उठाओ। जाओ वह नर्स तुम्हारी है, खुदा कसम तुम्हारी है। उसकी आंखों ने मुझे बता दिया था कि वह एक गलती करके रोना चाहती है। जाओ, उसको अपने जीवन की पहली गलती पर न रोने देना...पागल न बनो, गलतियां न होतीं, तब औरतें भी न होतीं...मेरी समझ में नहीं आता, तुम्हारे विचार किस ढंग के हैं ? भाई एक औरत तुम्हारी मदद से अपने जीवन में खुशी के रंग भरने की कोशिश कर रही है। यदि तुम अपने रँग के बक्स को बन्द कर डालो, तो तुम्हारा पागलपन है—काश ! तुम्हारे स्थान पर कहीं मैं होता, फिर...फिर देखते कैसे-कैसे तीखे रंग उसके जीवन में भरता···?"

अब्बास का भाषण सैय्यद उन कानों द्वारा सुनने की चेष्टा कर रहा था, जिनमें राजो का प्रेम अब भी भिनभिना रहा था। हस्पताल में बहुत हद तक राजो को भूल गया था; किन्तु आज पहले ही दिन घर आने पर वह फिर उसके अन्दर आगई थी। अब्बास बातें कर रहा था और उसके हृदय में यह विचार उत्पन्न हो रहे थे कि उठे और अन्दर जाकर राजो को एक बार देख आये। नयनों से ही देखें; मगर देखें अवश्य। उसकी ओर प्यार भरी दृष्टि से न देखकर घृणा की दृष्टि से देखा जाये। मगर देखे अवश्य; किन्तु उसके साथ-साथ वह यह भी नहीं चाहता था कि जो निश्चय वह कर चुका है; क्षण भर में खत्म कर दे।

उसने बड़ी सावधानी से काम लेकर राजो के विचार को एक बार फिर अपने हृदय के अन्दर कुचल दिया और उठ खड़ा हुआ, बोला—"अब्बास, कोई नई बात सुनाओ, सच पूछो तो मैं प्रेम का अर्थ अभी तक भी न जान सका. इतना अवश्य जानता हूं, प्रेम वह वस्तु नहीं है; जिनका तुम अलाप कर रहे हो। तुम एक औरत से केवल एक या दो वर्ष प्यार करने के आदी हो, मगर मैं तो आजीवन भर पट्टा लिखना चाहता हूं। यदि मुझे किसी से प्यार हो जाये तो मैं उस पर पूर्ण अधिकार चाहता हूं ? वह औरत पूर्णतया मेरी होनी चाहिए। उसका प्रत्येक अंग मेरे प्यार के अधिकर में होना चाहिए। प्रेमी और डिकटेटर में मैं कोई भी अन्तर नहीं समझता, दोनों बल चाहते हैं ? दोनों शासन की अन्तिम सीढ़ी के इच्छूक हैं···प्रेम···यह प्यार-प्यार की रट लगाते हो, मैं खुद प्यार-प्यार कहता हूं, मगर इस यिपय में हम कहां तक जानते हैं, किसी अंधेरी खाई में या बाग की घनी-सी झाड़ी के पीछे अगर तुम्हारी किसी बासना की भूखी औरत से भेंट हो जाए, तो क्या तुम कहोगे, मैंने प्यार लड़ाया है, मेरे जीवन में चंचलता ने प्रवेश कर लिया है ? गलत है, बिल्कुल गलत, यह प्यार नहीं, प्यार कुछ और ही होता है। मैं यह भी नहीं कहता हूं कि प्यार शुद्ध विचारों का नाम है और जैसा हमारे बड़ोंने कहा है कि औरत इच्छाओं से खाली नहीं होती। मैं इसको भी नहीं मानता। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मुझे मालूम है, प्यार क्या है, लेकिन···लेकिन···मैं पूर्णरूप में अपने शब्दों को पूरा नहीं कर सकता। मैं समझता हूं, प्यार हरेक आदमी के अन्दर नई उमंगें पैदा करता है। जहां तक जगह का सवाल है, एक ही रहती है, अमल में भी एक ही है और जवाब भी एक जैसा ही निकलता है; लेकिन जिस तरह रोटी खाने का मतलब एक-सा है और बहुत से आदमी

रोटी के टुकड़े जल्दी-जल्दी उठाते हैं और बगैर चबाए ही उनको निगल जाते और बहुत से चवा-चवाकर रोटी को अपने पेट में भरते हैं। यह शब्द भी पूरी तरह से पूरा नहीं कर सकते। भाई, मेरा दिमाग खराब हो जायेगा। खुदा के लिए यह प्यार की दासता खत्म करो। हमारा प्यार बड़े-बड़े पत्थरों के नीचे दब चुका है। जब खुदाई होगी, इसको निकाला जायेगा, फिर हम दोनों इसके बारे में खुलकर बातें कर सकेंगे।"

सैय्यद की बेजोड़ भाषा में इतने धचके थे कि अब्बास के दिमाग की ऐसी हालत हो गई, जैसे थर्ड-क्लास तांगे में बैठ कर टूटे-फूटे रास्ते पर चलने से पैदा हो जाती है। वह भी उठ खड़ा हुआ—"न जाने तुम ने क्या बकवास की है; मगर मैं सिर्फ इतना समझता हूँ कि औरत से प्यार करना और जमीन को खरीदना तुम्हारे लिये एक समान है। मेहरबानी हो यदि तुम प्यार की जगह पर, एक-दो बीघा जमीन खरीद लो और उम्र-भर उस पर कब्जा जमाए रखो—लाहोल बिला! आज तुम्हें क्या हो गया है, तुम्हारे अन्दर की शायरी का क्या हुआ—? बीमार रहने के बाद तुम इतने कमजोर हो गए हो कि छोटी-सी बात को भी नहीं समझते। भाई प्यार जो अधिक समय तक रहे, प्यार नहीं, लानत है। हम आदमी हैं पैगम्बर नहीं, जो एक ही औरत पर पूरी तसल्ली कर लेंगे। अगर एक ही औरत से मेंने अपने आप को चिपका दिया, तो जिन्दगी बिगड़ जायेगी। मैं खुदकशी कर लूँगा। उम्र भर एक औरत—सिर्फ एक औरत—और यह दुनिया क्यों इतनी पूरी पड़ी है—? क्यों इसमें इतने तमाशे इक्ट्ठे हैं? सिर्फ गेहूँ पैदा करके अल्हाह-मियां ने अपना हाथ क्यों नहीं रोक लिया?"

"मेरी सुनो! और इस जिन्दगी को जो तुम्हें दी गई है, ठीक ढंग

से रखो तुम उस औरत को जो तुम्हारी राह पर डाल दी गई है, कुछ समय के लिए, किस तरह खुश कर सकते हो? अपनी खुशी अच्छी रही ? झगड़े में खुद को न उलझाओ, औरत कोई आयोग्य सृष्टि नहीं है। वैसे तो तुम अपने पालतू कुत्ते को भी अच्छी तरह जान नहीं सकते, लेकिन इसको समझने की ही जरूरत क्या है ? जब तक पुचकारने पर अपनी कटी हुई दुम हिलाता रहता है और तुम्हारे कहने पर वह गेंद पकड़ता है। मैं पूछता हूँ, औरत के बारे में ज्यादा सोचने की जरूरत ही क्या है ? अगर औरत अथाह समुद्र है, चाहे नीले आसमान का तारा है, इन बातों से क्या ? जब तक वह औरत है और उन विशेषताओं से परिपूर्ण है, जो एक औरत में मौजूद होती हैं, केवल इसी एक विषय पर विचार करना चाहिए कि उसे किस ढंग से पाया जा सकता है ?"

यह भाषण सुनने के बाद, सैय्यद ने अब्बास से पूछा—"लेकिन औरतें हैं कहाँ ?"

अब्बास ने पैकेट से एक सिग्रेट निकाली, माचिस जलाकर सुलगाते हुई उसने उत्तर दिया—"यहाँ-वहाँ, इधर-उधर, हर जगह पर औरतें ही औरतें हैं। क्या इस घर में कोई भी और नहीं है। वह तुम्हारी नौकरानी राजो ही क्या बुरी है ? जिसने उस दिन बैठक के किवाड़, मेरे लिए ही खोले थे। तुम मेरी ओर आँखें फाड़-फाड़ कर क्यों देख रहे हो ? भाई, हमें तो औरत चाहिए और राजो शत-प्रति-शत औरत ही है। भले ही वह तुम्हारी नौकरानी सही, किन्तु इससे, उसके व्यक्तिगत संस्कार की क्रिया कुछ नहीं बिगड़ सकती। माना कि हमारे यहाँ की औरतें सन्दूक की चार दीवारों में बन्द रहकर साँस लेती हैं, किन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि जो सन्दूकों से बाहर हों उनकी ओर ध्यान

देना ही छोड़ दें। सच तो यह है कि थाल में जो कुछ भी है, उसे खाना ही पड़ता है।"

यह कह कर अब्बास ने सिग्रेट की राख झाड़ी और अपने मित्र की ओर प्रश्न-सूचक दृष्टि से देखने लगा, यद्यपि वह देखना नहीं चाहता था। फिर ऐसा भास होता था, मानो सैय्यद को इस बात का भय हो कि वह उसकी आंखों में राजो के प्रेम की कहानी पढ़ लेगा, अतः वह जाने क्या सोचकर किस कारण एक ओर हट गया और समीप पड़ी तस्वीर को हाथ लगा, उसे इधर-उधर हिलाते हुए अब्बास से कहा—"तुम...तुम...तुम...तुम! कुछ नहीं, तुम्हारी बातें बहुत ही बेढंगी हैं, तुम जब बातें करते हो, तब मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हारे मुख से खून की गन्ध आ रही है। सच तुम खून पीने वाले दरिन्दे हो।"

"और तुम?" अब्बास ने फिर सिग्रेट की राख झाड़ी, फिर कहने लगा—"मैं खून पीने वाला दरिन्दा ही सही, किन्तु तुम जैसे दूध पीने वाले जनतुओं से तो फिर भी कहीं अच्छा हूँ। तुम तो केवल अच्छाई और बुराई के बीच लटक रहे हो। अच्छा है कि मैं चमगादड़ नहीं हूँ, मैं एक तूफानी समुद्र हूँ और तुम तो अभी तक मरुस्थल पर खड़े हो। में कवि हूँ और तुम एक अनभिज्ञ वक्ता। तुम एक ऐसे ग्राहक हो जो औरत को पाने के लिए आजीवन भर धन जोड़ते रहोगे और उसे कभी भी पूरा न कर सकोगे?"

"मैं ऐसा ग्राहक हूं, जो कितनी ही औरतों को क्रय-विक्रय करूँगा। तुम ऐसा प्रेम करना चाहते हो कि तुम्हारे असफल प्रेम पर कोई घटिया सा लेखक तुम्हारी प्रेम-कथा लिखे, जिसे चन्द एण्ड सन्ज जैसे प्रकाशक लाल-पीले रंग के कागजों पर छापें और दरीबाकलां में एक-एक इकन्नी में तुम्हारी प्रेम कहानी बिके। मैं अपनी जीवन-पत्नी को दीपक बन कर

चाट जाना चाहता हूं, ताकि इसका चिह्न भी न दीख पड़े। तुम प्रेम में जीवन चाहते हो मैं जीवन में प्रेम ! किन्तु तुम कुछ भी नहीं हो। कुछ सोचो तो सही कि तुम क्या हो ?"

सैय्यद को लगा, जैसे वास्तव में अब्बास ही सब कुछ है। वह कुछ भी नहीं। वह अपने मन से अपने आप प्रश्न कर उठा—"मैं क्या हूं और यहां इस घर में एक और है और जिससे प्यार करता हूँ; किन्तु···किन्तु, यह प्यार क्या है ? दुःख और सुख का कैसा अनुभव है ? मैं चाहता हूँ, वह मेरी बन जाये; किन्तु साथ ही यह भी सोचता हूँ कि इस प्रकार के विचारों को अपने हृदय से नोच-नोच कर फेंक क्यों न दूँ ? मैं किस झगड़े में पड़ गया हूँ, क्या दुखी जीवन का ही दूसरा नाम प्यार है !"

कुछ भी हो; किन्तु सैय्यद यह भली-भांति जानता था कि यह दुःख या इसका और जो भी नाम रखा जाये, वह वास्तव में प्रेम ही था, जो धीरे-धीरे इस हृदय में अपना पूरा स्थान बना चुका था; जिस प्रकार बहुत से व्यक्ति भूत-प्रेत आदि से भय खाते हैं, उसी प्रकार सैय्यद प्यार से भय खाने लगा था। उसको क्षण-प्रति-क्षण डर रहता कि कहीं ऐसा समय न आ जाये कि प्रेमावेग में उस बिगड़े हुए घोड़े की तरह वह बे लगाम न हो जाए और वह हाथ मलता रह जाये। कभी वह विचार करता कि वह कुछ कर बैठेगा, पर दूसरे क्षण ध्यान आता कि वह क्या कर बैठेगा, यह उसको मालूम नहीं था। वह तो भविष्य में आने वाली आंधी की प्रतीक्षा कर रहा था, जिसकी प्रचण्ड लहरें आकाश में छाने वाले बादलों से ही सूचना देने के लिए बाहर आ जाती हैं। सम्भवतः इसी प्यार के कारण वह कुछ भयभीत-सा हो उठा था, शायद वह कायर बन गया था।

अब्बास अपने ही विचारों में व्यस्त था, इसी कारण वह अपने प्रेम के धड़कते हुए दिल की ध्वनि न सुन सका; क्योंकि वह दूसरों की समस्याओं को सुलझाने का आदी न था। उसे केवल अपने ही रोने पर विचार करने में आनन्द आता था। वह सदा ही अपने आप में खोया-खोया रहता था। उसे इतना समय ही नहीं मिलता था कि दूसरों की बात पर कुछ सोच-विचार कर सके; किन्तु वह फिर भी एक अच्छा मित्र था। शायद इसलिए वह मित्रता और उसकी किसी त्रुटि पर जरा भी ध्यान नहीं दे सकता था। वह उसको आपत्ति में कभी भी नहीं देखना चाहता था। वह कहा करता था, अब छोड़ो, तुम कौन से वहम में फंस गये हो! दोस्ती-दोस्ती सब फजूल बकवास है। धातु और पत्थर के युग में दोस्त हुआ करते होंगे; किन्तु विज्ञान के युग में कोई किसी का दोस्त नहीं हो सकता। सारे व्यक्ति यदि दोस्ती की रस्सी बंटना शुरू कर दें, तो समस्त कार्यक्रम समाप्त हो जायें। तुम्हें कोई दोस्त कहता है, कहने दो! कहो, मैं भी तुम्हें मित्र कहता हूँ। ठीक है, सुनते जाओ; किन्तु इससे अधिक इस पर विचार नहीं करना चाहिए। जितना अधिक विचार करोगे, उतने इसमें अभाव के गड्ढे दिखाई देंगे। आज संसार में जितने भी काले कारनामे हो रहे हैं, सभी इसी प्रकार के परिणाम हैं।"

"हत्याएँ होती हैं; पर अधिक सोच-विचार के कारण, चोरी होती है, अधिक सोचने के कारण और डाके भी पड़ते हैं, केवल अधिक सोच-विचार करने से। मस्तिष्क और बारूद की मेगजीन में कुछ भी अन्तर नहीं। सोच-विचार उस पत्थर के समान अनेकों चिंगारियाँ फेंक देता है। गधे बन जाओ, उल्लू बन जाओ; किन्तु खुदा के लिए अकलमन्द और बेफिक्रे न बनो।"

अब्बास इस प्रकार भावुकता के प्रवाह में लच्छेदार बातें करता,

छोटी-सी बात को इस ढंग से कहता कि सुनने वाला आश्चर्य में पड़ जाये; पर यह उसका स्वभाव बन चुका था। संसार के विषय में उसने कुछ ऐसे नियम बना रखे थे; जिन पर वह चल रहा था। इसमें सन्देह नहीं कि वह सदा चिन्ता और दुःख के घेरे से बाहर रहता था; किन्तु फिर भी इन बातों पर कुछ क्षण उसे विचार करना ही पड़ता था, जो उससे सम्बन्धित होती थीं।

इस समय भी वह विचार कर रहा था; क्योंकि उसके मुख पर शान्ति के चिन्ह न थे, जो कुछ समय पहले दीख रहे थे। एकाएक सिग्रेट पीने की इच्छा से उसने नई सिग्रेट जलाई और बड़े जोर-जोर से कश खींच रहा था और इसका मित्र सैय्यद आग के पास बैठा हृदय और मस्तिष्क के संघर्ष में चोट पर चोट खा रहा था।

सहसा अब्बास चौंक पड़ा। उसने कहा—"छोड़ो भी इस झगड़े को। व्यर्थ में क्यों स्वयं को उलझन में डाल रहे हो ? जो होगा देखा जायेगा।"

अपने दोस्त को संकेत करते हुए उसने कहा—"अरे भाई, किस वहम में पड़ गये, कुर्सी पर बैठो ! आप अभी-अभी बीमारी से उठे हैं। ऐसा न हो कि कहीं फिर हस्पताल का मुंह देखना पड़े; परन्तु इस बार अपना स्थान मुझे देना। वल्लाह ! वह नर्स तो मुझे भा गई है।"

यह कहकर वह स्वयं आराम कुर्सी पर बैठ गया।

सैय्यद भी उठ कर कुर्सी पर बैठ गया। अधिक बात-चीत और सोच-विचार ने उसे कमजोर कर दिया था। इसी कारण थकी-मांदी आवाज में उसने अब्बास से कहा—"अब्बास ! मैं अधिक कमजोर हो गया हूँ। मेरा विचार है कि कुछ दिनों के लिये बाहर चला जाऊँ, जिससे हवा-पानी बदल जाये।"

अब्बास ने पूछा—"कहाँ जाओगे ?"

सैय्यद ने उत्तर दिया—"कहाँ जाऊँ ? यही तो सोच रहा हूँ। शरद ऋतु में कहाँ जाना लाभदायक रहेगा ? कोई ऐसा स्थान बताओ जहाँ दिल लग जाये ? क्या बम्बई चला जाऊँ ? कलकत्ता भी बुरा नहीं ; किन्तु—किन्तु ! बड़े दिन तो खत्म हो चुके हैं। बड़े दिनों को छोड़ो, तो बम्बई चला जाऊँ। वास्तव में मैं कुछ समय के लिए अमृतसर को भूल जाना चाहता हूं। यहाँ मुझे कुछ घबराहट-सी हो रही है।"

अब्बास ने आश्चर्यजनक दृष्टि से देखते हुए पूछा—"अमृतसर में आपको घबराहट हो रही है या डर लग रहा है ? अमृतसर ने आपको कहाँ काट खाया है ?"

इस पर सैय्यद के मन में आया कि अब्बास के सामने अपने मन का सारा हाल खोलकर कह दे ; किन्तु न जाने क्या सोचकर वह चुप रह गया। वास्तव में वह चाहता था कि किसी को अपना दुख सुनाए; परन्तु इसके साथ ही साथ वह यह भी नहीं चाहता था कि इसके दुखों से कोई लाभ उठाए ! यदि ऐसे होता कि दुःख सुनाकर भी किसी को इसके दुःख का पता न चले, तो अवश्य ही सैय्यद दुःख-भरे हृदय के उद्‌गारों को उँडेल देता। उसे मालूम था कि यदि एक बार राजो के प्रेम की कहानी सुना दी, तो चिड़िया झट से उड़ जायेगी ? जिसे वह पिंजरे में बन्द करके मारना चाहता है। इसलिए अब्बास को वह सब कुछ सुनाने के लिए झुका और पुनः उसे सिग्रेट के डिब्बे से सिग्रेट निकाल कर जलाने की आवश्यकता जान पड़ी। अब्बास से भी उसकी यह बात छिपी न रह सकी कि उसका दोस्त कुछ कहना चाहता है। परन्तु वह कहने में असमर्थ-सा हो रहा है। अतः उसकी परेशानी को पहचान कर उसने कहा—"कहो क्या कहना चाहते हो ? आखिर तुम्हें अमृतसर से घबराहट क्यों हो रही है ? बाहर क्यों जाना चाहते हो ? कौन-सी

ऐसी बात है ? पर बात, बात तो कोई भी नहीं होती ? हम और तुम फजूल ही किसी बात में खासपन पैदा कर देते हैं; फिर भी मैं कहता हूं कि कहो क्या कहना चाहते हो ?''

सैय्यद ने सिग्रेट का एक कश लेते हुए अब्बास की ओर मुंह से धुआं फेंकते हुए कहा—'कुछ भी नहीं। कोई ऐसी खास बात भी नहीं; किन्तु मैं खुद नहीं जान सका हूं कि मैं अमृतसर छोड़ना क्यों चाहता हूं ? वास्तव में कुछ समय से न जाने क्यों मेरे दिमाग की कल ढीली पड़ गई है। इसलिए चहल-पहल की दुनिया में जाना चाहता हूं।''

"चहल-पहल की दुनिया में जाना चहते हो ? अपने-आप घर बनाना यह तो कुछ कठिन नहीं। मैं आपको यहां एक वैसी ही दुनिया की स्थिति को पैदा करके दिखा सकता हूं ! यदि हुक्म दो, तो करूं। सच कहता हूं कि रशीद, वहीद, प्राण सबके सब आपकी सेवा में हाजिर हो जायेंगे और फिर एक कोलाहल से परिपूर्ण वातावरण की जो हालत पैदा होगी, इतना शोर मचेगा कि कानों-कान की आवाज भी कोई नहीं सुन सकेगा ? कहो क्या हुक्म है ?''

अब्बास हंसने लगा। उसकी हंसी को देखकर सैय्यद का हृदय भीतर ही भीतर जिस चिंगारी के असर से सुलग रहा था, वह बाहर निकल पड़ा, सैय्यद तड़प उठा। वास्तव में अब्बास को मालूम नहीं था कि सैय्यद के हृदय में किस बात का तूफान उठ रहा है और वह किस प्रकार के खौफ-नाक रास्ते पर चल रहा है ? यही कारण था कि वह इसकी हंसी उड़ा रहा था। हंसते हुए अब्बास ने फिर पूछा—"कहो भाई क्या हुक्म है ?''

इस पर सैय्यद का विवेक झुंझला उठा, व्याकुल होकर, उठ खड़ा हुआ, बोला—"मैं फैसला कर चुका हूं कि सप्ताह में ही कहीं न कहीं जरूर चला जाऊंगा। मैं बहुत उदास हो गया हूं। मैं अब यहां

रहना नहीं चाहता। बस एक-दो महीने बाहर रहकर, जब मेरा मन ठीक हो जायगा, तब वापिस भी आ जाऊँगा। सोचो न कि कौन-सा कोई ऐसा जरूरी काम यहाँ है जो मेरे बिना पूरा न हो सकता हो? तुम भी मेरे साथ चलो।"

अब्बास उसकी बात पर मुस्करा उठा, उसने कहा—लेकिन मुझे तो बहुत से काम करने हैं।"

"यहाँ तुम्हें कौन-से काम करने हैं?"

"एक हो, तो बताऊँ, सैंकड़ों हैं। मान लो मुझे एक-दो लड़कियों से प्यार करना है तो एँगलो इंडियन लड़कियों से बात-चीत करने के सारे तरीके सीखने हैं। कुछ थोड़े-से सस्ते बाजारू ढंग के मखौल भी याद करने हैं और दस-बीस घटिया और सस्ते नावल भी पढ़ने हैं? और—और नहीं! बस अब अपने 'प्लान' के बारे में क्यों बताऊँ? तुम जाओ। मैं अपने यहाँ मनोरंजन के लिए कुछ न कुछ तो पैदा कर ही लूंगा! बस पत्र लिखते रहना; लेकिन जाओगे कहाँ?"

सैय्यद ने सोचा, वास्तव में जायेगा कहाँ? ऐसी कौन-सी जगह है, जहाँ पर वह आराम से कुछ दिन काट सकता था। होटल में रहना उसे अच्छा न लगता था और सम्बन्धियों के यहाँ तो बहुत ही बुरा लगता था; क्योंकि उसकी आजादी में किसी न किसी प्रकार की रुकावट पैदा हो सकती थी। यह सब कुछ उसके दिमाग में था; लेकिन 'अमृतसर छोड़ो' का आन्दोलन अब तक उसी रूप में जोर पकड़ रहा था। वह खुद जाना चाहता था; परन्तु गजब की बात यह है कि राजो को अपने हृदय से निकालने का प्रश्न अभी तक इसके दिमाग में नहीं आया था।

वास्तव में इतना सोचने-विचारने के बाद भी वह कुछ फैसला तो न कर सका; किन्तु यह अवश्य था कि वह कहीं न कहीं चला जायेगा!

७

* * *

अमृतसर से लाहौर केवल तीस मील की दूरी पर बसा हुआ है। मन्द से मन्द चलने वाली गाड़ी भी आपको एक घन्टे में लाहौर फेंक देगी, वास्तव में उसने अभी तक अमृतसर नहीं छोड़ा था; परन्तु अब कभी अमृतसर से चले जाने की कल्पना उसके मन में उभरती, तो वह अपने आपको लाहौर में पाकर ऐसा महसूस करता, मानो यहाँ राजो से उसे अब किसी प्रकार का भय नहीं रहा!

अन्त में एक दिन उसने घर छोड़ने का फैसला कर लिया। माँ

ने उसको बहुत रोका ; किन्तु वह अपनी बात का पक्का था। एक रोज हस्पताल से घर वापिस आने के चौथे दिन ही वह अपना थोड़ा-सा सामान बाँधकर चल पड़ा। लाहौर में इसके तीन-चार सम्बन्धी भी रहते थे। उनसे मिला भी; किन्तु उनके यहाँ कुछ देर ठहर कर चला आया। सम्बन्धी भी कुछ ऐसे ही थे; किन्तु सैय्यद फिर भी प्रसन्न था, इनके व्यवहार से, अतिथियों की तरह कुछ देर के लिए प्रत्येक के पास ठहरा और थोड़ी-बहुत बात-चीत करने के पश्चात् होटल में आ टिका।

पर इस होटल से भी उसका मन एक सप्ताह में ही ऊब गया था। वैसे किराया भी अधिक था। वह इन व्यक्तियों में रहना भी नहीं चाहता था, जो भारत में पैदा होकर योरोपियन बनने को चेष्टा करते हैं। इसलिए उसने माल रोड पर छोटा-सा कमरा देख लिया और किराया आदि पक्का करने के बाद उसमें जाने का निश्चय भी कर लिया।

अतः एक दिन होटल का 'बिल' आदि देकर वह ताँगे में अपना सामान रखवा रहा था कि सामने से उसने एक और ताँगे में 'मिस फरिया' नर्स को आते देखा। पहले-पहल तो उसने सोचा कि कोई और होगी; क्योंकि एंगलो इंडियन लड़कियों की मुखाकृति और रंग एक-सा ही होता है। जब फरिया उसकी ओर प्यासी हिरणी के समान हाव-भाव खोए हुए आगे बढ़ी, तब उसको विश्वास हुआ कि वह वास्तव में फरिया ही है। सहसा उसके दिमाग में सैंकड़ों प्रश्न उठे और कहीं विलीन हो गए। लाहौर में क्या करने आई है और कब आई है ? क्या अकेली है ? इस होटल में इसका कौन है, क्या इसी होटल में ठहरी है ? आदि आदि।

अपने दिमाग में उठने वाले प्रश्नों को दबाकर सैय्यद ने होटल के

नौकर की हथेली पर कुछ रुपये रखकर दबा दिये और जल्दी से फरिया की ओर बढ़ा। आगे बढ़कर उसने प्रेम भरे शब्दों से उसका अभिवादन करते हुए कहा—"मिस फरिया, किसे मालूम था कि लाहौर में तुमसे भेंट होगी ? तुम यहाँ कब आई हो ?"

इस तरह सैय्यद ने न जाने कितने ही प्रश्न फरिया से किए; किन्तु उसने एक भी उत्तर न दिया। वह दुखी थी, इतनी दुखी कि उसके मुख पर ठंडी छा चुकी थी; जिसे लेखनी भी लिखने से चिल्ला उठे। ऐसा मालूम होता था कि वह कोई बड़ी भारी चोट खाकर आई है। उसका रंग पीले पत्थर के समान हो गया था और उसके अधरों पर सुर्खी का पोधा फेरने के बाद भी केवल पपड़ियां ही नजर आ रही थीं।

अन्त में कुछ देर के बाद इधर-उधर देखकर फरिया ने उससे कहा—"मुझे आप से बहुत सी बातें करनी हैं।" यह कहते हुए उसने तांगे की ओर देखा, जिसमें सामान भरा हुआ था, फिर बोली—"लेकिन आप अभी-अभी आए हैं या जा रहे हैं ?"

"मुझे तो यहाँ आए आज सात दिन हो चुके हैं और अब मैं यह होटल छोड़ रहा हूँ।"

यह सुनकर फरिया का रंग और भी पीला पड़ गया। वह बोली—"बस आप घर जा रहे हैं ?"

"नहीं-नहीं, घर तो दो-ढ़ाई महीने के बाद ही जाऊँगा। होटल का वातावरण मुझे कुछ अच्छा नहीं लगा, इसलिए मैंने अलग एक कमरा किराये पर ले लिया है।"

'तो चलो मुझे भी साथ ले चलो। तुम...।"

यह कह कर वह कुछ झेंप-सी गई। बोली—"आपको यदि कुछ कष्ट न हो तो—। बात यह है कि मैं आपसे कुछ कहना चाहती हूँ और

यहाँ होटल के सामने दो मिनट में मैं कुछ भी नहीं कह सकती ।"

सैय्यद ने फरिया की ओर देखा तो उसकी मोटी-मोटी आंखों में आंसू की दो-एक बूंद उतर रही थीं । उसका हृदय द्रवित हो उठा । उस ने कहा—"नहीं-नहीं ! इसमें कष्ट की कोई बात नहीं ? मैं यह सोच रहा हूँ कि तुम्हें वहाँ कष्ट होगा, इसलिए कि वहां सामान आदि कुछ भी नहीं है, केवल खाली कमरा है । अभी तक मेज और कुर्सियाँ भी कुछ नहीं ला सका । अच्छा, देखा जायेगा, चलो आओ ।"

किराया आदि देकर और होटल के नौकरों को इनाम देते हुए दोनों तांगों में मालरोड की ओर चल पड़े । रास्ते में कोई बात नहीं हुई; क्योंकि दोनों अपने-अपने विचार में मग्न थे और इतने में तांगा उस मकान के आगे जाकर रुक गया जिसकी दूसरी मंजिल पर उसने अपने लिये कमरा ले रखा था ।

सामान आदि रखवा कर, जब सैय्यद ने फरिया की ओर देखा, तो वह लोहे की चारपाई पर बैठी अपने आंसू पोंछ रही थी किवाड़ बन्द करके वह उसके पास आया और सहानुभूति प्रकट करते हुए पूछा—"मिस फरिया, क्या बात है ! तुम्हारी आँखें तो कभी रोने वाली नहीं थीं ?"

यह सुनकर फरिया ने जोर-जोर से सिसकना शुरू कर दिया जिस से सैय्यद बहुत घबड़ा-सा गया । उसकी समझ में नहीं आता था कि इस लड़की को वह किस प्रकार दिलासा दे ? यह पहली घटना थी कि नवयुवती उसके पास बैठी थी और रो रही थी । उसका हृदय कोमल था और शीघ्र ही बर्फ-सा पसीज गया । फरिया के रोने का उसे अधिक दुःख हुआ । घबड़ा कर कहा—"मिस फरिया ! मुझे बताओ तो सही, सम्भवतः मैं तुम्हारी कुछ सहायता कर सकूं ।"

फरिया चारपाई से उठ खड़ी हुई। खिड़की खोलकर बाहर की ओर देखने लगी। फिर थोड़ी देर के पश्चात् उसने कहा—"मैं इसीलिए तो आपके साथ आई हूँ। यदि आप से भेंट न होती, तो न जाने क्या होता और मैंने सच-मुच जहर खाकर खुदकशी कर ली होती। मुझ पर जुल्म हुआ है। आपको याद होगा, साड़ी मिलने पर मैंने आपको धन्यवाद का पत्र लिखा था और आपसे प्रार्थना की थी कि आप मुझे अवश्य मिलें। अच्छा ही हुआ, आप न आए; क्योंकि मेरी पहली खुशी देखकर आपको बहुत ताज्जुब होता। मेरे जीवन में क्रान्ति क्या आई, मानो जीवन में भूकम्प आया हो, जिसके आगमन के विषय में किसी को भी कुछ पता नहीं होता! मुझे मालूम नहीं था कि विज्ञान के युग में सुन्दर पुरुष भूठे और धोखेबाज हो सकते हैं। मुझे उससे प्रेम हो गया और उसने भी अपने प्रेम को दर्शाया। वह इतनी सुन्दर बातें करता था कि सुनकर मेरे हृदय में नाचने की और नाचते चले जाने की प्रबल इच्छा होती थी; किन्तु...किन्तु। यह सब एक स्वप्न मात्र था। उसने मुझसे कहा कि मैं बहुत बड़ा आदमी हूँ। उसने प्रेम के आवेश में एक अच्छा किमती सूट भी भेंट किया, साथ मुझे एक अंगूठी भी बनवा कर दी और उसने अपने वचन के अनुसार शीघ्र ही विवाह करने की इच्छा प्रकट की। मेरे माता-पिता तो थे नहीं; जिनसे मैं आज्ञा लेती। अपनी इच्छा की मालकिन आप थी, इसलिए तैयार भी हो गई, उससे विवाह के लिए और साथ चलने के लिए। तब...तब! मुझसे विवाह करने के लिए वह मुझे लाहौर ले आया और हम दोनों उसी होटल में ठहरे; जहाँ आप भी कुछ दिन रहे हैं। सात आठ दिन तक मुझे उसने हरेक तरह से खुश रखा; किन्तु एक दिन प्रातः उठकर मैंने क्या देखा कि उस का सामान आदि सब कुछ जा चुका है और उसका कहीं पता नहीं? मैंने खोजने की बहुत कोशिश की; परन्तु उसका कोई ठिकाना भी तो

नहीं। मैंने कितनी बड़ी गलती की, आप विश्वास करें, मैं उसका पूरा नाम भी न पूछ सकी। खुदा जाने वह कौन था और कहाँ का रहने वाला था, क्या करता था ? मेरी अक्ल पर जैसे पत्थर पड़ गए थे। नर्सिंग-होम छोड़कर उसके साथ चली आई विवाह रचाने ! मैं कितनी खुश थी। विवाह के पश्चात् घर बनाने और सजाने के लिए मैंने मन ही मन में क्या-क्या नहीं सोचा था, पर अब मैं क्या करूँ ? हस्पताल भी वापिस नहीं जा सकती हूँ। नर्सें क्या कहेंगी और सिस्टर मेरा कितना मजाक उड़ायेगी ? मैंने खुदकशी करनी चाही; मगर अब मैं खुदकशी करना भी नहीं चाहती। मुझे जीवित रहने की प्रवल इच्छा है। वह मुझसे विवाह न करता, तो मेरे साथ इसी प्रकार रहता, खुदा की कसम मैं खुश थी; किन्तु वह कितना जुल्मी निकला ? मैं यह नहीं कहती कि मैंने उस पर कोई उपकार किया है ? यह तो मैं उसका उपकार मानती थी कि उसने मुझे एक नए संसार का रास्ता बताया और मुझे खुश करने के उपाय किये; किन्तु वह तो मुझे धोखा दे गया। उसने जुल्म किया। यह जुल्म नहीं तो और क्या है ? होटल वाले मुझे सन्देह-भरी दृष्टि से देखते हैं। बैरे मुझे ऐसे देखते हैं, मानो मैं 'चिड़ियाघर का पक्षी हूं। मैं अभी तक केवल इसलिए यहाँ ठहरी हूं कि होटल वाले समझें कि कोई खास बात नहीं हुई; किन्तु ऐसा मालूम होता है कि इनको सब बातों का पता है ? क्योंकि एक दिन बूढ़े बैरा ने मुझसे कहा—"मेम साहब ! वह आपका साहब अब नहीं आयेंगे, आप चली जायें।"

"मैंने धन्यवाद की जगह पर उसे गालियाँ दीं। क्या करूँ मैं चिड़-चिड़ी हो गई थी ! अब मेरे हृदय में शान्ति आ गई है, आपको देखकर मुझे ऐसा लगता है कि जो कुछ हो चुका है उसका विचार मेरे मन से दूर हो जाए, मुझे दोस्त की आवश्यकता है ; किन्तु...किन्तु यह मेरी दूसरी भूल होगी। यदि मैं आपको दोस्त समझूँ, क्या पता आप

मुझे पसन्द करें या न करें ? हस्पताल में आप कुछ दिन रहे और आपने मेरे साथ सदा ही अच्छा वर्ताव किया । इसलिए मैंने समझा कि आप मेरे दोस्त बन सकें । अच्छा, तो अब मैं जाता हूं !"

यह सुनकर न जाने सैय्यद को क्यों हँसी आ गई, बोला—"कहाँ जाओगी, बैठ जाओ ?"

उसने उसका हाथ पकड़कर चारपाई पर बैठा लिया । जब वह बैठ गई, तो सैय्यद के शरीर को मानो काट मार गया हो । उसे मालूम हुआ कि उसने एक नवयुवती की कलाई को पकड़कर बिठाया है, मानो वह जन्मजन्मातर से एक दूसरे को जानते हों । कुछ क्षण पहले आँधी और बबूल के समान उठने वाले विचार को, मानो प्रेम-रूपी वर्षा ने शान्त कर दिया हो ! जो कुछ क्षण पहले उठ रहे थे । वह कुछ अधीर-सा हो गया । सैय्यद की व्याकुलता का लाभ उठाते हुए फरिया फिर उठ खड़ी हुई और कहने लगी..."मेरा भी संसार में कोई है यह मुझे आज मालूम हुआ है ! आज से कुछ दिन पहले मैं समझती थी कि सारा संसार ही मेरा है । यह संसार फिर कभी मेरा होगा ? इस प्रश्न का उत्तर तो मैं नहीं दे सकती । पर मैं हस्पताल कभी वापिस न जाऊँगी । लाहौर में कुछ दिन बड़े आनन्द से व्यतीत किये । मेरे दुःख के दिन भी यहाँ ही बीतेंगे । मैं यहाँ किसी दुकान पर नौकरी कर लूँगी और...और बाकी दिन भी इसी ढंग से बीत जायेंगे ।" आहें भरती हुई वह बोली ।

यह कहकर फरिया किवाड़ खोलने के लिये आगे बढ़ी; परन्तु सैय्यद पर उसका जादू चल चुका था । इसलिए उसने उसे रोक लिया, बोला—"मिस फरिया ! जो कुछ तुमने कहा, उसका मुझ पर बहुत प्रभाव पड़ा, खुदा के लिये अब चुप हो जाओ । मैं सोचता हूँ कि

जिस इंसान ने तुम्हें धोखा दिया, वह बहुत नीच है। वैसे तुम्हें धोखा देना कोई बड़ी बात नहीं पर तुम इस योग्य नहीं हो। कि तुम्हें धोखा दिया जाये, मुझे तुम पर पूरा भरोसा है! जो कुछ हो चुका, उसे भुला देना ही ठीक है।'' फिर एकदम नए ढंग से सैय्यद ने कहना शुरू कर दिया...''फरिया, माफ़ करना! तुम एक नासमझ इंसान के पास आई हो। तुम समझती हो, मै औरतों के विषय में भली प्रकार जानता हूँ। खुदा जानता है, तुम सबसे पहली लड़की हो, जिसके साथ मैं खुलकर बाते कर रहा हूँ। हस्पताल में तुमसे जितनी भी बातें हुई थीं, वह सब दिखावा था। इसी कारण में एक ऐसी औरत समझ कर बातें करता था, जिसके साथ बिना जवाब के बातें कर सकता हूँ। तुम हमारी सोसायटी को नहीं जानती, हम लोग सिर्फ अपनी माँ और बहन के इलावा दूसरे किसी को नहीं जानते, तुम्हारे यहाँ मर्द और औरत के बीच में एक बड़ी भारी दीवार खड़ी है। अभी-अभी मैंने तुम्हारी कलाई पकड़ कर तुम्हें चारपाई पर बिठाया। जानती हो, मेरे बदन में एक हलचल सी मच गई थी। तुम इस बन्द कमरे में मेरे पास खड़ी हो, जानती हो मेरे ख्याल दिमाग में काँटे के समान खटक रहे हैं। मुझे भूख लग रही है, मेरे पेट में हलचल मच रही है। इस रूह और बदन की शक्ल एक समान हो गई है। तुमने अपने अपने प्रेमी की बात कही और मेरे दिल ने ख्वाहिश जाहिर की कि उठकर तुम्हें दिल से चिपका लूँ और इतना भींचूँ, इतना भींचूँ कि खुद बेहोश हो जाऊँ; किन्तु मैं अपने को वश में रखने का आदी हूं इसलिए मैं कितनी ही तमन्नाओं को कुचल चुका हूं, तुम ताज्जुब में क्यों हो? मैं सच कहता हूँ, औरत के विषय में अब तक मेरी कोई भी तमन्ना पूरी नहीं हुई। तुम सबसे पहली हो; जिसे मैंने इतना अपने पास देखा है, यही कारण है मैं...मैं...और पास आना चाहता हूं, किन्तु...किन्तु मैं शरीफ़ आदमी हूं, मैं तुम से प्यार

नहीं करता । पर इसका मतलब, यह नहीं कि मैं तुमसे नफ़रत करता हूं । यानी मुझे तुम से प्यार नहीं, इसलिए तुम्हारे प्रति खिचाव नहीं, यह बात नहीं, है । प्यार...प्यार मैं नहीं समझ सका कि यह प्यार कौन-सी आफ़त का नाम है ? तुम्हें आश्चर्य होगा, मुझे एक ऐसी औरत से प्यार है, जो प्यार के लायक ही नहीं । मुझे उससे घृणा है । खुदा कसम ! उसके नाम से ही नफ़रत है; किन्तु मुसीबत यह है कि इस नफ़-रत ने मेरे दिल में उसके प्रति प्यार के अंकुर बो दिये हैं ।''

फरिया ने पूछा—''कौन है वह लड़की ?''

''कौन है ! तुम उसे जानकर क्या करोगी ? एक मामूली लड़की है, जो बहुत समय पहले औरत का रूप धारण कर चुकी है । उसका दिल और दिमाग हर किस्म के लुत्फ से खाली है । वह हाड़ और मांस की पुतली के समान है, इससे अधिक कुछ भी नहीं । मेरे घर में नौकर है, पहले किसी और की नौकरी करती थी ? मैं इसी कारण अमृतसर छोड़कर चला आया हूँ । उसे देखकर मेरे सीने में आग धधक उठती है । मैं चाहता हूँ कि अपने ढंग से प्यार करूँ; किन्तु वह...वह मिस फरिया ! खुदा के लिये मुझसे न पूछो कि वह प्यार को क्या सकझती है ? मैं जानता हूं, समझता हूं कि प्यार में सभी बातें ठीक हैं, जो उसके दिमाग में हैं; किन्तु मैं यह भी तो चाहता हूँ कि कभी-कभी किसी अच्छी बात पर, किसी शायर की लाइन पर, किसी तस्वीर या चित्र को देखकर तड़प उठे; किन्तु उसकी आँखें इन सभी चीजों के लिये बन्द है । मैं दिमाग में सोचता हूँ, वह पेट से सोचती है । वास्तव में सारा झगड़ा यह है कि मैं उससे प्यार करता हूँ और उसने प्यार के लिये मेरे दिल के किवाड़ दूसरे प्यार के लिये बन्द करा दिये हैं, मुझे हमदर्दी की जरूरत है ।''

यह कहकर सैय्यद, मानो सारा बोझ उतारकर चारपाई पर हांपता हुआ बैठ गया । मिस फरिया ने उसकी कमर पर यूँ हाथ फेरा,

जैसे बच्चे को दिलासा देते हैं। सैय्यद को फरिया की सहानुभूति से आत्मिक सान्त्वना मिली। उसकी माँ प्राय: उसकी कमर पर ऐसे ही हाथ फेरा करती थीं किन्तु फरिया के हाथ में कुछ और ही आनन्द पाया और उसे ऐसा अनुभव हुआ कि वास्तव में उसकी सहायता करनी चाहिए। संसार की सभी स्त्रियों को चाहिए कि उसकी कमर पर उसी प्रकार प्य र से बँधा हुआ हाथ फेरें और उसे सान्त्वना दें। सहसा कुछ विचार आया और उसने फरिया का दूसरा हाथ जो खाली था, उठाकर अपने हाथ में ले लिया और धन्यवाद के ढंग से उसे दबाना शुरू कर दिया।

फरिया ने अपना हाथ उसके हाथ में रहने दिया और कहा—"यह अजीब बात है कि तुम एक औरत से प्यार करते हो और साथ ही प्यार करना भी नहीं जानते। वहाँ से भाग आए हो और अब तुम किसी और लड़की से भी प्यार नहीं करना चाहते!"

सैय्यद ने उसका हाथ छोड़ते हुए कहा—"यहाँ तो चाहने या न चाहने का सवाल ही नहीं उठता। किसी भी औरत से प्यार करने के लिए मैं कितने साल जलता रहा, इसका तुम्हें कुछ भी पता नहीं और प्यार के बारे में जो कुछ भी मेरे दिमाग में है वह भी तुम नहीं जानती? जिस मुसीबत में मैं फँसा हूँ, उसका निर्माता भी मैं ही हूँ। उसकी प्रेम शक्ति में किसी बाहरी शक्ति ने नहीं फँसाया। मैं खुद उस जाल में फँसा हूँ और अब खुद ही भाग आया हूं। असल...असल में मैं यह कहना चाहता था कि जब मेरा दिल एक औरत से भरा हुआ है, तो दूसरी औरत से कैसे प्यार कर सकता हूँ? जो भावुकता उसके प्रति मेरे दिल में पैदा हुई, तुम्हारे लिए या किसी अन्य के लिए नहीं हो सकती? मैं जब उसका विचार अपने दिमाग में लाता हूँ, तो खुद को बे-गुनाह और मजबूर पाता हूँ, किन्तु तुमसे बात-चीत करते वक्त या तुम्हारे ख्याल दिमाग में लाकर अपने को मजबूर नहीं समझता। शायद तुम

मेरा इशारा नहीं समझीं ?" यह कह-कर वह उठ खड़ा हुआ ।

फरिया ने मुस्करा-कर इसकी ओर देखा, फिर बोली—"दुनिया में कई तरह के आदमी रहते हैं । मैं बहुत कोशिश करती हूँ कि उसको जिसने मुझे अभी धोखा दिया है और उन लोगों को भी, जो मुझे पहले धोखा दे चुके हैं, जंगली आदमी समझूँ, किन्तु ऐसा करने में मैं हमेशा नाकामियाब रही । मैं उलटा यह सोचती हूँ, शायद मैंने ही उन पर जुल्म किए हों । क्या पता मुझ से कोई ऐसी गलती हो गई हो, जिसकी वजह से उन्हें कुछ दुःख पहुँचा हो ? कभी-कभी गुस्से में आकर उनको बुरा-भला कह उठती हूँ और बाद में पश्चाताप भी करती हूँ । तुम नर्स की जिन्दगी को तो अच्छी तरह नहीं जानते, हस्पताल में जो भी आता हैं, रोगी और दुःखी होता है । हर एक रोगी को हमारी सहानुभूति और और देखभाल की जरूरत होती है । लोग मुझसे प्रेम-प्यार की बात करते है और मैं समझती हूँ, उन्हें कोई खास बीमारी है, जिसकी दवाई मेरे पास है, क्योंकि मैं...मैं...मैं पागल हूँ...और तुम...।"

"मैं···मैं बहुत बड़ा पागल हूँ ।" सैय्यद ने मुस्कराते हुए कहा ।

फरिया मुस्कराई और अचानक उसने सैय्यद के अधरों को चूम लिया । कुछ देर के लिए प्यार की वजह से सिट्टी गुम हो गई और वह घबड़ा गया, बोला—"मिस फरिया ! यह क्या !" फिर कुछ संभल कर कहा—"ओह ! ओह ! कुछ नहीं ! वास्तव में मैं ऐसी चीजों का इच्छुक नहीं हूँ ।" कहकर उठ खड़ा हुआ । कृत्रिम हँसी हँसकर पुनः कहा—मैं आपको इस अभिवादन के लिए धन्यवाद दे रहा हूँ ।"

यह सुनकर फरिया बहुत खुश हुई, बोली—"धन्यवाद ! धन्यवाद ! तुम अभी बिल्कुल बच्चे हो । इधर आओ...और खुद आगे बढ़कर उसने उसको अपने हाथों में जकड़कते हुए, अधरों पर अधर जमा दिए ।

अब सैय्यद कुछ अधिक घबड़ा गया था । उसने कहा—"मिस

फरिया ! मिस फरिया !"

फरिया ने हटकर इसकी ओर देखते हुए कहा—"तुम बीमार हो ! तुम्हें एक नर्स की जरूरत है।"

अपनी घबराहट को छुपाते हुए, सैय्यद ने मुस्कराने की कोशिश की और फरिया से कहा—"मुझे सिर्फ एक नर्स ही नहीं ? इसके अलावा बहुत सी चीजों की जरूरत है; मगर मुसीबत यह है कि सब चीजें हासिल नहीं होतीं, मैं—तुम से पहले भी कह चुका हूँ कि कितनी ही तमन्नाएँ दिल में अपाहिज हो चुकी हैं। मेरे बहुत से ख्याल लंगड़े हो चुके हैं।—अब तो यह हालत हो चुकी है कि जिसे मैं खुद भी नहीं समझ सकता कि मैं क्या हूँ ? और क्यों हूँ एक चीज की ख्वाहिश करता हूँ; पर साथ ही यह भी सोचता हूँ कि इस ख्वाहिश को जाहिर न करूँ। इस में मेरी भी और कुछ बैठक (सोसायटी) की भी गलती है। मैं एक बहुत बड़ा आदमी होता, यानी मेरे अन्दर हर तरह की बर्दाश्त करने की ताकत होती, तो यह दूसरी बात है; लेकिन अफसोस है कि मैं एक मामूली-सा आदमी हूँ; जिसका दिमाग ऊँचे स्थानों पर उड़ान करना चाहता है, यह कितनी बड़ी 'ट्रेजडी' है ?'

फरिया ने उसकी बात सुनी और कुछ देर के बाद बोली—"लेकिन मैंने तो कभी भी अपने आपको मामूली औरत नहीं समझा और शायद सारी मुसीबतों की यही जड़ हो। मैं हमेशा यही सोचती आई हूँ, कि मैं मामूली औरत नहीं हूँ। मुझ में मुहब्बत करने की ताकत दूसरी औरतों से ज्यादा है; लेकिन आश्चर्य की बात है कि मैं किसी एक आदमी को हमेशा के लिए रखने में कामियाब न हो सकी ? मेरी समझ में नहीं आता कि आदमी औरत से क्या चाहता है ?"

"मेरा ख्याल है कि ऐसी बातों के बारे में ख्याल ही नहीं करना

चाहिए। ग्रादमी ग्रौरत में क्या चाहता है या ग्रौरत ग्रादमी में क्या चाहती है। दोनों मिलकर क्या चाहते हैं? यह चाहने की बात बहुत लम्बी है, जो कभी खत्म न होगी। ग्राग्रो, कुछ ग्रौर बातें करें। हां! यह बताग्रो, ग्रब तुम क्या करना चाहती हो?"

फरिया जोर से हँसी, फिर ग्रपनी हँसी रोक कर बोली—"भला चाहने के विचार की सीमाग्रों का भी कहीं ग्रन्त है?"

सैय्यद भी हँस पड़ा। उसने उसकी हँसी में जैसे दाद दी हो। उसने कहा—"फिर भी कहो तो।"

फरिया बोली—"मैं बहुत दुखी थी; लेकिन इन बातों ने सब दुःख दूर कर दिए हैं। वैसे तो मैं ज्यादा देर तक तड़प भी नहीं सकती; लेकिन जो बातें ग्रापके ग्रौर मेरे साथ हुई हैं, वे इतनी ग्रच्छी ग्रौर इतने सुन्दर ढंग से हुई हैं कि मैं तीन-चार दिन से जिस थकान को महसूस कर रही थी, वह ग्रब सारी दूर हो गई है! मैं ग्रब भविष्य के लिए ठंडे दिमाग से सोच सकूंगी।"

"क्या ख्याल है?" सैय्यद ने पूछा।

"कोई विशेष ख्याल तो नहीं। हाँ, लेकिन ग्रमृतसर वापिस न जाऊँगी; क्योंकि मुझे फिर डर रहेगा कि कहीं कोई ग्रादमी कम्पनी बाग में न ग्रा निकले ग्रौर मेरी कमजोरियों से फायदा उठाकर चलता बने? मैं ग्रब लाहौर में ही रहना चाहती हूं। ग्राप कब तक यहाँ रहेंगे?"

सैय्यद ने उत्तर दिया—"यह मैं नहीं कह सकता; लेकिन फिर भी ख्याल है. दो-ढ़ाई महीने यहाँ रहूँगा। मैं खुद ग्रमृतसर नहीं जाना चाहता।"

फरिया ने कहा—"तो मैं भी दो-ढ़ाई महीने तक यहाँ रहूँगी ग्रौर

इसके बाद कोटा चली जाऊँगी । वहाँ मेरी एक बहन रहती है । उसके बाद फिर कहाँ जाऊँगी, इसके बारे में सोचना ही बेकार है । मेरे पास दो सौ रुपये थे, जिनमें होटल आदि का किराया दे दिला कर पूरे सौ बाकी हैं । इनसे क्या दो महीने गुजारा नहीं हो सकेगा ?"

"हो जायेगा, लेकिन उस हालत में जब तुम फिजूल खर्च न करो । मेरे पास सिर्फ दो सौ रुपये हैं और मैंने इन रुपयों से यहाँ ज्यादा से ज्यादा वक्त काटना है । जब अमृतसर से चला था, तब माँ ने ढ़ाई सौ रुपये दिए थे । मेरा विचार है कि ये ढ़ाई सौ रुपये मुझे देकर और हस्पताल की फीस देकर उनके पास केवल डेढ़ हजार बाकी बचा होगा, जो हमारी कुल पूँजी है ।"

८

***

सैय्यद ने बिल्कुल ठीक कहा, इसलिए कि इसकी माँ के पास मुश्किल से डेढ़ हजार के लगभग बचा था। बाप दस हजार रुपये छोड़ कर मरा था; जिनमें से कुछ उसने फिजूल खर्चियों में नष्ट कर दिये और कुछ इधर-उधर खर्च कर दिये। हालांकि सैय्यद ने इन रुपयों का उपयोग शारीरिक ऐय्याशी पर नहीं किया; अपितु उसको बचपन से निराले ही शौक थे। माँ से बहाने बनाकर या खुद सन्दूक से रुपया निकाल कर उसने चोरी-चौरी यानी बाहर ही बाहर कई साइकिलें खरीद

ली और आनन्द की बात तो यह थी कि वह खुद साइकिल भी चलाना नहीं जानता था। उन साइकिलों को उसके दोस्त चलाते और वह खुश होता। इस प्रकार उसने घर से बहुत रुपया चोरी करके एक छोटी सिनेमा की मशीन खरीदी थी, जिसका मूल्य साढ़े तीन सौ के लगभग था, जिसे वह कभी भी नहीं चला सका। इसलिए कि उसके दोस्त के घर बिजली नहीं थी, जहाँ उसने उसको छिपा कर रखा था। दो बार भाग कर बम्बई गया और साथ अपने दोस्तों को भी ले गया। वहाँ भी कोई ऐय्याशी नहीं की; किन्तु फिर भी सारा रुपया खा खिला कर हाथ झाड़ते हुए वापस आ गये।

सैय्यद का बाप सदा ही उससे नाराज रहता था। वह बहुत ही तेज स्वभाव का व्यक्ति था, उसको अपने लड़के की बातों पर बड़ा क्रोध आता और उसको कठिन से कठिन दंड भी देता; किन्तु वह अपने जीवन में उसको न सुधार सका। सैय्यद की माँ उसके पिता से बिल्कुल विपरीत थी, यानी बहुत ही शान्त स्वभाव की थी। उसे अपने बच्चे से इतना प्यार था कि यदि किसी से उसकी बात की जाये तो एक अच्छा खासा उपन्यास बनाया जा सकता है। सैय्यद के लिए उसने बहुत दुःख उठाए, अनेक बातें सहीं और उसकी प्रत्येक इच्छा को पूरा किया। वह लोगों से कहती थी—"मेरा बेटा फजूल खर्च है उसको आगे पीछे का रत्ती भर भी ख्याल नहीं। भले ही वह जिद्दी है; किन्तु उसका दिल बुरा नहीं। तुम देख लेना, एक दिन सब गरीबी धो डालेगा।"

अब भी उसका यही विचार था कि उसका फजूल-खर्च बेटा एक दिन अवश्य ही बड़ा आदमी बनेगा और सब ताज्जुब में पड़ जायेंगे। माँ के हृदय में ऐसी बातों का उठना भी स्वाभाविक ही था; क्योंकि प्रत्येक माँ अपनी सन्तान के विषय में ऐसा ही सोचती है। इसके साथ ही सैय्यद की माँ पर्ले दर्जे की खुश और खुदा पर भरोसा रखने वाली

औरत थी, इसलिए वह कभी निराश नहीं होती थी। उसको खुदा के घर से उम्मीद थी कि उसका बेटा एक दिन अवश्य ही सुधर जायेगा। उसके सभी दुःख दूर हो जायेंगे। वह सदा ही सैय्यद के लिए दुआ मांगती रहती थी ; क्योंकि उसका कहना था कि आदमी खुद बुराइयाँ नहीं छोड़ सकता और सिर्फ खुदा की मेहरबानी से ही बुराइयाँ दूर हो सकती हैं। अतः सैय्यद से उसने इसीलिए कभी बहस न की।

इधर उसका बेटा सैय्यद खुदा के नाम से अनभिज्ञ था। यह अनभिज्ञता जाहिर नहीं थी ; क्योंकि सब कामों में उसे अपना ही हाथ दीख पड़ता था। वह एक तेज-धारा में बहता हुआ जा रहा था, एक जमाने से उसके विचार अनेकों रूपों में निकल-निकल कर इधर-उधर बिखर रहे थे।

उसका जीवन, एक ऐसी कहानी के समान था, जो किसी भी सफे पर न लिखी गई हो, जिस प्रकार कहानी का प्लाट बनाते समय लेखक के विचारों को तनाव आ जाता है और बड़ी घटनाओं और छोटी घटनाओं का ढेर सा लग जाता है। ठीक इसी प्रकार सैय्यद का जीवन भी घटनाओं से भरा हुआ था।

वह एक ऐसे मार्ग पर चल रहा था जो न कभी खत्म हो सके। बड़ी तेजी के साथ, जो कुछ पीछे छोड़ दिया, उसकी चिन्ता नहीं करता था और न ही आगे आने वाले की चिन्ता करता था। वह भूत और भविष्य के बीच में वर्तमान की पगडंडी पर खेल रहा था। ऐसा खेल, जिसे समझने की चेष्टा करते हुए भी न समझ सका।

बाप की मार और माँ का प्यार उस पर न चढ़ सका। वह अपने जीवन को समझने के लिए ऐसे रास्ते पर चलता रहा, जो कभी भी आसान या कठिन बन सकता था।

उसका बाप, उसके कामों को देख कर खेद करता हुआ मर गया।

बाप की मृत्यु ने, उस पर काफी असर डाला, वह कई घन्टे तक बाप के मृतक शरीर पर रोया ; किन्तु उसका दिमाग शोक के आंसुओ के आगे भी देखना चाहता था। आगे बहुत आगे, औरतों की चीखों और रोने धोने की भयंकर आवाजों के बीच में, उसका मन ऐसी आवाजकी खोज कर रहा था, जिसको सुनकर उसकी आत्मा को शान्ति मिले। उसके नेत्र रोएँ, उसका सारा शरीर रोया। बाप की मृत्यु का उसे बहुत ही दुःख था ; किन्तु रोते-रोते उसे ख्याल आया कि मैं रो रहा हूँ। यह लोग जो आस-पास बैठे हैं, क्या मन में विचार नहीं करते कि ये सब ढोंग है। इस विचार ने मानो सैय्यद को किसी दूसरे संसार में फेंक दिया हो ? उसके अश्रु शुष्क हो गये और देर तक वह अपने मृतक बाप के मुख की ओर देखता रहा, जिस पर उसके भ्रष्टाचार पर क्रोध और घृणा के मिले-जुले भाव प्रकट कर रहा था।

बाप को जब कब्र में छोड़, अपने दोस्तों और सम्बन्धियों के साथ वापिस आया था, तो रात के अकेले में उसे महसूस करके आश्चर्य हुआ कि वह बहुत हल्का हो गया है मानो उसके शरीर पर मनों बोझ लदा हुआ हो। उसका अर्थ समझने की कोशिश की; किन्तु असमर्थ रहा।

बाप की मृत्यु के पश्चात् एक दिन उसने बहुत से विचारों को हृदय में इकट्ठा किया और फैसला किया कि अब वह नया रास्ता ढूंढ़ेगा, चलेगा और अपने पुराने रास्ते पर भी डटा रहेगा; किन्तु ये नया रास्ता दो या तीन मोड़ों के पश्चात् ही पुराने रास्ते पर ले आया। जिस पर वह बहुत देर से चला आ रहा था। जब इस विषय में कुछ विचार आया तो सोचा कि जिन्दगी खुद रास्ता बनाती है। रास्ते जिन्दगी नहीं बनाते इसी कारण अधिक सोच-विचार के बिना ही चलता रहा और चलते-चलते उसकी राजो से मुठ-भेड़ हो गई। उस से छुट्टी पाने के हेतु लाहोर

भाग आया, तो यहाँ मिस फरिया से भेंट हो गई। उसे ऐसा महसूस होने लगा कि इस लड़की के कारण उसे अपनी यात्रा कुछ दिनों के लिए स्थगित करनी पड़ेगी।

मिस फरिया से प्यार करने का विचार फजूल है; क्योंकि इसे उस दृष्टिकोण से देखना ही नहीं है। फरिया सुन्दर थी, इसमें वे सभी बातें थीं, जो मर्दों की तमन्ना पूरी कर सकती हैं। इसके अलावा वह एक ऐसे स्वभाव की मालिक थी, जो सैय्यद के दिमाग में बिल्कुल फिट बैठता हो। खुदा ने इन दोनों को एक दूसरे के समीप कर दिया। सैय्यद के दिल में इच्छा हो रही थी कि फरिया को छूकर देखे, इसको समझे, इसके जीवन की सीमा देखने का विचार उसके दिमाग में ही नहीं उठा था। वहाँ रहते-रहते जब दो दिन गुजर गये तो तो तीसरे दिन उसने साहस करके अपने हृदय की बात गोल-मटोल ढंग से कहते हुए कहा—"देखो मिस फरिया ! देखो..." किन्तु इससे अधिक वह कुछ न कह सका।

सैय्यद की इस अधूरी अभिव्यक्ति पर फरिया ने कहा—"कुछ कहते-कहते क्यों रुक जाते हो, कहो क्या कहना चाहते हो? कहो, जो कुछ चाहते हो, कहो।"

"मैं नहीं कह सकता। अल्फाज मेरी जबान पर आते हैं और फिर न जाने क्यों वापस चले जाते हैं? यह मेरी कमजोरी कभी दूर न होगी। मैं कुछ नहीं कहना चाहता।"

"यह और भी बुरा है। तुम कुछ कहना चाहते हो और कुछ कहना भी नहीं चाहते और...और की यह क्या बीमारी है?"

"मैं तुम से कई बार कह चुका हूँ कि मेरा लालन-पालन ऐसे वातावरण में हुआ, जहाँ आजादी का नाम लेना और आजादी आदमी

का बड़ा भारी कसूर माना जाता था जहाँ सच्ची बात कहने वाला असभ्य और झूठी बात कहने वाले को सभ्य माना जाता है।"

"इसमें मेरा क्या कसूर है। मैं...मैं! तुम से अधिक क्या कहूं? तुम सुन्दर हो, तुम्हारी बातें भी मुझे अच्छी लगती हैं। मैं भी बुरा नहीं, लेकिन...फिर...लेकिन फिर...और तुम्हारा वह प्यार। तुम्हारे प्यार भरे अधर मेरे अधरों पर अभी तक चल रहे हैं। क्या यह सदा चलते रहेंगे?"

फरिया ने आश्चर्यजनक दृष्टि से देखा और कहा—"एक और प्यार तुम्हारे अधरों पर चलाऊँ। दो हो जायेंगे, तो अच्छा रहेगा।"

यह सुन कर सैय्यद ने थोड़ी देर सोचा और कहा—"मिस फरिया, मैं तुम से एक बात पूछूं...?"

"बड़े शौक से, एक की जगह दो पूछो, तीन पूछो; बल्कि जब तक जी चाहो, पूछते जाओ।"

"मैं पूछता हूं, क्या तुमसे प्रेम करना जरूरी है? यानी बिना प्रेम के दोस्ती नहीं हो सकती।"

"तुम्हारा यह प्रेम अनोखे ढंग का है। प्यार के बिना दोस्ती कैसे हो सकती है और दोस्ती के बिना प्यार भी तो नहीं किया जा सकता? तुम व्यर्थ की उलझनों में यों ही फँस रहे हो।" यह कहते-कहते उसके कपोल लाल हो गये। वह तेज स्वर में बोली—"मैंने तो कभी इस प्रकार की बातों पर कभी विचार ही नहीं किया और ऐसी बातों पर विचार ही कौन करता है? सोच-विचार के लिए और थोड़ी बातें हैं।"

"फरिया, मैं एक नए संसार की सीमा पर खड़ा हूँ। जाने से पहले मैं बहुत कुछ सोचना चाहता हूँ; किन्तु यह अजीब उलझन है कि सोच ही नहीं सकता; किन्त मुझे विचार जरूर ही करना है, इसके बिना

काम न चलेगा ?"

फरिया के कपोल और भी लाल हो गये। बोली—"तुम बिल्कुल बच्चे हो, इसके बिना ही अच्छी तरह निर्वाह हो सकेगा। तुम...तुम ...तुम आखिर क्या चाहती हो तुम ?"

फरिया के इस सवाल ने सैय्यद को परेशान-सा कर दिया।

"मैं......मैं...क्या चाहता......मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास रहो।"

यह कह कर सैय्यद को ऐसा महसूस हुआ, मानो उसका हृदय खाली हो गया हो, जैसे मोटर के टायर से हवा निकल गई हो। वह घबड़ाया सा उठा और तेजी से कमरे से बाहर निकल आया। फरिया बैठी रही। उसका विचार था कि वह शीघ्र ही आजायेगा, किन्तु जब दस पन्द्रह मिनट व्यतीत हो गए, तो उसने उठकर बाहर बालकोनी में देखा, तो वहाँ कोई भी नहीं था ? जब नीचे बाजार की ओर देखा, वहाँ भी सैय्यद नहीं था। फरिया को बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसे अकेली छोड़कर न मालूम कहाँ भाग गया ? इसलिए वापिस कमरे में आकर वह सैय्यद की प्रतीक्षा करने लगी।

दिन भर वह उसके इन्तजार में बैठी जाने क्या सोचती रही। जब शाम होने को आई तो सैय्यद वापिस आया और कमरे में जाने लगा; पर कमरा अन्दर से बन्द था। उसने धीरे से दस्तक दी। थोड़ी देर के पश्चात् दरवाजा खुला और ज्यों ही उसने कमरे में प्रवेश किया, तो फरिया ने तुरन्त ही दरवाजा बन्द कर दिया और कहा...तुम्हें शर्म नहीं आती। इतनी देर के बाद घर वापिस आए हो। लेकिन छोड़ो इन बातों को। बताओ क्या खाओगे और कहाँ खाओगे ? मुझे बड़ी भूख लग रही है।"

वह उत्तर में फरिया से कुछ कहने ही वाला था कि उसकी दृष्टि चारपाई पर गई। विस्तर विछा हुआ था, सिरहाने के समीप उसका नावल पड़ा था, वह अभी तक उसने आधे के लगभग ही पढ़ा था। उसके चारों जूते वड़े अच्छे ढंग से रखे हुए थे। चमड़े के सूटकेस एक ओर रख दिये थे। सामने खिड़की की सिल पर टाईमपीस टक्-टक् कर के अपनी ओर बुला रही थी। इधर-उधर जो गुसलखाना है, उसका दरवाजा खुला है और उसने देखा स्टेण्ड पर तौलिया लटक रहा है उसको ऐसा अनुभव हुआ कि वे वहुत दिनों से इस कमरे में रहा है और फरिया को वहुत देर से जानता पहचानता है यह सब कुछ देखकर उसकी प्रसन्नता की सीमा न रही। प्रसन्नचित्त सैय्यद ने कहा—"फरिया! कई वातों की कमी रह गई है। इधर जंगले पर तुम्हारे धुले हुए वनियान लटकने चाहिएँ और साथ वाला कमरा खाली पड़ा है, इसमें तुम्हारा सिंगार-मेज होना चाहिए और उस पर पाउडर और क्रीमों के डिब्बे बिखरने चाहिए और...और। यदि एक झूलना भी आ जाये, तो क्या हो अच्छा हो? वल्लाह पूरा परिवार ही इकट्ठा हो जाये और मैं...मैं...लेकिन मैं जरूरत से ज्यादा तो नहीं कह गया।"

फरिया ने आगे बढ़कर अपनी बाहें इसके गले डाल दीं और बोली —"तुम फजूल की वातों को दिमाग में-स्थान न दिया करो। साथ वाला कमरा कल ही लेना चाहिए। सिंगार-मेज भी रहे, किन्तु यह झूलने की वात ठीक नहीं है। मैं इतनी जल्दी औरत वनने की इच्छा नहीं रखती। ख्याल रहे कि तुम पति वनने योग्य भी नहीं हो। अच्छा वताओ, खाना खाने के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? मैं कहती हूँ कि वहीं होटल में अन्तिम भोज उड़ाया जाये और किराया आदि चुका कर मैं अपना सारा सामान यहाँ ले आऊँ।"

यह सुन कर सैय्यद कुछ घबड़ाया। फरिया की बाहें उसने अपने गले से हटाकर कहा—"लेकिन ! लेकिन इस कमरे में दो व्यक्तियों के लिए स्थान ही कहां है ?"

हटाओ जी !" फरिया ने अपने हैंडबेग को खोलकर कपोलों पर पाउडर लगाते हुए कहा —"देखा जायगा। इस कमरे में आधी दर्जन तो बीमार समा सकते हैं और हम सिर्फ दो ही हैं। असल में तुम बिल्कुल बुद्धू हो। तुम्हें कुछ भी मालूम नहीं कि घर-बार कैसे चलाया जाता है ? चलो ! अब बाहर चलें ?"

९

***

सैय्यद अब बहुत ही खुश था। फरिया के साथ रहते हुए आज पूरे दस दिन हो गए थे उसे। साथ वाला कमरा भी उन्होंने किराये पर ले लिया था। सिंगार-मेज भी आ गई थी और इधर दूसरे कमरे में एक छोटी तिपाई और तीन कुर्सियाँ भी लाकर रख दी गई थीं। जिन्दगी बड़ी ही खुशी से गुजरने लगी।

फरिया भी खुश थी। उसे इतना अच्छा दोस्त मिल गया था जिसका दिल धोखेबाजी से हमेशा ही खाली रहता है। सैय्यद खुश था

उसे औरत मिल गई । जिन्दगी में पहली बार उसे एसी औरत मिली थी; जिसे वह छू भी सकता था और जिससे वह वेधड़क बातें कर सकता था । उसे कई तरह का तजुरबा था और उसे खुश रखने के बहुत से तरीके आते थे ।

फरिया खुशदिल थी । सुन्दरता की देवी थी और सबसे बढ़कर उसमें यह खूबी थी कि उसका शारीरिक प्यार ही अनोखे ढंग का था । मानो ऐसा प्यार जो सर्दियों में दहकते हुए कोयलों के अन्तर से दिखाई देता है । पूरे दस दिन एक साथ रहते हुए उन्हें बीत गए थे; लेकिन दोनो महसूस करते थे कि दोनों हमेशा ही से इकट्ठे रहें हैं फरिया अपनी जिन्दगी के बारे में फिक्र नहीं करना चाहती थी । सैय्यद के दिमाग में यह ख्याल कभी-कभी भिनभिनाती मक्खी की तरह दाखिल होता था कि अगर मेरे दोस्त या रिस्तेदार ने मुझे इस तरह देख लिया तो क्या होगा और इस ख्याल के आते ही इसका दिमाग चक्कर खाने लगता और एक अजीब तमन्ना उसके मन में उठती थी कि सारी दुनिया रुक जाये ? वह खुद खामोश हो जाए और सब लोग पत्थरों की तरह बन जायें ।

वह सोचता, आखिर यह क्या है ? मै जैसे भी चाहूँ अपनी जिन्दगी गुजारूँ । लोगों को इससे क्या मतलब ? मैं अगर शराब पीता हूँ, तो दूसरों के बाबा का क्या विगड़ता है, अगर मैं किसी औरत को अपने साथ रखना चाहता हूँ, तो इसमें दूसरो से इजाजत लेने का मतलब ही क्या है ? क्या मुझे अपने अच्छे या बुरे का कुछ भी ख्याल नहीं ?

लेकिन वे फिर उसके मस्तिष्क में इस तरह के उठने वाले सवालों पर ख्याल करना ही फजूल समझता है । इसलिए कि वे समाज, की खराबियों को दूर करने की बराबरी नहीं कर सकता था । वह एक

छोटा सा आदमी था; जिसकी आवाज अकेले में भी नहीं उभर सकती थी।

फिर भी वह खुश था। बहुत खुश था, लेकिन इस खुशी के साथ साथ यह ख्याल भी एक पहली लकीर की तरह उसके दिमाग में दौड़ रहा था कि एक दिन जरूर ही वह पकड़ा जायेगा और उसे एक दिन दोस्तों और रिश्तेदारों के सामने लज्जित होना पड़ेगा। सबसे बड़ी बात यह है कि उसे खुद ही लज्जित होना पड़ेगा। अपने ख्यालों के उल्ट वह बिल्कुल मजबूर होगा। वह सब बातें, तो सैय्यद के दिमाग में थीं और वे क्रान्तिकारी ख्याल उसके दिल में जमा थे, वहीं के वहीं रखे रह जायेंगे और उसका सिर झुक जायेगा। उसको लज्जित होना पड़ेगा, बिना किसी बात के ?

यों ही सोच विचार करते हुए दिन निकलते गए, पर एक दिन अचानक फरिया और सैय्यद दोनों शाम का शो चारली-चिपलिन का फिलम माडर्न-टाइमज देखने के लिए गए। जब खेल देखकर सिनेमाहाल से बाहर निकले, तो एक आदमी ने तीखी निगाह से इन्हें देखा। फरिया ने उससे कहा—"यह आदमी तुम्हें बड़े ध्यान से देख रहा है। तुम्हारा दोस्त तो नहीं।"

सैय्यद ने उस आदमी की ओर देखा और मानों जमीन उसके पैर से निकल गई हो। यह उसका दूर का रिश्तेदार था, जो लाहौर में ही रहता था और किसी कालेज में अध्ययन करता था ? उसने सिर के इशारे से ही सलाम का उत्तर दिया और फरिया को बिना साथ लिए भीड़ में घुस गया, जो बड़े फाटक पर लगी थी।

बाहर निकलकर जो पहला ताँगा मिला, सैय्यद उसी में बैठ गया इतने में फरिया भी आ गई। जल्दी से उसको ताँगे में बिठाकर, घर

की तरफ. ताँगे वाले से चलने के लिए कहा। रास्ते में कोई बात नहीं हुई; लेकिन जैसे ही दोनों ताँगे से उतरकर कमरे में आये, तो फरिया ने पूछा..."तुम्हें एकदम क्या हो गया है ? वह आदमी कौन था, जिसके डर से तुम छोड़कर भाग गए ?"

टोपी उतार कर सैय्यद ने चारपाई पर फेंक दी और कहा—"मैं उसका नाम तो नहीं जानता; लेकिन वह मेरा दूर का रिश्तेदार है। अब बात फैलती-फैलती कहाँ से कहाँ तक फैल जायगी, कह नहीं सकता ?"

फरिया जोर से हँसी। फिर उसने अपनी हंसी को रोक कर कहा--"बस इतनी सी बात को नावल बना डाला सरकार ने। अजी हटाओ कौनसी बात कहाँ तक फैलेगी ? तुम बहुत वहमी हो। चलो आओ, इधर मैं तुम्हारे गले की मालिश कर दूँ।"

"क्यों ?" सैय्यद अधीर होकर बोला।

"इधर-उधर की बातें शुरू कर दोगे, तो मुझे वह भूल जायेगा। तुम्हारा कल से गला खराब है, बस अब में कुछ न सुनूँगी। इस पर बैठ जाओ, ठहरो कोट मैं उतारे देती हूँ।"

कोट और टाई उतार कर फरिया ने सैय्यद के गले पर तेल की मालिश करनी शुरू कर दी और इससे वह कुछ देर के लिए उस आदमी वाली घटना को भूल गया।

जब फरिया को उसके भाव के बारे में यह जान पड़ा कि अब वह पहले से कुछ ठीक है, तो मालिश करते-करते वह बोली—"अरे, डिनर खाना तो हम भूल ही गये। तुम परेशानी में यहाँ भाग आये और सारा प्रोग्राम बिगड़ गया। हमारा ख्याल यह था कि सिनेमा देखकर हम 'अस्टफल' में खाना खायेंगे और इस तरह रविवार का दिन आनन्द

मय दिन के रूप में व्यतीत करेंगे। अब क्या ख्याल है ?"

"मेरा ख्याल क्या पूछती हो ? चलो ; लेकिन मुझे तो भूख नहीं है और फिर मेरा गला भी तो ठीक नहीं है।"

"तो ऐसा करो, भाग कर नीचे से डबल रोटी ले आओ। थोड़ा सा मक्खन और पनीर यहाँ पड़ा है, जाम भी है। दो टोस तुम, और बाकी मैं खा लूंगी, यह विचार भी बुरा नहीं कि अस्टफल में खाना अगले इतवार को सही।"

सैय्यद डबल-रोटी ले आया। मिस फरिया ने चुटकियों में ही डिनर तैयार करके तिपाई पर रख दिया, फिर दोनों खाने में व्यस्त हो गये।

एक टोस मक्खन लगाकर फरिया ने उसको दिया और कहा—"यदि इसी तरह खुशी से दिन कटते जायें तो कितना अच्छा हो ? मैं जिन्दगी में और कुछ भी नहीं मांगती, सिर्फ ऐसे दिन, जिस तरह इस टोस को मक्खन लगा है, मांगती हूं।"

सैय्यद अपनी होने वाली बदनामी के बारे में सोच रहा था। उसने फरिया के चिकने-चिकने गालों को देखा और उसके दिल के एक कोने में ख्याल उठा कि वह उठकर उन्हें चूम ले। सैय्यद अभी कुछ भी फैसला न कर पाया था कि फरिया मुस्कराती हुई उठी और अपने मोटे-मोटे तृषित अधर सैय्यद के अधरों पर गिरा दिए।

एक क्षण के लिए सैय्यद को ऐसा अनुभव हुआ कि फरिया के अधरों ने झकझोर कर उसकी आत्मा को आजाद कर दिया हो, यानी उसने जोर से फरिया के कठोर हृदय को अपनी छाती के साथ भींच लिया।

सैय्यद पागलों के समान फरिया के सांवले कपोल और मोटे-मोटे

अधरों और आश्चर्य में फड़फड़ाती हुई काली आँखों को चूमने लगा। फरिया को सैय्यद की आदत पसन्द आई,और उसने अपने आपको उसकी गोद में डाल दिया।

सहसा सैय्यद को फरिया के प्यार का पता चला और जिस तरह थर्मामीटर को बर्फ दिखाने से उसका पारा नीचे गिर जाता है, इसी प्रकार सैय्यद की सारी गर्मी उसके डरपोक हृदय में सिमट आई और वह माथे का ठंडा पसीना पोंछता हुआ, जाने क्या सोच कर उठ खड़ा हुआ ?

जाने क्यों ? फरिया के उभरे हुए मन को बड़ी भारी चोट लगी उसने भरी हुई आवाज में कहा—"क्या बात है सैय्यद ?"

"कुछ नहीं।" यह कहकर सैय्द की गर्दन झुक गई, उसकी बात में कमजोरी थी।

"मैं तुम्हारे योग्य नहीं हूँ।"

यह सुनकर फरिया के प्रेम में रंगे हुए अधर खुले, 'डालिंग' कह कर वह उठी और अपनी दोनों बाँहें उसके गले में डालकर बोली— "पागल मत बनो।"

सैय्यद ने उसी हालत में उत्तर दिया—"मैं खुद नहीं बनता पागल या बेवकूफ ! जो कुछ भी हूँ, मेरा इसमें कोई कसूर नहीं है। यह कहकर उसने फरिया की बाहें धीरे से हटाईं। उसकी आवाज में कुछ और भी दुःख मिल गया था। मुझ में और तुझ में बहुत अन्तर है। तुम आजाद वातावरण की उपज हो, पर तुम अंग्रेज नहीं हो। तुम्हारा रंग शासन करने वालों से नहीं मिलता ; किन्तु तुम फिर भी महसूस करती हो कि तुम्हारा पद हम भारतियों से ऊँचा है ; किन्तु छोड़ो इसको। तुम मुझे डालिंग कह सकती हो, किन्तु अकेले में भी मेरी जबान तुम्हें

डार्लिंग कहने में संकोच करेगी। तुम जानती हो कि तुम्हारा काम क्या है; किन्तु मुझे मेरा काम कुछ और ही बताया गया है। तुम्हारे ख्याल आज़ाद हैं; किन्तु मेरे ख्याल गन्देपानी में फँसे हुए हैं। तुम पूर्ण हो; किन्तु मुझे अधूरा ही समय ने छोड़ दिया—ऐसी जगह पर छोड़ दिया कि मेरे ख्याल कभी भी पूरे न हों।"

फरिया जिसके कानों में अभी तक उसकी हरारत भिनभिना रही थी। सैय्यद को समझाने वाली बातों का अर्थ वह न समझ सकी, वह बोली—"जाने तुम क्या सोच रहे हो ?"

सैय्यद पलंग पर बैठ गया। जेब से सिग्रेट निकाल उसने फरिया की ओर देखा, जिसके उत्सर्गमय प्यार की सीमा से वह अभी-अभी निकला था। इस विचार से कि अपनी और फरिया की कुशल भावनाओं को उसने बड़े ही गन्दे ढंग से अधूरा छोड़ दिया था सैय्यद को मानो ठेस लगी, यानी उसने फरिया से कहा—"तुम मेरी उलझी बातें न समझ सकोगी, इसलिए कि तुम्हारे जीवन के तार सीधे हैं; किन्तु यहाँ मेरे दिमाग में उलझन के सिवाय और कुछ है ही नहीं। मैंने एक बार पहले कहा था कि मैं तुम्हारे लायक नहीं, एक बार फिर कहती हूँ, फरिया ! मैं तुम्हारे लायक नहीं।"

फरिया ने चिढ़ कर पूछा—"क्यों ?"

"बताता हूँ; किन्तु तुम पहले मुझ से यह पूछो, सैय्यद ! क्या तुम अपनी औरत बनाकर मुझे घर ले जा सकते हो ?"

फरिया ने बड़ी लापरवाही से कहा—"लेकिन मैंने कब कहा है कि मुझसे शादी कर लो ?"

सैय्यद ने सिग्रेट जलाया और सोचकर कहा—"तुमने मुझ से कहा नहीं, मगर मैंने हृदय में कई बार इस सवाल को झगड़ते हुए देखा

ग्रौर मुझे चोट खानी पड़ी कि सैय्यद तुम में इतनी क्षमता नहीं। जब मेरे सवालों का यह जवाब मिला तो फिर तुम ही बताग्रो कि मैं तुम्हरे लायक हूँ ?"

फरिया भावुकता के ग्रावेश में चीख उठी ग्रौर बोली—"क्या हम शादी के बिना एक दूसरे से प्यार नहीं कर सकते ?"

यह सुनकर सैय्यद के दिल में सिकुड़ी हुई भावना थोड़ी-सी फैल गई लेकिन वह फरिया के पास से उठ खड़ा हुग्रा—"नहीं।"

"क्यों ?" फरिया ने पूछा।

"इसलिए कि मैं यहाँ चोरों के समान रहता हूँ, ग्राज की ही घटना ले लो। सिनेमा के बाहर एक सम्बन्धी को देखकर, जिसका नाम मैं खुद नहीं जानता, मेरे होश उड़ गए थे ग्रौर मैंने तुम्हें ग्रपनी निगाहों से दूर कर दिया था, मानो हम दोनों एक दूसरे को बिल्कुल ही नहीं जानते। ऐसे निकम्मे ग्रादमी के साथ जीवन निर्वाह कैसे हो सकता है, जो ग्रभी-ग्रभी ग्रौरत के उत्सर्ग जैसे प्यार को ठुकराकर एक ग्रोर हट गया हो ?"

फरिया मुस्कराती हुई पलंग से उठी ग्रौर फिर एक बार ग्रपनी बाहें सैय्यद के गले में डाल दीं—"तुम बड़े ही ग्रच्छे हो, सैय्यद ! केवल मैं ही प्यार करना नहीं जानती।"

फरिया की सादगी ने सैय्यद की तड़पती ग्रात्मा को एक ग्रौर झटका दिया। उसने धीरे से फरिया के बिखरे हुए बालों को ठीक करते हुए कहा—"नही ! यह मेरा कसूर है ग्रौर मैं इसकी सजा बड़ी देर से भुगत रहा हूँ, तुमसे दूर हुग्रा तो यह सजा ग्रौर भी सख्त हो जायेगी।"

फरिया चिल्ला उठी—"तुम मुझे छोड़ कर जा रहे हो ?"

सैय्यद ने जवाब से सिर्फ यही कहा—"मुझे ग्रपने ग्राप से यही

आशा है।"

फरिया बच्चों के समान बिलख-बिलख कर रोने लगी। सैय्यद कुछ क्षण चुप रहा; लेकिन इस थोड़े से समय में उसकी सिमटी हुई भावनायें उसके शरीर में फैल गई थीं। उसने लाल-लाल आँखों से फरिया की ओर देखा और आगे बढ़कर अपने जलते हुए अधर उसके अधरों से लगा दिये।

खाली बोतल—भरा दिल

एक अनोखी घटना घटी है। मंटो मर गया है, यों तो वह एक अरसे से मर रहा था। कभी सुना कि वह पागल-खाने में है, कभी सुना, कि वह ज्यादा शराब पीने से हस्पताल में पड़ा है, कभी सुना, कि उसके यार दोस्तों ने भी उसका साथ छोड़ दिया है, कभी सुना, कि वह और उसके बीवी फाकाकशी कर रहे हैं। बहुत सी बातें सुनीं, हमेशा बुरी बातें सुनीं; लेकिन विश्वास नहीं आया; क्योंकि उस समय भी उसकी कहानियाँ बराबर छपती रहीं; अच्छी कहानियाँ भी और बुरी कहानियाँ भी; जिन्हें

पढ़कर मन्टो का मुंह नोंचने को जी चाहता था, ऐसी कहानियां भी जिन्हें पढ़कर उसका मुंह चूमने को जी चाहता था। यह कहानियां मन्टो के खैरियत से होने का सबूत थीं। मैं समझता था उसकी कहानियां छप रही हैं। मन्टो खुश है। क्या हुआ अगर वह शराब पी रहा है? क्या शराब पीना केवल बड़े लेखकों तक ही सीमित है? क्या हुआ अगर वह फाके कर रहा है? इस छोटे महाद्वीप की तीन चौथाई आबादी ने हमेशा ही फाके किये हैं। क्या हुआ अगर वह पागलखाने चला गया? इस पागल और मजनूं समाज में मन्टो जैसे होशवन्द का पागल-खाने जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं, आश्चर्य तो इस बात का है कि वह आज से बहुत पहले पागलखाने क्यों नहीं गया? मुझे इन सब बातों से न तो कोई हैरत हुई, न कोई आश्चर्य ही हुआ। मन्टो कहानियां लिख रहा है—मन्टो कुशल से है—ईश्वर उसकी कलम में और जहर भर दे।

मगर आज जब रेडियो पाकिस्तान ने यह खबर सुनाई कि मन्टो धड़कन बन्द हो जाने से चल बसा तो दिल और दिमाग चलते-चलते एक क्षण के लिए रुक गये। दूसरे क्षण वह विश्वास ही न रहा। दिल और दिमाग ने इसे नहीं माना कि ऐसा हो सकता है—एक क्षण के लिए मन्टो का चेहरा मेरी निगाहों में घूम गया। उसका देदीप्यमान चौड़ा ललाट और बात-बात में उसकी तीखी मुस्कराहट और शोले की तरह भड़कता हुआ उसका दिल—कभी बुझ सकता है? दूसरे क्षणों में विश्वास करना पड़ा। रेडियो और पत्रकारों ने मिलकर इस बात की पुष्टि कर दी कि मन्टो मर गया। आज के बाद वह नई कहानियां नहीं लिखेगा। आज के बाद उसकी कुशलता का कोई खत नहीं आयेगा!

आज सर्दी बहुत है और आसमान पर हल्के-हल्के बादल छाये हुए हैं मगर इस वातावरण में वर्षा की बूंद भी नहीं है। मेरी आंख में आंसू

का एक कतरा भी नहीं है। मन्टो को रुलाने से अत्यन्त घृणा थी। आज मैं उसकी याद में आँसू बहाकर उसे परेशान नहीं करूँगा। आहिस्ता से मैं अपना कोट पहन लेता हूँ और घर से बाहर निकल जाता हूँ।

अद्‌भुत संयोग है, जिस दिन मन्टो से मेरी पहली मुलाकात हुई, उस दिन में दिल्ली में था। जिस दिन वह मरा है, उस दिन भी दिल्ली में उपस्थित हूँ। उसी घर में हूँ जिस में आज से चौदह साल पहले वह मेरे साथ पन्द्रह दिन रहा था। घर के बाहर वही बिजली का खंभा है, जिसके नीचे पहली बार हम गले मिले थे। यह वही अन्डर हिल रोड है, जहाँ आल इण्डिया रेडियो का पुराना दफ्तर था, जहाँ हम दोनों काम किया करते थे। यह मोरी मेडेन होटल का बार है। यह मोरी गेट के प्रधान का घर है। यह जामा मस्जिद की सीढ़ियाँ हैं; जिस पर हम कबाब खाया करते थे। यह उर्दू बाजार है। सब कुछ वही है, उसी तरह से है। सब जगह उसी तरह से काम हो रहा है। आल इण्डिया रेडियो भी खुला है, मेडेन होटल का बार भी और उर्दू बाजार भी; क्योंकि मन्टो एक बहुत मामूली आदमी था। वह एक गरीब कहानीकार था। वह कोई मन्त्री नहीं था, जो उसकी शान में झंडे झुका दिये जाते। वह कोई सट्टेबाज और ब्लेक मार्केटिय भी नहीं था, जो कोई बाजार उसके लिए बन्द होते! वह कोई अभिनेता भी न था, जिसके लिए स्कूल और कालेज बन्द हो जाते। वह एक गरीब सताई हुई भाषा का, गरीब और सताया हुआ लेखक था। वह मोचियों, वैश्याओं और ताँगे वालों का प्यारा लेखक था। ऐसे लेखक के लिए कौन रोयेगा? कौन अपना काम बन्द करेगा? इसीलिये आल इण्डिया रेडियो खुला है, जिसने सैकड़ों बार उसकी कहानियों के ध्वनि नाट्य ब्राडकास्ट किये हैं। उर्दू बाजार भी खुला है, जिसने उसकी हजारों किताबें बेची हैं और आज भी बेच

रहे हैं। आज मैं उन लोगों को भी कहकहा लगाकर हँसते देख रहा हूँ, जिन्होंने मन्टो से हजारों रुपये की शराब पी है। मन्टो मर गया तो क्या हुआ ? व्यापार-व्यापार है ! एक क्षण के लिए भी काम नहीं रुकना चाहिए, जिसने हमें सारी जिन्दगी दे दी, उसे हम अपना एक क्षण भी नहीं दे सकते। सिर झुका के एक क्षण के लिए उसकी याद को हम अपने दिलों में ताजा नहीं कर सकते। धन्यवाद के साथ, खुशामद के साथ हमदर्दी के साथ उसकी तड़पती हुई आत्मा के लिए जिसने हतक, नया कानून, खोल दो, टोबाटेक सिंह ऐसी दर्जनों बेमिसाल और अमर कहानियाँ लिखी हैं। जिसने समाज की निचली तहों में घुसकर पिसे हुए, कुचले हुए समाज को ठोकरों से बिगड़े हुए चरित्रों को उठाकर इज्जत दी है। जो वास्तविकता और कलात्मकता के लिए गोर्की के 'लोअर डेपथज' के चरित्रों की याद दिलाते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि उन लोगों ने गोर्की के लिए अजायबघर बनाये, मूर्तियाँ बनाई, शहर बनाये और हमने मन्टो पर मुकदमें चलाये, उसे भूखा मारा, उसे पागल खाने में पहुँचाया, उसे हस्पतालों में सड़ाया और आखिर में उसे यहाँ तक मजबूर कर दिया कि वह किसी इन्सान को नहीं, शराब की बोतल को अपना दोस्त समझने को मजबूर हो जाए।

यह कोई नई बात नहीं है। हमने गालिब के साथ यही किया था। प्रेमचन्द के साथ यही किया था, हसरत के साथ यही किया था। मन्टो के साथ भी यही व्यवहार करेंगे, क्योंकि मन्टो कोई इनसे बड़ा विद्वान् तो नहीं था, जिसके लिए हम अपनी पाँच हजार वर्ष की संस्कृति को तोड़ दें। हम इन्सानों के नहीं मकबरों के पुजारी हैं। दिल्ली में मिर्जा गालिब की फिलम चल रही है। इस फिलम की कहानी इसी दिल्ली के मोरी गेट में बैठकर मन्टो ने लिखी थी। एक दिन हम मन्टो की तस्वीर भी बनायेंगे और इससे लाखों रुपये कमायेंगे, जिस तरह आज

हम मन्टो की किताबों के कई-कई नकली एडीशन हिन्दुस्तान में छाप-छाप कर हजारों रुपये कमा रहे हैं। वह रुपये जिस की मन्टो को अपनी जिन्दगी में अत्यन्त आवश्यकता थी। वह रुपये आज भी, जो उसकी बीवी और बच्चों को मुसीबत, जिल्लत से बचा सकते हैं। मगर हम ऐसी गलती नहीं करेंगे। अगर हम अकाल के दिनों में चावल की दर बढ़ाकर इन्सानों के खून से अपना मुनाफा बढ़ा सकते हैं, तो क्या इस मुनाफे के लिए गरीब लेखक की जेब नहीं कतर सकते। मन्टो ने जब 'जेबकतरा' लिखा था, उस वक्त उसे मालूम नहीं था, कि एक दिन जेबकतरों की पूरी की पूरी जमात से उसका वास्ता पड़ेगा।

मन्टो एक बहुत बड़ी गाली थी। इसका कोई दोस्त ऐसा नहीं जिसे इसने कोइ गाली न दी हो ! कोई उसका ऐसा प्रकाशक भी नहीं जिससे इसने लड़ाई मोल न ली हो। कोई मालिक ऐसा नहीं जिसकी इसने बेइज्जती न की हो ! प्रकाशित तौर पर वह तरक्की पसन्दों से खुश नहीं था, न गैर तरक्की पसन्दों से, न पाकिस्तान से, न हिन्दुस्तान से, न अंकल शाम से, न रूस से—जाने इसकी तड़पती हुई बेचैन आत्मा क्या चाहती थी ? इसकी जबान बेहद कड़वी थी—कहने का तरिका नुकीली और पैने तीर की तरह तेज और बेरहम, लेकिन आप इसकी गाली को, इसकी कड़वी बोल-चाल को, इसके तेज नुकीले काँटेदार शब्दों को जरा-सा खुरच कर तो देखिये। अन्दर से जिन्दगी का मीठा-मीठा रस टपकने लगेगा। इसकी घृणा में प्यार था। नंगेपन पर आवरण वह इस तरह डाल देता था, कि असमतफरोशी करने वाली वैश्याओं के आँचल भी लज्जा की लाली से चमक उठते थे—जो उसके साहित्य की पवित्रता के द्योतक हैं। मन्टो से जिन्दगी ने इन्साफ़ नहीं किया ;

लेकिन इतिहास अवश्य उससे न्याय करेगा।

मन्टो बयालीस की उम्र में मर गया। अभी इसके कुछ कहने और सुनने के दिन थे। अभी जिन्दगी के कड़वे अनुभवों ने वर्तमान समाज की निर्दयता ने, मुसीबत-भरी जिन्दगी के क्षणों में, इसके हताश व्यक्तित्व के क्रोध और नातरफदारी को कम करके उससे 'टोबाटेक सिंह' ऐसी कहानी लिखवाई थी। दुःख मन्टो की मौत का नहीं है—मौत आने वाली है, मेरे लिए भी और तुम्हारे लिये भी—पर देःख तो इस बात का है कि वह साहित्य को और जो हीरे पन्ने जवाहरात देता, वह अब उसे नहीं मिलेंगे, जो सिर्फ मन्टो ही दे सकता था। उर्दू साहित्य में अच्छे-अच्छे कहानीकार पैदा हुए; लेकिन मन्टो दुबारा पैदा नहीं होगा और कोई उसकी जगह लेने नहीं आयेगा। यह बात मैं भी जानता हूँ और राजेन्द्रसिंह बेदी भी, अस्मत चुगताई भी, ख्वाजा अहमद अब्बास भी और उपेन्द्रनाथ अश्क भी। हम सब लोग उसके चाहने वाले, उससे झगड़ा करने वाले, उसे प्यार करने वाले, उससे घृणा करने वाले, उससे मुहब्बत करने वाले साथी और हमसफर थे और आज जब वह हम में नहीं है, हम में से हर एक ने उसकी मौत के जनाजे को अपने कन्धे पर महसूस किया है। आज हम में से हर एक की जिन्दगी का एक हिस्सा मर गया है। ऐसे समय में जो फिर कभी वापस न आ सकेगा। आज हम में से हर व्यक्ति मन्टो के करीब हैं और है एक दूसरे के निकटतम। ऐसे समय में अगर हम यह निर्णय करलें कि हम मन्टो की जिम्मेदारियों को मिलकर पूरा करेंगे, तो उसकी आत्महत्या बेकार न होगी।

आज से चौदह साल पहले मैंने और मन्टो ने मिलकर एक कहानी लिखी थी "बनजारा"। मन्टो ने आज तक किसी दूसरे लेखक के साथ मिलकर कोई कहानी नहीं लिखी, न उससे पहले न उसके बाद; वे दिन तेज सर्दियों के थे। मेरा सूट बेकार हो लिपटा पड़ा था और मन्टो

का सूट भी लिपटा हुआ था। मन्टो मेरे पास आया और बोला, "ऐ कृशन ! नया सूट चाहता है ?

मैंने कहा—'हाँ'

'तो चल मेरे साथ'—

'कहाँ ?'

'बस ज्यादा बकवास न कर, चल मेरे साथ'—

हम लोग एक फिल्म वितरक के यहाँ गये। मैं वहाँ अगर कुछ कहता तो सत्य ही बकवास होती, इसलिए मैं खामोश ही रहा। फिल्म वितरक फिल्म प्रोडक्शन के मैदान में आना चाहता था। मन्टो ने पन्द्रह-बीस मिनट की बातचीत में उसे कहानी बेच दी और उससे पांच सौ रुपये नकदी ले लिए। बाहर आकर उसने ढाइ सौ मुझे दिये और ढाई सौ स्वयं रख लिये—फिर हम लोगों ने अपने-अपने सूट के लिए बढ़िया कपड़ा खरीदा और अब्दुलगनी टेलर मास्टर की दूकान पर गये और उसे सूट जल्दी सी कर देने के लिए हिदायत दी। फिर सूट तैयार हो गये। पहन भी लिये गये। मगर सूट का कपड़ा दर्जी को देने और और सिलाने के बीच, जो समय आया उसमें हम बाकी रुपये घोल कर पी गये। इसलिए अब्दुलगनी का उधार रहा फिर भी उसने हमें सूट पहनने के लिए दे दिये। मगर कई माह तक हम लोग उसका रुपया न चुका सके।

एक दिन मन्टो और मैं कश्मीरीगेट से गुजर रहे थे कि मास्टर अब्दुलगनी ने हमें पकड़ लिया। मैंने सोचा आज साफ-साफ बेइज्जती होगी। मास्टर अब्दुलगनी ने मन्टो को गिरहबान से पकड़ कर कहा—'वह 'हत्तक' तुमने लिखी है ?

मन्टो ने कहा—'लिखी है तो क्या हुआ ? अगर तुमसे सूट उधार लिया है तो उसका यह मतलब नहीं है, कि तुम मेरी कहानी के अच्छे

समालोचक भी हो सकते हो। यह गिरहबान छोड़ो'। अब्दुलगनी के चेहरे पर एक अजीब-सी मुस्कराहट आई। उसने मन्टो का गिरहबान छोड़ दिया और उसकी तरफ अजीब-सी नजरों से देखकर कहने लगा 'जा तेरे उधार के पैसे माफ किये।'

वह पलटकर चला गया। कुछ क्षणों के लिये मन्टो बहुत खामोश खड़ा रहा। वह उस तारीफ से बिल्कुल खुश नहीं हुआ। बहुत दुखी और गुस्से से भरा नजर आने लगा। 'साला क्या समझता है—मुझे परेशान करता है—मैं उसकी पाई-पाई चुका दूंगा। साला समझता है 'हत्तक' मेरी अच्छी कहानी है। हत्तक—हतक तो मेरी सबसे अच्छी कहानी है।'

लेकिन न मैंने, न मन्टो ने अब्दुलगनी को पैसे दिये। न उसने हमसे लिये। आज मुझे जब यह घटना याद आई, मैं उसी वक्त अब्दुल-गनी की दूकान खोजता कश्मीरी गेट पहुँचा। मगर अब्दुलगनी कई वर्ष हुए वहाँ से पाकिस्तान चला गया था। काश आज अब्दुलगनी टेलर-मास्टर मिल जाता। उससे मन्टो के बारे में दो बातें कर लेता और किसी को तो इस बड़े शहर में इस व्यर्थ काम के लिए फुरसत ही नहीं है।

शाम के वक्त मैं जो ऐ० अन्सारी संपादक 'शाहराह' के साथ जामा मस्जिद से तीस हजारी अपने घर को आ रहा था। रास्ते में हम दोनों आहिस्ते-आहिस्ते मन्टो के व्यक्तित्व और उसकी कला पर बहस करते रहे। सड़क पर गड्ढे बहुत थे इसलिए बहस में बहुत से नाजुक मुकाम भी आये। एक बार पंजाबी कोचवान ने चौंककर पूछा—'क्या कहा जी, मन्टो मर गया?'

अन्सारी ने आहिस्ते से कहा—'हाँ भाई! और फिर अपनी बहस

शुरू कर दी ।'

कोचवान धीमे-धीमे अपना ताँगा चलाता रहा लेकिन मोरीगेट के पास उसने ताँगे को रोक लिया और हमारी तरफ घूमकर बोला— 'साहब आप लोग कोई दूसरा ताँगा कर लिजिए मैं आगे नहीं जाऊँगा ।' उसकी आवाज में एक अजीब-सा दर्द था । पहले इसके कि हम कुछ कहें—वह हमारी तरफ देखे बिना ही अपने ताँगे से उतरा और सीधा सामने की बॉर में चला गया ।

—कृष्ण चन्द्र